जय-तिथि-पत्रक

श्री वीर-निर्वाण संवत्
२५४१-२५४२
विक्रम संवत् २०७२

तेरापंथ संवत्
२५५-२५६
ईस्वी सन् २०१५-२०१६

सम्पादक : 'मंत्री मुनि' मुनि सुमेरमल

जैन विश्व भारती
लाडनूं - 341306 (राजस्थान)
दूरभाष : 01581-226025, 224671, 226080, फैक्स : 01581-227280
E-mail : jainvishvabharati@yahoo.com, Visit us at : www.jvbharati.org

अहिंसा यात्रा

₹15

विकास के इच्छुक व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि
वह अपने जीवन के अमूल्य समय एवं श्रम को
स्वाध्याय में व्यतीत करें।

- आचार्य महाश्रमण

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

भीकमचंद जीतमल चोरड़िया

बीदासर

J. M. JAIN

Cloth Merchant & Commission Agents

2285/9, Gali Hinga Beg, Tailak Bazar, Delhi - 110 006
Ph. : 23911055, 23961961, 32909508, 22081961, 22084393, 32911629
E-mail : jmjain_delhi@yahoo.com

एक अच्छा संकल्प भी अनेक समस्याओं से बचाने वाला हो सकता है।
अपेक्षा है कि उसका निष्ठा के साथ पालन हो।
वह तुम्हारा अभिन्न मित्र व सच्चा मित्र होगा।

– आचार्य महाश्रमण

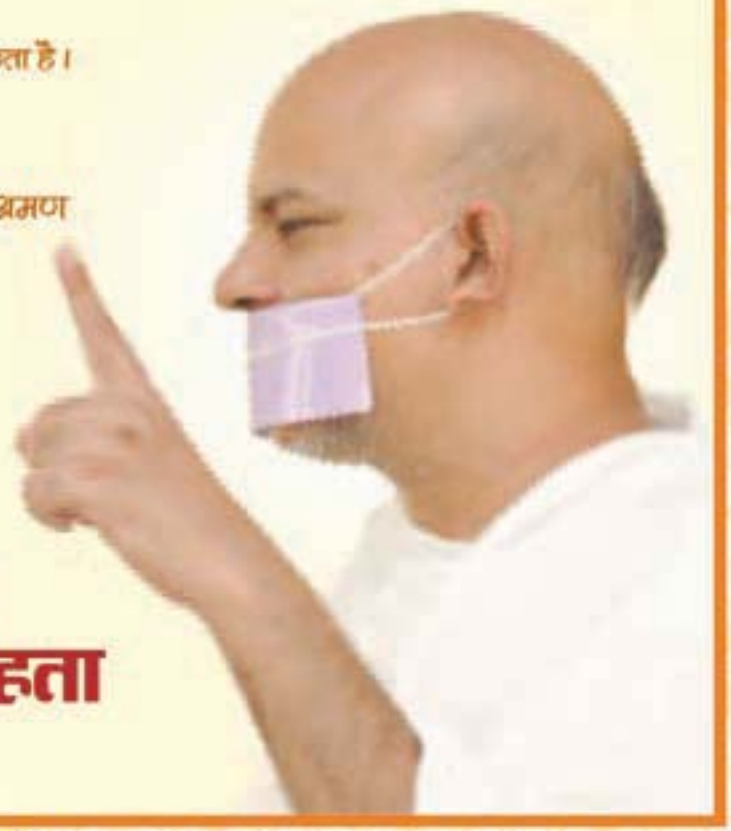

IMAGE Insurance

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

जेठमल मेहता, रोहित मेहता

दिल्ली

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

तपस्या का स्वरूप केवल अनाहार ही नहीं है।
उसके भीतर कितने रहस्य हैं,
उन्हें समझने का प्रयास करो।
वे समझ में आ जाएंगे तो तुम्हारी तपस्या के प्रति
आस्था भी बढ़ जाएगी।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

अमरचंद धरमचंद लुंकड़

राणावास - चेन्नई

आशीर्वचन

नव वर्ष पर आचार्यश्री महाश्रमण की जैन विश्व भारती पर अमृत वर्षा

"आज यहां जैन विश्व भारती के कार्यकर्ता उपस्थित हुए हैं। उनकी मीटिंग भी रखी हुई है। जैन विश्व भारती एक **'कामधेनु'** है, जिसे गुरुदेव तुलसी ने **'कामधेनु'** कहा था। कितनी–कितनी गतिविधियां उसके द्वारा चल रही है और जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट (मान्य विश्वविद्यालय) भी उससे जुड़ा हुआ है। मैं तो यों सोचा करता हूं कि मां–बेटे का संबंध है। जैन विश्व भारती मां है तो जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट उसका सुपुत्र है। मां का काम है पुत्र का ध्यान रखना और पुत्र का काम है मां का ध्यान रखना। पहले मां–बाप बच्चों का ध्यान रखते हैं, पालते–पोसते हैं, पढ़ाते हैं, लिखाते हैं, बाद में बच्चों का फर्ज है मां–बाप का ध्यान रखना। इस प्रकार जैन विश्व भारती एवं जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट का मां–बेटे का संबंध है।

जैन विद्या की सेवा जैन विश्व भारती के द्वारा हो रही है। साहित्य के क्षेत्र में बहुत बड़ा काम हो रहा है, आगमों का काम हो रहा है, सेवा का काम हो रहा है। हमारी समणियां जैन विश्व भारती में ही आवास ले रही है, हमारे कितने वृद्ध संत जैन विश्व भारती सेवाकेन्द्र में विराजित हैं। मुमुक्षु बहिनें, उपासिकाएं भी जैन विश्व भारती के परिसर में आवासित हैं। कितने–कितने आयाम, कितनी–कितनी गतिविधियां जैन विश्व भारती में है। अध्यक्ष धरमचंदजी लुंकड़, बच्छराजजी नाहटा आदि जैसे कार्यकर्ता संस्था से जुड़े हुए हैं, वे जैन विश्व भारती को और अधिक आध्यात्मिक दृष्टि से आगे बढ़ाने का, शैक्षिक दृष्टि से आगे बढ़ाने का प्रयास करें, खूब अच्छा चिंतन–मनन करें और अच्छा चिंतन, अच्छा निर्णय और अच्छी क्रियान्विति हो। केवल चिन्तन हो जाये और निर्णय न हो तो पूरा काम नहीं होता। निर्णय भी हो जाये और क्रियान्विति नहीं हो तो भी पूरा काम नहीं होता। चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति तीनों में ज्यादा फासला नहीं होना चाहिए। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने फरमाया था कि चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति में अनअपेक्षित ज्यादा फासला नहीं होना चाहिए। चिंतन किया, फिर निर्णय करो, निर्णय किया फिर यथासमय क्रियान्विति करें।

जैन विश्व भारती एक गौरवशाली संस्था है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का मार्गदर्शन उस संस्था को मिला है और तेरापंथ समाज के पास इतनी बड़ी

संस्था का आना एक प्रकार से समाज का मानो भाग्य है, तब इतनी बड़ी संस्था समाज के हाथ में आती है। यह संस्था अब तो युवावस्था में है। इस संस्था के द्वारा मानव जाति का कल्याण हो, इस संस्था के द्वारा जैन विद्या का खूब प्रचार–प्रसार हो। इस संस्था के द्वारा साहित्य के माध्यम से लोगों में ज्ञान वृद्धि हो और लौकिक सेवा का काम भी चल रहा है, जो समाज के लिए महत्वपूर्ण होता है। जैन विश्व भारती से तीन विद्यालय सीधे साक्षात जुड़े हुए हैं, उसके अन्तर्गत हैं तो स्कूलों के माध्यम से भी विद्यार्थियों को अच्छा नैतिक ज्ञान मिलें, जीवन विज्ञान, जैन विद्या आदि का ज्ञान मिले। इस प्रकार जैन विश्व भारती, जिसे कामधेनू कहा जाये और जयकुंजर (विशालकाय हाथी) कहा जाये, कुछ भी कह दें, अपने आप में बहुत बड़ी संस्था है। लाडनूं जैसे सामान्य कस्बे में बड़ी संस्था है। लाडनूं सामान्य भले हो लेकिन गुरुदेव तुलसी की जन्मभूमि होने का गौरव उस शहर, उस नगर को प्राप्त है। गुरुदेवश्री तुलसी की जन्मभूमि के साथ जन्मभूमि पर जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती संस्थान है। ये संस्थान खूब अच्छा विकास करें। कितने–कितने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के माध्यम से ज्ञान–दान प्राप्त हो रहा है और उसकी कुलपति भी हमारी शिष्या समणी चारित्रप्रज्ञाजी है। समणीजी भी खूब अच्छा काम करती रहे, इंस्टीट्यूट को आगे बढ़ाने का प्रयास करती रहे। आध्यात्मिक, शैक्षिक दृष्टि से विश्वविद्यालय भी विकास करे। जैन विश्व भारती की छत्रछाया उसको मिलती रहे, साया उसको मिलता रहे और दोनों संस्थाएं खूब अच्छा विकास करे।"

अहिंसा यात्रा
सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी
की अहिंसा यात्रा मंगलमय हो

श्रद्धाप्रणत
जैन विश्व भारती परिवार

अहिंसा यात्रा
सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति

प्रकाशकीय

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा विगत 37 वर्षों से मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर जय-तिथि-पत्रक का प्रकाशन प्रतिवर्ष निरंतर किया जा रहा है। इसी क्रम में 151वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर संवत् 2072 का जय-तिथि-पत्रक सुधी पाठकों के हाथों में प्रस्तुत करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता है। जय-तिथि-पत्रक में ज्योतिषीय सूचनाओं, विशेष पर्वों, महत्त्वपूर्ण दिवसों व अनुष्ठानों के साथ-साथ संस्थाओं एवं विभिन्न संघीय गतिविधियों, कार्यक्रमों आदि से संबंधित उपयोगी सामग्री प्रकाशित की गई है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर के निर्देशानुसार तेरापंथ दर्शन मनीषी 'मंत्रीमुनि' मुनिश्री सुमेरमलजी (लाडनूं) ने जय-तिथि-पत्रक संपादन के गुरुतर दायित्व का सम्यक् निर्वहन करते हुए दैनंदिन आवश्यकता की ज्योतिषीय सूचना-सामग्री प्रस्तुत करने की कृपा की है, हम मंत्री मुनिश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं। मुनिश्री उदितकुमारजी के महनीय मार्गदर्शन हेतु हार्दिक कृतज्ञता। श्री जीतमल नाहटा, कोलकाता का सामग्री संकलन कार्य में सहयोग प्राप्त हुआ, तदर्थ हार्दिक आभार।

जय-तिथि-पत्रक के प्रकाशन के लिए हमें अनेक महानुभावों का आर्थिक सौजन्य प्राप्त हुआ है। उनका उदार सहयोग-भाव संस्था की प्रवृत्तियों को गतिशील रखने में योगभूत बनता है। सभी अनुदानदाताओं के प्रति हम हार्दिक आभार ज्ञापित करते हैं। प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में सहयोगी सभी महानुभावों के सहयोग हेतु आभार।

विश्वास है कि जय-तिथि-पत्रक की सामग्री सभी उपयोगकर्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी तथा इसमें प्रस्तुत सामग्री से उपयोगकर्ता त्याग-प्रत्याख्यान के लिए प्रेरित होंगे।

निलेश बैद
निदेशक, समण संस्कृति संकाय

02 जनवरी, 2015

धरमचंद लुंकड़
अध्यक्ष, जैन विश्व भारती

अध्यक्ष की कलम से

तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृपा दृष्टि व आशीर्वाद से मुझे तेरापंथ की प्रतिष्ठित संस्था और समाज की कामधेनु जैन विश्व भारती के अध्यक्ष पद पर पदासीन होकर धर्मसंघ की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। जैन विश्व भारती समाज की एक गौरवपूर्ण संस्था है। धर्मसंघ के तीन–तीन महान आचार्यों का पावन पथदर्शन एवं सुदीर्घ सान्निध्य इस संस्था को प्राप्त हुआ है। समाज के अनेकानेक कार्यकर्ताओं ने अपनी श्रम बूंदों से जैन विश्व भारती को पूज्यवरों के स्वप्नों के अनुरूप समाज की कामधेनू के रूप में प्रतिष्ठित करने का सार्थक प्रयास किया है। मैं उन सभी नींव के पत्थर कार्यकर्ताओं एवं पूर्व सभी पदाधिकारियों को याद करता हुआ उनके प्रति अत्यन्त आदर के भाव प्रकट करता हूं।

जैन विश्व भारती की वर्तमान टीम के कार्यकाल के 100 दिन पूरे हो गये हैं। इन 100 दिनों में आचार्यप्रवर की कृपादृष्टि, आशीर्वाद व महनीय मार्गदर्शन एवं चारित्रात्माओं व समणीवृंद के पावन दिशाबोध, टीम की एकजुटता एवं संपूर्ण समाज के सहयोग से विकास के कुछ कदम आगे बढ़ाए हैं। मैं सर्वप्रथम पूज्यप्रवर के श्रीचरणों में अपनी तथा पूरी टीम की ओर से अनन्त–अनन्त श्रद्धा समर्पित करता हुआ हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। चारित्रात्माओं व समणीवृंद के दिशाबोध हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। पूरी टीम के समन्वय भाव एवं उल्लेखनीय सहयोग हेतु हार्दिक आभार ज्ञापित करता हूं। संपूर्ण समाज के सहयोग हेतु आभार ज्ञापित करता हूं।

पद एक व्यवस्था होती है। मैं व्यवस्थागत दृष्टि से जैन विश्व भारती का अध्यक्ष बना हूं लेकिन कार्य की दृष्टि से कार्यकर्ता की तरह हम सब समान हैं। संस्था का विकास सबके समन्वित सहयोग, सद्भावना एवं सामूहिक प्रयास से ही संभव हो सकता है। मैं संपूर्ण समाज को जैन विश्व भारती की सभी गतिविधियों के विकास में यथाशक्ति तन–मन–धन व चिंतन से सहयोग एवं सहभागिता का सादर निवेदन करता हूं। संस्था के विकास हेतु सभी के सकारात्मक विचारों व सुझावो का स्वागत है।

आईये! हम सब मिलकर जैन विश्व भारती के कल्पनाकार गणाधिपति पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी की इन पंक्तियों के साथ एवं परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन दिशा–निर्देशन में जैन विश्व भारती के विकास में योगभूत बनने का संकल्प करें–

प्रभो! तुम्हारे पावन पथ पर जीवन अर्पण है सारा।

बढ़े चलें हम रूकें न क्षण भी, हो यह दृढ़ संकल्प हमारा।।

02 जनवरी 2015

धरमचंद लुंकड

अध्यक्ष

मर्यादा महोत्सव स्थल : कानपुर

गंगा तट पर सन् 1217 के आस-पास चन्देलवंशीय राजा कान्हादेव ने 'कान्हापुर' नामक बस्ती की स्थापना की। ब्रिटिश काल में बढ़ते औद्योगिकीकरण ने प्राचीन कान्हापुर को आधुनिक भारत में कानपुर के नाम से प्रतिष्ठित स्थान दिलाया। कानपुर नगर की सीमाओं को उत्तर में गंगा नदी, दक्षिण में बाईपास रोड, पूर्व में चकेरी व पश्चिम में कल्याणपुर से रेखांकित किया जा सकता है जिसमें बिल्हौर व घाटमपुर की तहसीलों को भी शामिल किया है। उत्तर प्रदेश की औद्योगिक नगरी कानपुर की पहचान विश्व में मेनचेस्टर ऑफ इस्ट के नाम से थी। कानपुर की विश्व प्रसिद्ध लाल इमली, एल्गिन मिल, स्वदेशी कॉटन मिल, लक्ष्मी रतन कॉटन मिल, कानपुर टेक्सटाइल मिल, औद्योगिक क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखती थी।

ऐतिहासिक व पौराणिक दृष्टि से बिठूर, जाजमऊ, मूसा नगर व कन्नौज आदि महत्त्वपूर्ण स्थल रहे। सन् 1786 में कानपुर का प्रथम कारखाना डिस्टलरी था। 3 मार्च 1859 को कानपुर-इलाहाबाद रेल लाईन शुरू हुई थी। 1860 में प्रथम सूती कपड़ा मिल–एल्गिन मिल की स्थापना की गई। सन् 1890 में कानपुर में टेलीफोन व्यवस्था प्रारम्भ हुई। कानपुर का आधुनिकीकरण अपने निखार पर था जब 1906 में पहली बार शहर में बिजली की रोशनी हुई। कानपुर के नाना साहब, तात्या टोपे, गणेश शंकर विद्यार्थी ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

शैक्षिक क्षेत्र में भी कानपुर अग्रणी है। दयानन्द शिक्षा संस्थान, चन्द्रशेखर आजाद कृषि कॉलेज, आई. आई. टी. और छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय विश्वविख्यात हैं। कानपुर अनेक रंग मंच, रामलीला मंचन, ललित कलाओं व विद्याओं का केन्द्र भी है। जोधपुर के भंडारी परिवार द्वारा निर्मित जैन काँच मन्दिर पूरे भारत में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। जे. के. समूह द्वारा निर्मित जे. के. मन्दिर, कमला रिट्रीट, विश्व प्रसिद्ध क्रिकेट मैदान ग्रीन पार्क की भी अपनी एक गौरवमयी पहचान है।

तेरापंथ और कानपुर

कानपुर धार्मिक दृष्टि से भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थल रहा है। 1957 में सरदारशहर मर्यादा महोत्सव में उत्तर प्रदेश के खाद्य व

न्यायमंत्री श्री लक्ष्मीशंकरजी ने कानपुर के जैन समाज के साथ आचार्यश्री तुलसी के दर्शन किये। आचार्यश्री को उत्तर प्रदेश में पधारने की जोरदार विनती की। आचार्यश्री ने जयपुर में उत्तर प्रदेश की ओर विहार करने की घोषणा की। जे. के. समूह के सर पदमपतजी सिंहानिया ने कन्नौज में जैन समाज के साथ आचार्यश्री के दर्शन किये और आचार्यश्री को कानपुर चातुर्मास करने का निवेदन किया। आचार्यश्री ने कहा–'सिंहानियाजी! कानपुर में समाज के पास ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है जहां चातुर्मास हो सके।' इस पर सर पदमपतजी ने खड़े होकर निवेदन किया–'मेरी बिरहाना रोड पर नवनिर्मित अस्पताल की बिल्डिंग तैयार है, वहां पर आप चातुर्मास करावें।' इस पर आचार्यश्री ने कानपुर चातुर्मास करने का निर्णय लिया।

आचार्य तुलसी का कानपुर चतुर्मास

कानपुर से विहार करके 3 मई को उन्नाव होते हुए आचार्यश्री लखनऊ पहुंचे। लखनऊ में मुख्यमंत्री सम्पूर्णानन्दजी ने आपका स्वागत किया और आपके आग्रह पर आचार्यश्री मुख्यमंत्रीजी के आवास पर पधारे। लखनऊ से विहार कर पुनः 26 जून 1958 को विशाल जुलूस के साथ कानपुर में चातुर्मास हेतु बिरहाना रोड स्थित जे. के. द्वारा नवनिर्मित कमलापति मेमोरियल हॉस्पिटल में प्रवेश किया। वहां पर स्वागत समरोह की अध्यक्षता सर पदमपतजी सिंहानिया ने स्वयं की। कार्यक्रम में कानपुर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री मंगतरामजी जयपुरिया, पूर्णचन्द्र गुप्ता, रामरतन गुप्ता, गिल्लूमलजी बजाज, दानमल रामपुरिया एवं प्रसिद्ध साहित्यकार परिपूर्णनन्द वर्मा, इन्कम टैक्स एडवोकेट सलाहकार श्री इन्द्रजीत जैन की सहभागिता रही।

चातुर्मास में धर्मचन्द्रजी, भंवरलालजी सेठिया परिवार का विशेष योगदान रहा, चातुर्मास की व्यवस्था का पूरा भार सेठिया परिवार ने उठाया था, उस समय कानपुर में लगभग 15 परिवार तेरापंथी थे जिनमें मांगीलालजी बैंगानी, मगनलालजी बैंगानी, शुभकरणजी जैन, बच्छराजजी मनोत, अमोलकचन्द्रजी दूगड़, कानमलजी सेठिया, कस्तूरचंदजी बरमेचा प्रमुख थे। इसके अलावा हरियाणा के अग्रवाल परिवार के मोतीबाबू अग्रवाल, लक्ष्मणदासजी अग्रवाल व मुन्ना बाबू अग्रवाल, सूरजभान अग्रवाल ने सपरिवार गुरुधारणा स्वीकार की। इन परिवारों की चातुर्मास के सभी कार्यक्रमों में अच्छी सहभागिता थी। इस चातुर्मास में श्री दिनेशकुमारजी तथा श्री महेशकुमारजी की मुनि दीक्षाएं भी हुई। इस चातुर्मास में अणुव्रत की गूंज औद्योगिक नगरी के

उद्योगपतियों से लेकर मजदूरों के बीच तक गुंजायमान रही। मुख्यमंत्री सम्पूर्णानन्दजी, चन्द्रभान गुप्ता एवं मंत्री मण्डल के अनेक मंत्री और विधान सभा के अध्यक्ष ने भाग लिया। सबसे उल्लेखनीय घटना उत्तर प्रदेश विधान सभा में अणुव्रत के समर्थन में विधेयक पेश हुआ और विधान सभा से अणुव्रत आन्दोलन को व्यापक समर्थन भी मिला।

आचार्यों की कृपादृष्टि सदैव इस क्षेत्र पर रही है, 1959 में साध्वी कमलूजी, 1964 में मुनिश्री धनराजजी, 1970 में साध्वी मोहनकुमारीजी, 1994 में साध्वी धनकुमारीजी और 1975 में साध्वी राजीमतीजी का चातुर्मास हुआ। सन् 1977 में मुनिश्री कन्हैयालालजी, 1987 में और 1993 में साध्वी रतनकुमारीजी तथा 1991 में और 1995 में साध्वी सूरजकुमारीजी का चातुर्मास हुआ। सन् 2000 में साध्वी सोमलताजी, सन् 2005 में साध्वी पीयूषप्रभाजी तथा 2012 में साध्वी प्रमिलाकुमारीजी का चातुर्मास हुआ था। समय-समय पर कानपुर समणी केन्द्र भी बनता रहा है।

कानपुर के श्रावकों की गुरु के प्रति श्रद्धानिष्ठा व संघनिष्ठा अटूट रही है। समय-समय पर आचार्यों द्वारा श्रावकों को संबोधन प्राप्त होता रहा है–इनमें श्री कानमलजी सेठिया–श्रद्धानिष्ठ श्रावक, श्री अमोलकचंद्रजी दूगड़–शासनसेवी, श्री शुभकरणजी दूगड़–श्रद्धानिष्ठ श्रावक, श्री चंदनमलजी सुराना–कल्याण मित्र, श्री कस्तूरचंद्रजी बरमेचा–श्रद्धानिष्ठ श्रावक।

इसके अलावा श्री भंवरलालजी बैंगानी, श्री धनराजजी बैंगानी, मांगीलालजी बोथरा, चंपालालजी भूतोड़िया, तुलसीरामजी सेठिया, जतनसिंहजी मुड़िया की सेवाएं भी उल्लेखनीय रही है।

वर्तमान में कानपुर में 95 तेरापंथी परिवार तथा लगभग 2000 जैन परिवार है। आचार्यवर ने महती कृपा कर 151वें मर्यादा महोत्सव के आयोजन का अवसर प्रदान किया है। सम्पूर्ण तेरापंथ समाज ही नहीं अपितु कानपुर का जनमानस उत्सुकता व उल्लास के साथ आचार्यप्रवर का ससंघ पधारने का इंतजार कर रहा है।

गणेशमल जम्मड़
संयोजक
09839030212

धनराज सुराणा
मंत्री
09839035938

टीकमचन्द सेठिया
आयोजन समन्वयक
09336814379

आचार्य महाश्रमण मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति, कानपुर

चातुर्मासिक क्षेत्र विराटनगर : इतिहास के झरोखे से

राजा विराट के नाम पर बना विराटनगर

नेपाल देश का विराटनगर शहर अति प्राचीन एवं ऐतिहासिक नगर है। इस नगर में पौराणिक काल में विराट राजा का दरबार था। विराट राजा के नाम से इसका नाम विराटनगर रखा गया ऐसा यहां के जनमानस में विश्वास है। विराटनगर नेपाल के पांच विकास क्षेत्र में से पूर्वाञ्चल विकास क्षेत्र के कोशी अंचल, मोरंग जिला में अवस्थित है। मोरंग जिला का दक्षिण पश्चिम क्षेत्र भारत की जोगबनी सीमा से जुड़ा हुआ है। यह शहर नेपाल का दूसरा बड़ा शहर तथा पूर्वाञ्चल का औद्योगिक, व्यापारिक तथा प्रशासनिक केन्द्र के रूप में प्रसिद्ध है। पूर्व में सिंगियाही नदी, पश्चिम में केशलिया नदी, उत्तर में टंकीसिनुवारी गाउं विकास समिति और दक्षिण में भारत की सीमा से जुड़ा हुआ यह शहर लगभग 60 वर्ग किलोमीटर समतल भू-भाग में फैला हुआ है। विराटनगर की लगभग तीन लाख आबादी है। यहां जैन समाज के लगभग 300 परिवार है जिनमें से 250 परिवार तेरापंथी है। इस शहर में अनेक पुस्तकालय, धर्मशाला, अतिथि भवन, निजी तथा सरकारी चिकित्सालय एवं नर्सिंग होम, आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक चिकित्सालय आदि है। यहां जन्मे व्यक्तियों ने चाहे देश के किसी भी कोने में कार्य करते हों उन्होंने जन्मभूमि को याद रखा। विविध सार्वजनिक संस्थाओं का गठन करके तथा अपने पूर्वजों के नाम पर ट्रस्ट बनाकर शिक्षा, चिकित्सा, अतिथि भवन तथा अनेकों सेवामुखी कार्यों में अपना योगदान देकर जुड़े रहे हैं। विराटनगर के विकास में यहां के तेरापंथी परिवारों का विशेष योगदान रहा है। यहां साम्प्रदायिक सौहार्द अनुकरणीय है। व्यापारिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक दृष्टि से विराटनगर का अपना एक उच्च स्थान रहा है।

नेपाल का विकास

नेपाल का पहला औद्योगिक शहर होने का गौरव विराटनगर को प्राप्त है। लगभग 500 से ज्यादा उद्योग यहां संचालन में है। विराटनगर जूट मिल की स्थापना में श्री रामलाल गोल्छा का विशेष योगदान रहा। उन्होंने अनेक उद्योगों की नींव रखी। विराटनगर के पुराने तेरापंथी परिवारों में सेठिया परिवार, गोल्छा परिवार, दूगड़ परिवार, नौलखा परिवार, धाड़ेवा परिवार, लूणिया परिवार, सुराणा परिवार, भंसाली परिवार, लालवानी परिवार, गोतानी परिवार, कोठारी परिवार, कोचर परिवार, डागा परिवार आदि अन्य अनेक परिवारों का विराटनगर के औद्योगिक, व्यापारिक और कृषि क्षेत्र में विकास तथा धार्मिक कार्य में योगदान रहा है। विराटनगर एक परिवहन तथा वाणिज्य केन्द्र भी है। यहां से भारत तथा अन्य अनेक देशों के साथ व्यापारिक सामान निर्यात होता है।

विराटनगर और तेरापंथ

नेपाल तथा विराटनगर में सभी धर्मों के साधु-संतों के समय-समय पर होने वाले समागमन से विराटनगर अपनी आध्यात्मिकता के कारण विख्यात है। नेपाल में तेरापंथ की राजधानी कहलाने वाला विराटनगर शहर कई विशेषताओं के लिए जाना जाता है। सर्वप्रथम नेपाल में वि.सं. 2009 में विराटनगर में तेरापंथी सभा का गठन हुआ। वि.सं. 2021 में मुनिश्री धनराजजी (लाडनूं) का नेपाल आगमन और सर्वप्रथम विराटनगर में चातुर्मास प्रभावकता के साथ सम्पन्न हुआ। वि.सं. 2034 में विराटनगर सभा ने जमीन खरीद कर अपना तेरापंथ भवन बनाया। भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्व. मातृकाप्रसाद कोइराला के सभापतित्व में विराटनगर में अणुव्रत प्रचार प्रसार समिति का गठन हुआ था, उस समिति के सचिव स्व. हुलासचन्द गोल्छा थे। अणुव्रत समिति द्वारा समय-समय पर आयोजित कार्यक्रम विशेष प्रभावी रहते थे। सभी जाति, वर्ग, सम्प्रदायों के व्यक्ति मिलकर भाग लेते थे। वि.सं. 2022 के बाद अनेक विद्वान् मुनिश्री, साध्वीश्री तथा समणीवृंद के विराटनगर में प्रवास एवं चातुर्मास हुए हैं। संघीय गतिविधियों में भी नियमित सहभागिता रही है। विराटनगर की तेरापंथी सभा ने वि.सं. 2060 में अपनी स्थापना के 50 वर्ष पूरा करने पर स्वर्ण जयन्ती वर्ष का आयोजन किया। तेरापंथी महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया तथा उनकी कार्यसमिति के अनेक पदाधिकारियों ने कार्यक्रम में सहभागिता की थी। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद् सक्रियता के साथ संघीय कार्य करते रहे हैं। ज्ञानशाला नियमित चल रही है।

तेरापंथ धर्मसंघ में विराटनगर की श्रमण परम्परा के रूप में प्रतिनिधित्व की शुरूआत गोतानी परिवार से समणी शारदाप्रज्ञाजी की दीक्षा से हुई थी। उसके बाद पुगलिया परिवार से समणी विशदप्रज्ञाजी एवं समणी श्रेयसप्रज्ञाजी ने दीक्षा ली। उसके बाद साध्वीश्री त्रिशलाकुमारीजी ने श्रीमती इन्दरादेवी कुण्डलिया को 29 फरवरी 2011 को संथारा करवाया तथा 5 मार्च 2011 को जैन भागवती दीक्षा प्रदान की तथा उनको साध्वी अमृतश्रीजी नाम प्रदान किया गया। उन्हें 40 दिन का संथारा आया था। समणी विशदप्रज्ञाजी को साध्वी दीक्षा प्रदान की गई और उनको विशदचेतनाश्री नाम प्रदान किया गया।

विराटनगर का तेरापंथ समाज पूर्ण रूप से संगठित एवं मर्यादित है। समाज के अनेक वरिष्ठ श्रावकों ने तन-मन-धन से सेवा कर समाज विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया, अपनी कर्मणा शक्ति से विराटनगर में तेरापंथ की नींव को मजबूती प्रदान करने का प्रयास किया। समूचा समाज ऐसे कर्मशील एवं श्रद्धाशील श्रावकों के प्रति गौरव की अनुभूति करता है। यह क्षेत्रीय एवं सुविधाओं की दृष्टि से छोटा हो सकता है परन्तु श्रद्धा एवं समर्पण की भावना की दृष्टि से बहुत विशाल है। यहां के अनेक श्रावकों ने अपनी सेवा भावना से एक विशिष्ट पहचान बनाई है। अनेकानेक प्रबुद्ध श्रावकों ने तेरापंथ समाज की केन्द्रीय संस्थाओं के

सर्वोच्च पदों पर रहते हुए अपने दायित्व का निर्वहन कर अपनी सेवाएं दी है और दे रहे हैं। यहां के अनेक श्रावक-श्राविकाओं को पूज्यवर ने अपने श्रीमुख से विशिष्ट संबोधनों से संबोधित किया है। स्व. रामलाल गोल्छा को शासनभक्त, श्री हुलासचन्द गोल्छा को जैनरत्न तथा शासनसेवी, श्री तोलाराम दूगड़ को शासनसेवी, श्री अनूपचन्द नौलखा को अणुव्रतसेवी (मरणोपरान्त) तथा श्रीमती मघादेवी गोल्छा को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' से संबोधित किया।

कैसे पहुंचे विराटनगर

विराटनगर से काठमांडो तथा नेपाल के अन्य शहर हवाई तथा सड़क मार्ग से जुड़े हुए हैं। पूर्वी नेपाल के पहाड़ी दुर्गम स्थान से भी हवाई सम्पर्क है। भारत सीमा के जोगबनी रेलवे स्टेशन से दिल्ली, पटना और कोलकाता से रेल का सीधा सम्पर्क है। यहां से जोगबनी रेलवे स्टेशन आचार्यश्री के प्रवास स्थल से 7 किलोमीटर दूर है। कटिहार तथा न्यू जलपाईगुड़ी से भारत के सभी मुख्य शहरों से सीधा रेल सम्पर्क है। काठमांडो विमान स्थल से दिल्ली, कोलकाता, मुंबई से सीधी विमान सेवा उपलब्ध है। बागडोगरा से भारत के सभी मुख्य शहरों से विमान सुविधा उपलब्ध है। वहां से विराटनगर की दूरी 130 कि.मी. है।

हमारा सौभाग्य

संपूर्ण नेपाल देश तथा विशेषतः विराटनगर की धरा का यह परम सौभाग्य है कि तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें आचार्य बनने के बाद आचार्यश्री महाश्रमणजी का तेरापंथ की आचार्य परम्परा में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय चातुर्मास यहां हो रहा है। परम पूज्य आचार्यप्रवर ससंघ आगामी 22 जुलाई 2015 को विराटनगर पधार रहे हैं। पूज्यप्रवर के पावन सान्निध्य में शृंखलाबद्ध आयोजन होंगे। 9 नवम्बर 2014 को लालकिला दिल्ली से अहिंसा यात्रा का शुभारम्भ हो चुका है। इस अहिंसा यात्रा से सभी क्षेत्रों में एक नई ऊर्जा का संचार होगा। विराटनगर का अतीत एवं वर्तमान गौरवशाली रहा है। परम पूज्य आचार्यवर की कृपापूर्ण शुभ दृष्टि से क्षेत्र का भविष्य उज्ज्वल से उज्ज्वलतर बनता रहेगा। इसी आशा व विश्वास के साथ विराटनगर का श्रावक समाज पूज्यप्रवर के चरणों में श्रद्धानत है।

नेपाल तथा भारत तथा अन्य देशों में प्रवासित धर्मसंघ के समस्त श्रावक-श्राविकाओं को हमारा सादर आमंत्रण है कि आप सपरिवार अधिक से अधिक संख्या में विराटनगर पधारें और आचार्यप्रवर के सेवा-दर्शन का लाभ उठाएं। सभी का स्नेह और सहयोग प्राप्त होगा, ऐसा विश्वास है।

निवेदक

दिनेश गोल्छा

009779852020321

अध्यक्ष, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, विराटनगर

विजय पारख
महासचिव

मालचन्द सुराणा
अध्यक्ष, 009779852030335

आचार्यश्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति, विराटनगर (नेपाल)

अध्यात्म ऊर्जा का केन्द्र : जैन विश्व भारती

विश्व इतिहास में मानव संस्कृति को सार्थक दिशा देने वाले महापुरुषों में क्रांतिकारी द्रष्टा, विश्वसंत गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के स्वप्नों की साकार प्रतिमान जैन विश्व भारती की स्थापना शिक्षा, शोध साधना एवं सेवा के विशेष उद्देश्यों के साथ सन् 1970 में राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं नगर में हुई। जैन विश्व भारती अहिंसा और शांति का अनुपम सांस्कृतिक केन्द्र है। शिक्षा, शोध, साहित्य, साधना, सेवा, संस्कृति और समन्वय इन सात महान प्रवृत्तियों को अपने आप में समेटे हुए यह संस्था तपोवन का रूप ले चुकी है और यहां के प्रकंपन यह इंगित दे रहे हैं कि यह प्राचीन काल से कोई तपोभूमि रही है। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आध्यात्मिक संरक्षण व निर्देशन में संस्था निरन्तर गतिशील है।

शिक्षा

जैन विश्व भारती की स्थापना जिन उद्देश्यों को लेकर हुई थी उनमें से एक मुख्य प्रवृत्ति है–शिक्षा। इस उद्देश्य की पूर्ति यहां प्राथमिक से विश्वविद्यालय स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं। जैन विश्व भारती के तत्त्वावधान में वर्तमान में विमल विद्या विहार सीनियर सेकेण्डरी स्कूल तथा महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर एवं टमकोर संचालित हैं। मातृ संस्था जैन विश्व भारती के संरक्षण में जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय से अब तक लगभग 45,000 विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की है जिनमें सैकड़ों विद्यार्थियों ने उच्च पदों पर पहुंच कर संस्था का गौरव बढ़ाया है।

भावी पीढ़ी में संस्कारों के संरक्षण तथा आध्यात्मिक व नैतिक शिक्षा के विकास की दृष्टि से **'समण संस्कृति संकाय'** के अंतर्गत जैन विद्या की शिक्षा प्रदान की जाती है।

मनुष्य के बौद्धिक विकास के साथ मानसिक, भावनात्मक और चारित्रिक विकास हेतु आचार्यश्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने **'जीवन विज्ञान'** की परिकल्पना प्रस्तुत की। ध्यान, योग एवं शिक्षण प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षा का यह क्रांतिकारी प्रयोग जैन विश्व भारती के अंतर्गत **'केन्द्रीय जीवन विज्ञान अकादमी'** द्वारा साकार हो रहा है।

सेवा

शिक्षा के साथ-साथ सेवा के क्षेत्र में भी जैन विश्व भारती अग्रणी है। जैन विश्व भारती परिसर में **'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला'** तथा बीदासर में **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी महाप्रज्ञ मानव कल्याण केन्द्र'** सुचारु रूप से संचालित हैं।

'सेवाभावी आयुर्वेदिक रसायनशाला' द्वारा चिकित्सा सेवा विषयक जन-कल्याणकारी प्रवृत्ति का संचालन किया जाता है। यहां जिन औषधियों का निर्माण होता है वे आयुर्वेद विभाग से प्राप्त ड्रग मैन्युफैक्चरिंग लाइसेन्स के अंतर्गत जी.एम.पी. प्रमाणित हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर एवं फिजियोथेरेपी पद्धति से रोगियों की चिकित्सा हेतु **'श्रीमद् आचार्यश्री तुलसी मानव कल्याण केन्द्र'** की स्थापना जैन विश्व भारती की एक इकाई के रूप में बीदासर में की गई। यहां आधुनिक उपकरणों द्वारा व्यायाम की सुविधा उपलब्ध है। वर्तमान में केन्द्र के अंतर्गत होमियोपैथिक चिकित्सा से रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दिया जा रहा है।

साधना

प्रेक्षाध्यान–आचार्यश्री महाप्रज्ञजी द्वारा निर्देशित प्रेक्षाध्यान पद्धति के निरंतर प्रयोग, प्रशिक्षण एवं शोध का केन्द्र है जैन विश्व भारती स्थित–**'तुलसी अध्यात्म नीडम्'**, जहां योग एवं अध्यात्म साधना के अभ्यास एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यक्ति के भाव परिष्कार व संवेग परिवर्तन के प्रयोग होते हैं। सन् 1978 में स्थापित तुलसी अध्यात्म नीडम् का उद्देश्य है–प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण, विकास एवं अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करना।

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका **'प्रेक्षाध्यान'** का विगत 31 वर्षों से जैन विश्व भारती के अंतर्गत तुलसी अध्यात्म नीडम् द्वारा प्रकाशन किया जा रहा है।

साहित्य

साहित्य प्रकाशन एवं वितरण–साहित्य प्रकाशन एवं वितरण जैन विश्व भारती की महत्त्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान आदि से संबंधित साहित्य के साथ आचार्य भिक्षु, श्रीमद् जयाचार्य, आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य महाश्रमण एवं साधु-साध्वियों, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/सम्पादित साहित्य का प्रकाशन विगत लगभग 39 वर्षों से किया जा रहा है। जैन विश्व भारती गत 2-3 वर्षों से अंतर्राष्ट्रीय स्तर के अन्य प्रकाशकों के साथ मिलकर भी साहित्य प्रकाशन व वितरण का कार्य कर रही है।

शोध

जैन विश्व भारती की स्थापना के उद्देश्यों में **शोध** का विशेष स्थान है। पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने इसकी स्थापना के उद्देश्यों में जैन धर्म एवं दर्शन के उच्च-स्तरीय शोध संस्थान की परिकल्पना सामने रखी थी। उसी परिकल्पना की सुखद परिणति स्वरूप जैन विश्व भारती की शोध प्रवृत्ति के अंतर्गत आगम सम्पादन का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। यह कार्य पूर्व में आचार्यश्री तुलसी व आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एवं वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी के निर्देशन में चल रहा है। आगम सम्पादन के प्रबन्धन का सारा दायित्व जैन विश्व भारती द्वारा निर्वहन किया जा रहा है।

हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग–जैन विश्व भारती में अनेक प्राचीन एवं दुर्लभ जैन हस्तलिखित ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनकी सुरक्षा एवं संरक्षण जैन विश्व भारती के हस्तलिखित एवं पाण्डुलिपि विभाग के अंतर्गत किया जा रहा है।

समन्वय

पुरस्कार एवं सम्मान–जैन विश्व भारती द्वारा कुल 10 पुरस्कारों का संचालन विभिन्न प्रायोजकों के सहयोग से किया जा रहा है। आचार्य महाप्रज्ञ साहित्य पुरस्कार, आचार्य तुलसी अनेकान्त सम्मान, आचार्य तुलसी प्राकृत पुरस्कार, संघ सेवा पुरस्कार, जय तुलसी विद्या पुरस्कार, आचार्य महाप्रज्ञ अहिंसा प्रशिक्षण सम्मान, महादेवलाल सरावगी जैन आगम मनीषी पुरस्कार, जीवन विज्ञान पुरस्कार, गंगादेवी सरावगी जैन विद्या पुरस्कार आदि पुरस्कारों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में सेवाएं देने एवं उल्लेखनीय कार्य करने वालों को प्रोत्साहित किया जाता है और उनकी प्रतिभा का सम्यक् मूल्यांकन किया जाता है।

संस्कृति

तुलसी कलादीर्घा–जैन विश्व भारती में स्थित तुलसी कलादीर्घा (आर्ट गैलरी) में जैन धर्म को दर्शाने वाली प्राचीन एवं अर्वाचीन चित्रों एवं हस्तकलाओं की प्रचुर सामग्री का संग्रह किया गया है। दुर्लभ, कलापूर्ण, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व की प्रदर्शन योग्य सामग्री के साथ तेरापंथ के आचार्यों को सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मानों से संबंधित प्रतीक चिह्न, प्रशस्ति पत्र एवं अन्य सामग्री को यहां पर शो विंडो में कलापूर्ण ढंग से सुसज्जित किया गया है।

उक्त सभी गतिविधियों के साथ सुरम्य हरीतिका से सुशोभित परिसर जैन विश्व भारती के बाह्य सौन्दर्य की मुखर कहानी कह रहा है। जैन विश्व भारती परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है। आप यहां पधारें एवं यहां संचालित गतिविधियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें। संस्था के विकास हेतु आपके अमूल्य सुझावों एवं विचारों का स्वागत है। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें–

जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन : (01581) 226025/80, फैक्स : 227280
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com
वेबसाईट : www. jvbharati.org

नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान

दुनिया में शक्ति का महत्त्व होता है। शक्तिहीन व्यक्ति अपने आप में रिक्तता अनुभव करता है। कभी-कभी शक्तिविहीन मनुष्य अपने आपको दयनीय और असहाय भी अनुभव करता है। सबसे बड़ी शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है। अन्य शक्तियों का भी अपना-अपना महत्त्व होता है।

गुरुदेवश्री तुलसी और आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने नवाह्निक आध्यात्मिक अनुष्ठान का एक नया उपक्रम प्रारंभ किया। आचार्यश्री महाश्रमण के निर्देशन में वह उसी रूप में विधिवत् चल रहा है। उसका उद्देश्य है—आत्मशुद्धि और ऊर्जा का विकास। उसकी कालावधि आश्विन शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की निर्धारित की गई है। चैत्र शुक्ला प्रथमा से प्रारंभ कर निरंतर नौ दिनों की कालावधि में भी इसकी आराधना की जा सकती है। संपूर्ण विधि एवं समय सारिणी इस प्रकार निश्चित की गई है—

प्रातः ९.३० से १०.००

'चंदेसु निम्मलयरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' — का पांच बार पाठ
चंदेसु निम्मलयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु — का तेरह बार पाठ
आइच्चेसु अहियं पयासयरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु—का तेरह बार पाठ
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु — का तेरह बार पाठ
आरोग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु — का तेरह बार पाठ
सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु — का इक्कीस बार पाठ
'चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।' — का पांच बार पाठ

ॐ ह्रीं क्लीं ब्लूं

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो ॥१॥
जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियई रसं।
न य पुप्फं किलामेइ, सो य पीणेइ अप्पयं ॥२॥
एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाणभत्तेसणे रया ॥३॥
वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोई उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंति, पुप्फेसु भमरा जहा ॥४॥
महुकारसमा बुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो ॥५॥— का सात बार पाठ

प्रातः १०.०० से १०.३०—आध्यात्मिक प्रवचन

मध्याह्न २.३० से ३.१५ आगम पाठ का स्वाध्याय।

(दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि आदि के मूल पाठ का स्पष्ट व शुद्ध उच्चारण एवं व्याख्या)

पश्चिम रात्रि–४.४५ से ५.३०

उवसग्गहरं पासं (उपसर्गहर स्तोत्र) आदि पांच श्लोक एवं 'ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण' का नौ बार पाठ। फिर 'विघनहरण' का जप।

उपसर्गहर स्तोत्र

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं।
विसहर-विसनिन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ।।१ ।।
विसहर-फुलिंग-मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह-रोग-मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं ।।२ ।।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्ख-दोहग्गं ।।३ ।।
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि-कप्पपायपब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ।।४ ।।
इह संथुओ महायस! भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण।
ता देव! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।५ ।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमिऊण पास
विसहर वसह जिण फुल्लिंग ह्रीं श्रीं नमः ।।

विघनहरण

विघनहरण मंगलकरण, स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै, सरै अचिंत्या काम ।।

जप और आगम-स्वाध्याय के साथ तप का योग भी आवश्यक माना गया है। तप में एकासन, आयंबिल, षड्विगय वर्जन, पंच विगय वर्जन और दस प्रत्याख्यान में से किसी एक तप की आराधना इस अवधि में की जाए। व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार नौ दिनों तक एक ही तप अथवा वैकल्पिक तप की आराधना की जा सकती है।

निर्धारित कालावधि और करणीय क्रम को यथावत् रखते हुए स्थानीय सुविधानुसार समय में परिवर्तन भी किया जा सकता है। साधु-साध्वियों की भांति श्रावक-श्राविकाएं भी इसमें संभागी बन सकते हैं। संभागी श्रावक-श्राविकाओं के लिए निम्नांकित नियम भी अनुष्ठान काल में पालनीय हैं–

ब्रह्मचर्य का पालन, रात्रि भोजन-विरमण (चौविहार/तिविहार), जमीकंद का वर्जन।

अनुष्ठान का प्रारंभ प्रथम दिन प्रातः ९.३० से यानी प्रातःकालीन सत्र में किया जाए एवं अनुष्ठान का समापन रात्रि के ५.३० बजे यानी रात्रिकालीन सत्र में किया जाए।

जैन विश्व भारती : शिक्षा संपोषण योजना

शिक्षा' जीवन निर्माण की पहली आवश्यकता है। बिना शिक्षा प्राप्त किये कोई व्यक्ति अपनी परम ऊंचाईयों को नहीं छू सकता। जैन विश्व भारती के कल्पनाकार आचार्यश्री तुलसी ने जैन विश्व भारती की स्थापना के समय शिक्षा को महत्व देते हुए एक प्रमुख उद्देश्य के रूप में लक्षित किया एवं बौद्धिक शिक्षा के साथ–साथ मानवीय मूल्यों से युक्त शिक्षा के माध्यम से संस्कार निर्माण कर सर्वांगीण व्यक्तित्व के निर्माण का चिंतन सामने रखा। जैन विश्व भारती एक सक्षम ज्ञान का केन्द्र बने, जहां शिक्षा के साथ संस्कारों का संगम हो, इसी भावना के आधार पर यहां प्राथमिक शिक्षा स्तर से उच्चतर शिक्षा स्तर तक समस्त शैक्षणिक गतिविधियां संचालित की जा रही है। जैन विश्व भारती के संरक्षण में संचालित जैन विश्व भारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) सहित विमल विद्या विहार उच्च माध्यमिक विद्यालय, महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, टमकोर व महाप्रज्ञ इंटरनेशनल स्कूल, जयपुर शिक्षण संस्थानों के रूप में संचालित किये जा रहे हैं, जिनमें स्कूली शिक्षा के साथ नैतिक मूल्यों की शिक्षा भी समान रूप से प्रदान की जाती है।

जैन विश्व भारती अपनी विभिन्न शिक्षण संबंधी इकाईयों के माध्यम से 'शिक्षा' के विकास के द्वारा हमारे पूज्यवरों के स्वप्नों के अनुरूप आधुनिक शिक्षा प्रणाली में नैतिक मूल्यों का समावेश करते हुए स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण की दिशा में सतत अग्रसर है विश्वविद्यालय एवं उक्त विद्यालयों में अनेक जरूरतमंद एवं मेधावी विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षण की व्यवस्था है। उच्च शिक्षण स्तर को बनाये रखते हुए आधुनिक संसाधनों एवं सुविधाओं का समावेश निरन्तर किया जा रहा है।

जैन विश्व भारती की शिक्षा इकाईयों के समुचित विकास की दृष्टि से **'शिक्षा संपोषण योजना'** प्रारम्भ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत अनुदानदाता के लिए दो श्रेणियां निर्धारित की गई है–

01. शिक्षा संपोषक : कोई भी व्यक्ति **रू. 1 लाख** की अनुदान राशि प्रदान कर शिक्षा संपोषक के रूप में इस योजना में सहयोगी एवं सहभागी बन सकता है।

02. शिक्षा सहयोगी : कोई भी व्यक्ति **रू. 11 हजार** की अनुदान राशि प्रदान कर शिक्षा सहयोगी के रूप में इस योजना में सहयोगी एवं सहभागी बन सकता है।

उक्त योजना के अन्तर्गत प्राप्त राशि का उपयोग शिक्षा संबंधी इकाईयों के विकास व विस्तार तथा जरूरतमंदों को निःशुल्क शिक्षण के रूप में किया जायेगा। जैन विश्व भारती को देय अनुदान पर आयकर अधिनियम 1960 की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट उपलब्ध है।

पूज्यवरों के स्वप्नों के अनुरूप शिक्षा के विकास एवं जैन विश्व भारती के इस मिशन को साकार करने में आपका सहयोग एवं सहभागिता सादर अपेक्षित है।

धरमचंद लुंकड़	मनोज लूणिया	प्यारेलाल पितलिया	अमरचंद लुंकड़	अरविन्द गांठी
अध्यक्ष	राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा विभाग	मुख्य न्यासी	राष्ट्रीय सह–संयोजक, शिक्षा विभाग	मंत्री
(9840166699)	(9863022275)	(9841036262)	(9840044428)	(9810114949)

जैन विश्व भारती : साहित्य संपोषण योजना

जैन विश्व भारती वह विविधमुखी गतिविधियों में साहित्य प्रकाशन एवं वितरण एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। आगम, जैन विद्या, जीवन विज्ञान से संबंधित साहित्य के साथ धर्मसंघ के आचार्यों, चारित्रात्माओं, समण-समणीवृंद तथा शोधार्थियों द्वारा लिखित/संपादित साहित्य का प्रकाश संस्था द्वारा विगत लगभग चार दशकों से किया जा रहा है। यह साहित्य प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अधिक से अधिक पाठकों को सुलभ मूल्य पर उपलब्ध करवाने हेतु जैन विश्व भारती को समाज के अनेक उदारमना महानुभावों का साहित्य प्रकाशन में निरंतर आर्थिक सहयोग प्राप्त होता रहता है। जैन विश्व भारती सभी उदारमना महानुभावों के सहयोग हेतु हार्दिक आभार ज्ञापित करती है। वर्तमान में जैन विश्व भारती के साहित्य प्रकाशन हेतु निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत अनुदान प्रदान किया जा सकता है–

संपोषण योजना

1. कोई भी व्यक्ति साहित्य प्रकाशन हेतु रु. 5 लाख का अनुदान देकर 'साहित्य संपोषक' बन सकता है।
2. प्राप्त अनुदान राशि जैन विश्व भारती के अंतर्गत साहित्य प्रकाशन हेतु गठित विशेष कोष में जमा होगी।
3. साहित्य संपोषक को पूज्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित विशेष कार्यक्रम में राशि प्राप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के साहित्य संपोषक के रूप में जैन विश्व भारती द्वारा मोमेन्टो प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।
4. जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'कामधेनु' एवं 'विज्ञप्ति' में साहित्य संपोषक का नामोल्लेख किया जाएगा।
5. जिस वित्तीय वर्ष में साहित्य संपोषक की अनुदान प्राप्त होगी उस वित्तीय वर्ष से आगामी पांच वर्षों तक उसे प्रतिवर्ष जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित संपूर्ण नवीन साहित्य की एक प्रति निःशुल्क प्रेषित की जाएगी।

साहित्य सहयोगी

1. कोई भी व्यक्ति साहित्य प्रकाशन हेतु रु. 1 लाख का अनुदान देकर 'साहित्य सहयोगी' बन सकता है।
2. प्राप्त अनुदान राशि जैन विश्व भारती के अंतर्गत साहित्य प्रकाश हेतु गठित विशेष कोष में जमा होगी।
3. साहित्य सहयोगी को पूज्यप्रवर के सान्निध्य में आयोजित विशेष कार्यक्रम में राशि प्राप्त होने वाले वित्तीय वर्ष के साहित्य सहयोगी के रूप में जैन विश्व भारती द्वारा मोमेन्टो प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।
4. जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'कामधेनु' में साहित्य सहयोगी का नामोल्लेख किया जाएगा।
5. जिस वित्तीय वर्ष में साहित्य सहयोगी की अनुदान राशि प्राप्त होगी उसे उस वर्ष जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित संपूर्ण नवीन साहित्य की एक प्रति निःशुल्क प्रेषित की जाएगी।

जैन विश्व भारती को देय अनुदान पर भारत सरकार के आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80जी के अंतर्गत छूट उपलब्ध है। योजना में सम्पूर्ण समाज के सहयोग एवं सहभागिता हेतु सादर निवेदन।

धरमचंद लुंकड़	मदनचंद दूगड़ 'जौहरी'	प्यारेलाल पितलिया	मांगीलाल छाजेड़	अरविन्द गोठी
अध्यक्ष	राष्ट्रीय संयोजक, साहित्य विभाग	मुख्य न्यासी	राष्ट्रीय सह–संयोजक, साहित्य विभाग	मंत्री
(9840166699)	(9821222136)	(9841036262)	(9322519155)	(9810114949)

जय भिक्षु

अर्हम्

जय तुलसी

॥ जय जय ज्योति चरण - जय जय महाश्रमण ॥

जिसका वर्तमान स्वस्थ है, ठीक है, सुंदर है,
उसका भविष्य कभी बुरा नहीं हो सकता।

- आचार्य तुलसी

अहिंसा यात्रा
सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

श्रीमती कमला बाई - स्व. श्री मानमल जी आच्छा
सुरेश-सुशील-महेन्द्र आच्छा, सिरियारी - चिक्कमंगलुर

Kishore Textiles

Textiles - Silks - Coffee - Pepper

M.G. Road, Chikkamagaluru - 577101
Ph. : 08262-230208 Mob. : 94482 02108, 98440 44940, 98442 44940
Email : texkishore@rediffmail.com. sushil_accha@rediffmail.com

घड़ी की सुई अपने नियम से चलती है।
इसलिए लोग उस पर विश्वास करते हैं।
नियम का सम्मान करो, विश्वास अपने आप बढ़ेगा

- आचार्य महाप्रज्ञ

हर वक्त चिन्तनरत मत रहो।
चिन्तन के समय चिन्तन करो, दत्तचित्त होकर करो,
इससे अन्य कार्य भी बाधित नहीं होंगे,
चिन्तन भी अच्छा होगा।

- आचार्य महाश्रमण

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

प्यारेलाल, विनोद, संजय, सुनील, विनीत, वंश, अंश, वीर पितलिया

माण्डा (राजस्थान) - चेन्नई

अहिंसा यात्रा

सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति

अहिंसा यात्रा : संकल्प

- मैं सद्भावपूर्ण व्यवहार करने का प्रयत्न करूंगा।
- मैं यथासंभव ईमानदारी का पालन करूंगा।
- मैं नशामुक्त जीवन जीऊंगा।

3 देश

12 राज्य

10000 से अधिक

किलोमीटर की पदयात्रा

भारत

नेपाल

भूटान

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी की अहिंसा यात्रा मंगलमय हो

वर्ष 2015 के लिए निर्धारित कार्य योजना

1. अणुव्रत आचार संहिता का प्रचार-प्रसार। 2. ज्यादा से ज्यादा लोगों को अणुव्रती बनाना। 3. अहिंसा यात्रा में सहभागिता निभाना। 4. अहिंसा यात्रा के उद्देश्य : सद्भावना, नैतिकता एवं नशामुक्ति का जन-जन में प्रचार-प्रसार। 5. विद्यालयों में अणुव्रत नियमावली का आलेखन। 6. नशामुक्ति चेतना अभियान। 7. पर्यावरण शुद्धि अभियान। 8. चातुर्मास में वर्गीय अणुव्रत पर संगोष्ठियां : (क) उद्योगपति-व्यापारी अणुव्रत 23 अगस्त 2015 (ख) शिक्षक-विद्यार्थी अणुव्रत 13 सितम्बर 2015 (ग) राज्य सेवी अणुव्रत 11 अक्टूबर 2015 (ङ) किसान अणुव्रत 22 नवम्बर 2015

सभी अणुव्रत समितियों एवं अणुव्रत कार्यकर्ताओं से विनम्र अनुरोध है कि उपरोक्त कार्ययोजना का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार कर इसमें सहभागी बनें।

डालचन्द कोठारी
अध्यक्ष (93222-29709)

:: निवेदक ::
अणुव्रत महासमिति

मर्यादा कुमार कोठारी
महामंत्री (94141-34340)

अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 फोन: 011-23233345

विषय-प्रवेश

कोष्ठक विवरण

जय-तिथि-पत्रक का पहला कोष्ठक अंग्रेजी दिनांक का है और फिर वार का है। उसके बाद तिथि का कोष्ठक है। उसके आगे के दो कोष्ठक में क्रमशः इतने बजे व मिनट तक का संकेत है। छठा कोष्ठक नक्षत्र का है। सातवें व आठवें में नक्षत्र के कितने बजे व मिनट तक का सूचन है। नौवें व दसवें में क्रमशः सूर्योदय व सूर्यास्त कितने बजे होता है इसका निदर्शन है। सूर्योदय व सूर्यास्त लाडनूं को केन्द्र मानकर स्टेण्डर्ड टाइम में दिया गया है। ग्यारहवें कोष्ठक में प्रथम प्रहर कितने बजे आती है तथा बारहवें कोष्ठक में दिन का एक प्रहर कितने घंटे व मिनट का होता है, इसका दिग्दर्शन है। तेरहवें कोष्ठक में चन्द्रमा तथा चौदहवें कोष्ठक में विशेष विवरण के अंतर्गत योग तथा भद्राकाल है। ये भी बजे व मिनट के क्रम से हैं।

तिथि-पत्रक में बजे-मिनट रेलवे समय-सारिणी पद्धति से दिये गये हैं। मध्य रात्रि में १२ बजे से रेलवे समय सारिणी के अनुसार २४ बजे होता है, के बाद ०० समय से शुरू कर २४ बजे तक २४ घंटे मानते हुए चलता है। जैसे–बैशाख कृष्णा द्वितीया २१/११ बजे है। इसका तात्पर्य है–यह तिथि उस दिन २१ बजकर ११ मिनट तक है। अर्थात् रात्रि में ९ बजकर ११ मिनट तक है। चैत्र शुक्ला पूर्णिमा १७/३७ बजे है। इसका अर्थ है यह तिथि उस दिन सायं ५ बजकर ३७ मिनट तक रहेगी। इसी तरह चैत्र शुक्ला द्वादशी को मघा नक्षत्र १४/४७ बजे है। अर्थात् उस दिन दोपहर २ बजकर ४७ मिनट तक है।

तिथि व नक्षत्र के बजे-मिनट बराबर में हैं। वे बजे, मिनट से स्पष्ट हैं। चंद्रमा के आगे संख्या ऊपर नीचे हैं। चंद्रमा के ऊपर वाली संख्या बजे व नीचे वाली मिनट है। जैसे–चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को चंद्रमा मेष राशि में $\frac{०६}{३१}$ अर्थात् प्रातः ६ बजकर ३१ मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करेगा। चंद्रमा के लिए इतना विशेष है कि उसका प्रवेश काल दिया है। विशेष विवरण स्पष्ट है। इसमें योग व अन्य के आगे संख्या बराबर में हैं।

तिथि, नक्षत्र आदि के साथ जहां शून्य (०) अंकित है, वह उस दिन 'पूरे दिन और पूरी रात' है अर्थात् वह तिथि या नक्षत्र उस दिन सूर्योदय से पूर्व शुरू हो गया और दूसरे दिन सूर्योदय होने के बाद तक रहा। वह समय अगले दिन की पंक्ति में है। जैसे–चैत्र शुक्ला दशमी को पुष्य नक्षत्र के आगे (०) अंकित है जिससे यह नक्षत्र पूरे दिन-रात है। चैत्र शुक्ला एकादशी (प्रथम) के आगे (०) अंकित है अर्थात् यह तिथि पूरे दिन-रात है।

सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय होने के ठीक पहले तक का समय "रात्रि समय" और उसके बाद "दिवा समय" होता है।

विशेष विवरण के कोष्ठक में प्रदत्त योगों के सांकेतिक अक्षरों में पूर्ण नाम इस प्रकार हैं :–

- र.–रवि योग (शुभ व कुयोगनाशक)
- अ.–अमृत सिद्धि योग (शुभ)
- राज.–राजयोग (शुभ)
- कु.–कुमार योग (शुभ)

- सि.–सिद्धि योग (शुभ)
- मृ.–मृत्यु योग (अशुभ)
- व्या.–व्याघात योग (अशुभ)
- वै.–वैधृति (अशुभ)
- व्य.–व्यतिपात योग (अशुभ)
- ज्वा.–ज्वालामुखी योग(अशुभ)
- पं.–पंचक (अशुभ) घास, लकड़ी एकत्र करने, घर की छत बनाने, दक्षिण यात्रा करने में वर्जित।
- भ.–भद्राकाल (शुभ-अशुभ दोनों)
- यम.–यमघंट योग (अशुभ)

नोट : शास्त्रीय मान्यता है कि मध्याह्न के पश्चात् अशुभ योगों का दोष नहीं रहता।

भद्रा-काल

श्रेष्ठ कार्यों में भद्रा-काल होना वर्जित है, किन्तु शास्त्रकारों ने भद्रा को शुभ भी माना है, जो इस प्रकार है–मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक के चंद्रमा में भद्रा का वास स्वर्ग में रहता है। यह भद्राकाल शुभ और ग्राह्य है।

कन्या, तुला, धनु और मकर के चन्द्रमा में भद्रा का वास नागलोक (पाताल) में रहता है। यह भद्राकाल भी लक्ष्मीदायक-धनदायक होने से शुभ है।

कुंभ, मीन, कर्क और सिंह के चंद्रमा में भद्रा का वास मृत्युलोक में होता है। यह अशुभ है, इसलिए शुभ कार्यों में सर्वथा वर्जनीय है।

भद्राकाल समय-विशेष के साथ शुभ भी बताया है।

शुक्ल पक्ष की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और कृष्ण पक्ष की भद्रा सर्वसंज्ञक है। मतान्तर से रात्रि की भद्रा वृश्चिक संज्ञक और दिन की भद्रा सर्वसंज्ञक है। सर्वसंज्ञक भद्रा के मुख की पांच घटी (२ घंटा) और वृश्चिक संज्ञक भद्रा की पुच्छ की तीन घटी (१ घंटा १२ मि.) शुभ कार्य में त्याज्य है।

तिथि-पत्रक के विवरण पृष्ठों के बाद कोलकाता, दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बैंगलोर व जोधपुर–इन छह शहरों के महीने की पहली व पन्द्रहवीं तारीख के सूर्योदय व सूर्यास्त का समय दिया गया है।

समय-सारिणी के बाद नक्षत्र के नाम का अक्षर और राशि की तालिका है। फिर राशि स्वामी एवं गुरु दर्शन के नक्षत्र हैं। फिर घातचक्र है। इसके बाद यात्रा में चंद्र विचार, योगिनी विचार चक्र, दिशाशूल विचार चक्र तथा काल-राहू विचार चक्र है। इनसे अगले पृष्ठ पर सुयोग-कुयोग चक्र है। अंतिम पृष्ठ पर पोरसी प्रमाण, राहुकाल, दिन एवं रात्रि के चौघड़िये हैं।

चौघड़िया-अवलोकन

दिन का चौघड़िया सूर्योदय से प्रारंभ होता है तथा रात्रि का चौघड़िया सूर्यास्त से प्रारंभ होता है। एक दिन में आठ चौघड़िये व रात्रि में आठ चौघड़िये होते हैं।

चौघड़िया का काल दिन-रात छोटे-बड़े होने के अनुसार न्यूनाधिक होता रहता है। प्रत्येक दिन के सूर्योदय से सूर्यास्त तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने पर जो एक भाग प्राप्त होगा वह उस दिन में एक चौघड़िया का मान होगा, अर्थात् दिन की समयावधि का आठवां हिस्सा एक चौघड़िया होता है। इसी प्रकार सूर्यास्त से अगले सूर्योदय तक की समयावधि को आठ से विभाजित करने से प्राप्त होने वाला एक हिस्सा रात्रि के चौघड़िये का मान होता है। अर्थात् रात्रि की समयावधि का आठवां हिस्सा रात्रि का एक चौघड़िया होता है।

चौघड़िये में उद्वेग, काल और रोग–ये तीन अशुभ हैं। शेष तीन लाभ,

अमृत और शुभ–ये चौघड़िये श्रेष्ठ होते हैं। शुक्र के अर्थात् चल (चंचल) वेला के चौघड़िये को भी अच्छा मानते हैं। श्रेष्ठ चौघड़िये में सभी कार्य करने प्रशस्त हैं। अमृत का चौघड़िया सभी शुभ कार्यों में अत्युत्तम है।

इस तिथि-पत्रक में लाडनूं को केन्द्र मानकर सूर्योदय एवं सूर्यास्त दिया गया है। उससे पूर्व दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट पहले सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। उससे पश्चिम दिशा वाले स्थानों में प्रति तीस किलोमीटर पर एक-एक मिनट बाद में सूर्योदय व सूर्यास्त होगा। लाडनूं अक्षांश २७°-४०', उत्तर पर है। रेखांश ७४°-२४' पूर्व है। अयनांश २३° १७'-१८' रेखांतर ३२ मिनट २० सैकिण्ड है। बेलान्तर+२ मिनट ३२ सैकिण्ड है। पलभा ६-१० है।

धार्मिक उपासना में पर्व तिथियों का अपना महत्त्व होता है। पक्खी आदि का प्रतिक्रमण तिथि के आधार पर करना पड़ता है। पहले इसे 'पक्खी' के नाम से संत तैयार करते थे। उसे हर सिंघाड़े (ग्रुप) को एक-एक दे दिया जाता था, बाद में 'लघु-पंचांग' के नाम से श्री हनूतमलजी सुराणा (चूरू) छपाने लग गये। परमाराध्य गुरुदेव व आचार्यवर की दृष्टि से पिछले कई वर्षों से इसका संपादन संतों द्वारा होने लगा। 'लघु पंचांग' के बाद 'जय पंचांग' के रूप में सामने आया। सन् १९८४ से इसका संपादन मेरे द्वारा होने लगा। वर्तमान में यह **'जय-तिथि-पत्रक'** के नाम से प्रकाशित हो रहा है।

२७ नवम्बर २०१४ — **मुनि सुमेर (लाडनूं)**

अणुव्रत भवन, दिल्ली

विशेष अवगति

वर्ष के दिन–इस वर्ष मास १३, पक्ष २६, तिथि क्षय १९, तिथि वृद्धि १३, कुल दिन ३८४

गाज बीज की अस्वाध्याय नहीं–आषाढ़ (प्र.) शुक्ला ६, सोमवार, दिनांक २२ जून २०१५ से आश्विन शुक्ला ११/१२, शनिवार, दिनांक २४ अक्टूबर २०१५ तक।

चंद्र ग्रहण (i) चैत्र शुक्ला १५, शनिवार, दिनांक ४ अप्रैल २०१५
(ii) भाद्रपद शुक्ला १५, सोमवार, दिनांक २८ सितम्बर २०१५
(iii) फाल्गुन शुक्ला १५, बुधवार, दिनांक २३ मार्च २०१६

सूर्य ग्रहण–फाल्गुन कृष्णा ३०, बुधवार, दिनांक ९ मार्च २०१६

मलमास–(i) वर्ष प्रारंभ से वैशाख कृष्णा १०, मंगलवार, दिनांक १४ अप्रैल २०१५ तक रहेगा। यह पिछले वर्ष चैत्र कृष्णा ९, रविवार, दिनांक १५ मार्च २०१५ से प्रारंभ हो चुका था।
(ii) मार्गशीर्ष शुक्ला ६, गुरुवार, दिनांक १७ दिसम्बर २०१५ से प्रारंभ, पौष शुक्ला ५, गुरुवार, दिनांक १४ जनवरी २०१६ को संपन्न।
(iii) फाल्गुन शुक्ला ६, सोमवार, दिनांक १४ मार्च २०१६ से प्रारंभ, अगले वर्ष में चलेगा।

तारा– (१) गुरु अस्त–श्रावण कृष्णा १४, गुरुवार, दिनांक १३ अगस्त २०१५ से प्रारंभ, भाद्रपद कृष्णा ११, मंगलवार, दिनांक ८ सितम्बर २०१५ को संपन्न।
(२) शुक्र अस्त–श्रावण कृष्णा ८, शुक्रवार, दिनांक ७ अगस्त २०१५ से प्रारम्भ, श्रावण शुक्ला ५ (द्वि.), गुरुवार, दिनांक २० अगस्त २०१५ को सम्पन्न।

नोट–ग्रहण, मलमास तथा गुरु, शुक्र के अस्तकाल में विशिष्ट शुभ कार्य वर्जनीय हैं।

विशेष ज्ञातव्य

(क) विशेष मुहूर्त्त

(१) अभिजित मुहूर्त्त, (२) रवियोग, (३) अमृत का चौघड़िया

(४) दीपावली का प्रदोषकाल (सूर्यास्त से दो घड़ी-४८ मिनट तक)

(५) पुष्य नक्षत्र के साथ रविवार या गुरुवार सदा श्रेष्ठ माना जाता है। गुरु-पुष्य विवाह में वर्जित है।

(ख) यात्रा के लिए आवश्यक

(१) यात्रा-कर्ता की जन्म-राशि से यात्रा दिन का चंद्रमा चौथे, आठवें में स्थित न हो। पंचांग में घातचक्र में दिये गये चंद्रमा को भी टालें। (जन्म-राशि ज्ञात न होने से प्रचलित नाम राशि)।

(२) यात्रा के समय सम्मुख चंद्रमा हो तो सब दोष नष्ट माने जाते हैं। पूर्व दिशा में जाने के लिए मेष, सिंह, धन का चंद्रमा, पश्चिम में मिथुन, तुला और कुंभ का, दक्षिण में वृष, कन्या, मकर का और उत्तर में कर्क, वृश्चिक और मीन का चंद्रमा सम्मुख रहता है। दाहिना चंद्रमा भी शुभ है।

(३) यात्रा-योग न मिलने पर अमृत का चौघड़िया अथवा अभिजित मुहूर्त्त सदैव ग्राह्य है। बुधवार को अभिजित शुभ नहीं।

(४) राहू काल-कुवेला का समय वर्जनीय है।

(५) मृत्यु योग आदि अशुभ योग वर्जनीय है।

(ग) यात्रा के लिए अन्य ज्ञातव्य

(१) सोमवार और शनिवार को पूर्व में, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम में, मंगलवार और बुधवार को उत्तर में तथा गुरुवार को दक्षिण में यात्रा न करें, क्योंकि दिशाशूल रहता है।

(२) उषाकाल में पूर्व में, गोधूलिकाल में पश्चिम में, मध्याह्न में दक्षिण में तथा मध्य रात्रि में उत्तर में यात्रा न करें, क्योंकि समयशूल रहता है।

(३) ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्व को, पूर्वाभाद्रपद में दक्षिण को, रोहिणी में पश्चिम को तथा उत्तराफाल्गुनी में उत्तर को यात्रा न करें, क्योंकि नक्षत्र-शूल रहता है।

(४) घनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती को पंचक कहते हैं। इन दिनों में दक्षिण की ओर यात्रा वर्जनीय है।

(५) तिथियां ४,६,८,९,१२,१४,३० और शुक्ल पक्ष की एकम यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(६) भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र यात्रा के लिए शुभ नहीं है।

(७) अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती यात्रा में विशेष शुभ नक्षत्र माने जाते हैं।

(८) उत्तर में २,१०; दक्षिण में ५,१३; पूर्व में १,९; पश्चिम में ६,१४ तिथियों में योगिनी रहती है। योगिनी के सामने या दाहिने होने पर यात्रा वर्जनीय है।

(९) पूर्व में शनिवार को, पश्चिम में मंगलवार को, उत्तर में रविवार को

तथा दक्षिण में गुरुवार को यात्रा का निषेध है क्योंकि काल-राहू सम्मुख रहता है।

(१०) शनिवार और बुधवार को ईशान कोण (पूर्वोत्तर) में, मंगलवार को वायव्य (पश्चिमोत्तर) में, रविवार, शुक्रवार को नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) में तथा सोमवार, गुरुवार को आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में विदिशाशूल है अतः यात्रा में वर्जनीय है।

दिशा-शूल परिहार–रवि को तांबूल, सोम को चंदन, मंगल को मट्ठा, बुध को पुष्प, गुरु को दही, शुक्र को घृत व शनि को तिल खाकर या देकर यात्रा करने में दिक्शूल-दोष मिटता है।

शकुन–यात्रा के समय लोहा, तेल, घास, मट्ठा, पत्थर, लकड़ी, बिलाव मिले तो अशुभ व दही, चावल, चांदी का घड़ा, पुष्प, हंस तथा मुर्दा शुभ है।

सुयोग के सामने सभी कुयोगों का नाश

इक्कस्स भए पंचाणणस्स, भज्जंति गय सय सहस्सा।
तह रवि जोग पणट्ठा, गयणम्मि गहा न दीसंति ।। यति वल्लभ ।।

एक शेर के सामने लाख हाथी भी भाग जाते हैं। एक सूर्य के आने पर आकाश में एक भी ग्रह नहीं दीखता। इसी तरह रवि योग होने पर अन्य अप्योग स्वतः अप्रभावी बन जाते हैं।

रवियोगे राजयोगे, कुमारयोगे असुद्ध दिहए वि।
जं सुह कज्जं कीरइ, तं सव्वं बहुफलं होइ ।। यतिवल्लभ ।।

अशुभ दिन में भी रवियोग, राजयोग व कुमारयोग होने पर जो भी शुभ कार्य किया जाये तो वह बहुत फलदायी होता है।

सिद्धियोगः कुयोगश्च, जायेतां युगपद्यदि।
कुयोगं तत्र निर्जित्य, सिद्धि योगो विजृम्भते ।। आरंभ सिद्धि ।।

सिद्धियोग व कुयोग यदि एक साथ हो तो कुयोग का फल नष्ट हो जाता है।

(घ) यात्रा-निवृत्ति पर प्रवेश मुहूर्त्त

शुभ नक्षत्र–अनु., चि., मृ., तीनों उत्तरा, रो., पुष्य, ह., ध.।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि।

आजकल नक्षत्र चंद्रमा के अनुकूल होने पर रवि को भी प्रवेश करते हैं।

शुभ-तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३,१५।

नोट : एक ही दिन में यात्रा और प्रवेश हो तो मात्र प्रवेश देखा जाए।

(च) दीक्षा-ग्रहण-मुहूर्त्त

शुभ मास–वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

शुभ नक्षत्र–तीनों उत्तरा,अश्वि,रो.,रे.,अनु.,पुष्य.,स्वा.,पुन,श्र.ध., श.,मू।

शुभ वार–रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ तिथि–२,३,५,७,१०,११,१३ शुक्ल पक्ष में;२,३,५ कृष्ण पक्ष में।

तीर्थंकरों के दीक्षा-कल्याणक दिन, नक्षत्र भी लिए जा सकते हैं।

नोट : गुरु अस्त न हो, अधिक मास व तिथि न हो।

(छ) विद्यारंभ आदि

शुभ तिथि–२,३,५,६,१०,११,१२ कृष्ण पक्ष २,३,५।

शुभ वार–बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–मृ, आर्द्रा, पुन, पुष्य, आश्ले, मृ, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, ध, श, तीनों पूर्वा।

नोट : सोमवार, मंगलवार, शनिवार को आरंभ किया हुआ कोई भी साहित्य सृजन, शोध-कार्य आदि सफलता का सूचक नहीं होता। जैन विद्या का सत्रारंभ रवि और शुक्र को श्रेष्ठ रहता है।

साहित्य-सृजन में आर्द्रा, पुनः, पुष्य, रे, ह, चि, स्वा, अश्वि, श्र, अनु, नक्षत्र उत्तम माने गये हैं, बुध, गुरु, शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

(ज) जन्म के पाये

आर्द्रा नक्षत्र से १० नक्षत्र तक चांदी का, विशाखा नक्षत्र से ४ नक्षत्र तक लोहे का, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र से ६ नक्षत्र तक तांबे का तथा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र से ७ नक्षत्र तक सोने का पाया होता है।

प्रकारान्तर से जन्म-नक्षत्र के कालमान को समान चार भागों में बांट लिया जाता है। प्रथम भाग में जन्म होने से सोने का पाया, द्वितीय भाग में होने से चांदी का पाया, तृतीय भाग में होने से तांबे का पाया और चौथे भाग में होने से लोहे का पाया मानते हैं।

लग्न और चंद्रमा से भी पाया देखा जाता है। जन्म-कुंडली में लग्न से पहला, छठा, ग्यारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो सोने का पाया, लग्न से दूसरा, पांचवां तथा नौवां चंद्रमा पड़ा हो तो चांदी का पाया, लग्न से तीसरा, सातवां व दसवां चंद्रमा पड़ा हो तो तांबे का पाया मानते हैं। जन्म से चौथा, आठवां व बारहवां चंद्रमा पड़ा हो तो लोहे का पाया मानते हैं। सोना एवं लोहे का पाया कष्टप्रद तथा चांदी व तांबे का पाया श्रेष्ठ माने जाते हैं।

अधिकांश ज्योतिषियों के मतानुसार लग्न और चंद्रमा से देखा गया पाया ही मान्य होता है। पूरे देश में प्रायः इसी का प्रचलन है।

(झ) वार संज्ञक नक्षत्र

आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा और मघा–ये वार संज्ञक नक्षत्र हैं। इन नक्षत्रों में जन्म होने पर जातक का जन्म वारों में हुआ माना जाता है। इनमें उत्पन्न बच्चों का प्रायः वही नक्षत्र आने से नामकरण होता है। ज्येष्ठा की अंतिम चार घड़ी तथा मूल की पहली चार घड़ी अभुक्त मूल मानी जाती है जो कष्टदायक है। मूल के प्रथम चरण में जन्म होने से पिता के लिए, दूसरे में माता के लिए, तीसरे में आर्थिक पक्ष के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। मूल का चौथा चरण शुभ माना जाता है। इसके विपरीत आश्लेषा का प्रथम चरण शुभ माना जाता है। दूसरा धन के लिए, तीसरा माता के लिए तथा चौथा पिता के लिए अनिष्टकारक माना जाता है। इसी प्रकार ज्येष्ठा का प्रथम बड़े भाई के लिए, दूसरा छोटे भाई के लिए, तीसरा माता के लिए और चौथा स्वयं बालक के लिए अनिष्टकारक माना जाता है।

(ट) ग्रहण

सब जगह एक साथ ग्रहण नहीं लगता, इस कारण उसका समय नहीं दिया जाता है। जो ग्रहण जहां नहीं दिखता, उस ग्रहण की अस्वाध्याय आदि रखने की जरूरत नहीं है।

संवत् २०७२ के विशेष पर्व-दिवस

१.	२५६वां भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, रामनवमी	चैत्र शुक्ला-९	२८ मार्च २०१५	शनिवार
२.	२६१४वीं महावीर जयन्ती (महावीर जन्म कल्याणक दिवस)	चैत्र शुक्ला-१३	२ अप्रैल २०१५	गुरुवार
३.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का छठा महाप्रयाण दिवस	वैशाख कृष्णा-११	१५ अप्रैल २०१५	बुधवार
४.	अक्षय तृतीया	वैशाख शुक्ला-३	२१ अप्रैल २०१५	मंगलवार
५.	आचार्यश्री महाश्रमण का ५४वां जन्म दिवस	वैशाख शुक्ला-९	२७ अप्रैल २०१५	सोमवार
६.	आचार्यश्री महाश्रमण का छठा पदाभिषेक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	२८ अप्रैल २०१५	मंगलवार
७.	भगवान् महावीर केवलज्ञान कल्याणक दिवस	वैशाख शुक्ला-१०	२८ अप्रैल २०१५	मंगलवार
८.	आचार्यश्री महाश्रमण का ४२वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस)	वैशाख शुक्ला-१४	३ मई २०१५	रविवार
९.	आचार्यश्री तुलसी का १९वां महाप्रयाण दिवस	आषाढ़ (द्वि.) कृष्णा-३	४ जुलाई २०१५	शनिवार
१०.	आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९६वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)	आषाढ़ (द्वि.) कृष्णा-१३	१४ जुलाई २०१५	मंगलवार
११.	आचार्य भिक्षु का २९०वां जन्म दिवस एवं २५८वां बोधि दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१३	२९ जुलाई २०१५	बुधवार
१२.	चातुर्मासिक पक्खी	आषाढ़ शुक्ला-१४	३० जुलाई २०१५	गुरुवार
१३.	२५६वां तेरापंथ स्थापना दिवस	आषाढ़ शुक्ला-१५	३१ जुलाई २०१५	शुक्रवार
१४.	६९वां स्वतंत्रता दिवस	श्रावण शुक्ला १	१५ अगस्त २०१५	शनिवार
१५.	श्रीमज्जयाचार्य का १३४वां निर्वाण दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१२	९ सितम्बर २०१५	बुधवार
१६.	पर्युषण प्रारंभ दिवस	भाद्रपद कृष्णा-१३ (प्र.)	१० सितम्बर २०१५	गुरुवार
१७.	पर्युषण पक्खी	भाद्रपद कृष्णा-१४	१२ सितम्बर २०१५	शनिवार
१८.	संवत्सरी महापर्व	भाद्रपद शुक्ला-४	१७ सितम्बर २०१५	गुरुवार
१९.	कालूगणी का ७९वां स्वर्गवास दिवस	भाद्रपद शुक्ला-६	१९ सितम्बर २०१५	शनिवार
२०.	२२वां विकास महोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-९	२२ सितम्बर २०१५	मंगलवार

२१.	२१३वां भिक्षु चरमोत्सव	भाद्रपद शुक्ला-१३	२६ सितम्बर २०१५	शनिवार
२२.	दीपावली	कार्तिक कृष्णा-३०	११ नवम्बर २०१५	बुधवार
२३.	भगवान् महावीर का २५४२वां निर्वाण कल्याणक दिवस	कार्तिक कृष्णा-३०	११ नवम्बर २०१५	बुधवार
२४.	आचार्यश्री तुलसी का १०२वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)	कार्तिक शुक्ला-२	१३ नवम्बर २०१५	शुक्रवार
२५.	चातुर्मासिक पक्खी	कार्तिक शुक्ला-१४/१५	२५ नवम्बर २०१५	बुधवार
२६.	भगवान् महावीर का २५८४वां दीक्षा कल्याणक दिवस	मार्गशीर्ष कृष्णा-१० (प्र.)	५ दिसम्बर २०१५	शनिवार
२७.	भगवान् पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक दिवस	पौष कृष्णा-१०	४ जनवरी २०१६	सोमवार
२८.	६६वां गणतंत्र दिवस	माघ कृष्णा-२	२६ जनवरी २०१६	मंगलवार
२९.	१५२वां मर्यादा महोत्सव	माघ शुक्ला-७	१४ फरवरी २०१६	रविवार
३०.	होलिका	फाल्गुन शुक्ला-१५	२३ मार्च २०१६	बुधवार
३१.	चातुर्मासिक पक्खी	फाल्गुन शुक्ला-१५	२३ मार्च २०१६	बुधवार
३२.	भगवान् ऋषभ दीक्षा कल्याणक दिवस (वर्षीतप प्रारंभ)	चैत्र कृष्णा-८	१ अप्रैल २०१६	शुक्रवार

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित होने वाले वार्षिक महत्त्वपूर्ण आयोजन

कार्य	स्थान	दिनांक	संपर्क सूत्र
महावीर जयन्ती	वीरगंज (नेपाल)	२ अप्रैल २०१५	009779802922156 (अशोक बैद)
अक्षय तृतीया	काठमांडो (नेपाल)	२१ अप्रैल २०१५	009779851055774 (दिनेश कुमार)
सन् २०१५ का चातुर्मास वि.सं. (२०७२)	विराटनगर (नेपाल)	३० जुलाई २०१५ (प्रारंभ)	009779852020321 (दिनेश गोलछा)
१५२वां मर्यादा महोत्सव	किशनगंज (बिहार)	१४ फरवरी २०१६	09931444555

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२१	श	१	११	३४	उ.भा. / रे.	०९ / ०६	०४ / ३१	६.३९	६.४०	९.३९	३.००	मेष ०६/३१	पं. ०६/३१ तक
२२	र	२ / ३	०८ / ०५	१८ / २८	अ	०४	२५	६.३८	६.४१	९.३९	३.०१	मेष	र. ०४/२५ से, राज. ०४/२५ से ०५/२८ तक, वै. २१/२० से
२३	सो	४	०३	१४	भ	०२	५४	६.३६	६.४१	९.३७	३.०१	मेष	भ. १६/१६ से ०३/१४ तक, र. ०२/५४ तक, वै. १८/०७ तक
२४	मं	५	०१	४२	कृ	०२	०४	६.३५	६.४२	९.३६	३.०२	वृष ०८/३७	र. और कृ. ०२/०४ से
२५	बु	६	२४	५६	रो	०१	५९	६.३३	६.४३	९.३४	३.०३	वृष	कृ. २४/५६ तक, र. ०१/५९ तक, राज. ०१/५९ से
२६	गु	७	२४	५७	मृ	०२	४०	६.३२	६.४३	९.३५	३.०३	मि. १४/१४	मृ. ०२/४० तक, भ. २४/५७ से
२७	शु	८	०१	४४	आ	०४	०६	६.३१	६.४४	९.३४	३.०३	मिथुन	भ. १३/१५ तक, र. ०४/०६ से
२८	श	९	०३	११	पुन	०६	११	६.३०	६.४४	९.३४	३.०३	कर्क २३/३७	र. अहोरात्र, श्री भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस, श्री रामनवमी
२९	र	१०	०५	११	पु	०	०	६.२९	६.४५	९.३३	३.०४	कर्क	र. अहोरात्र
३०	सो	११	०	०	पु	०८	४६	६.२८	६.४५	९.३२	३.०४	कर्क	र. ०८/४६ तक, भ. १८/२१ से
३१	मं	११	०७	३५	आ	११	४१	६.२७	६.४५	९.३१	३.०४	सिंह ११/४१	भ. ०७/३५ तक, सूर्य रेवती में २४/२४ से
१	बु	१२	१०	१०	म	१४	४७	६.२६	६.४६	९.३१	३.०५	सिंह	
२	गु	१३	१२	४८	पू.फा.	१७	५३	६.२५	६.४६	९.३०	३.०५	क. २४/३८	र. १७/५३ से, महावीर जयंती
३	शु	१४	१५	१९	उ.फा.	२०	५१	६.२४	६.४६	९.२९	३.०५	कन्या	भ. १५/१९ से ०४/३० तक, र. २०/५१ तक
४	श	१५	१७	३७	ह	२३	३६	६.२३	६.४७	९.२९	३.०६	कन्या	मृ. और यम. २३/३६ तक, व्या. १६/२४ से, चंद्र ग्रहण, पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
५	र	१	१९	३५	चि	०२	०२	६.२२	६.४७	९.२८	३.०६	तुला १२/५२	राज. १९/३५ से ०२/०२ तक, व्या. १६/५५ तक
६	सो	२	२१	११	स्वा.	०४	०६	६.२१	६.४७	९.२७	३.०६	तुला	यम. ०४/०६ से
७	मं	३	२२	२१	वि	०५	४३	६.१९	६.४८	९.२६	३.०७	वृ. २३/२५	भ. ०९/४९ से २२/२१ तक
८	बु	४	२३	०२	अ	०	०	६.१८	६.४८	९.२५	३.०७	वृश्चिक	अ. अहोरात्र, व्य. १६/४१ से
९	गु	५	२३	१२	अ	०६	५२	६.१७	६.४८	९.२५	३.०८	वृश्चिक	व्य. १५/५० तक
१०	शु	६	२२	५०	ज्ये	०७	३०	६.१६	६.४९	९.२४	३.०८	धन ०७/३०	र. ०७/३० से, कु. ०७/३० से २२/५० तक, भ. २२/५० से
११	श	७	२१	५४	मू	०७	३६	६.१५	६.५०	९.२४	३.०९	धन	र. ०७/३६ तक, भ. १०/२६ तक
१२	र	८	२०	२७	पू.षा. / उ.षा.	०७ / ०६	११ / १४	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	म. १२/५९	
१३	सो	९	१८	२९	श्र	०४	४७	६.१३	६.५१	९.२३	३.०९	मकर	सि. ०४/४७ तक, कु. १८/२९ से ०४/४७ तक, भ. ०५/२० से
१४	मं	१०	१६	०३	ध	०२	५५	६.१२	६.५१	९.२२	३.१०	कुंभ ११/५४	सूर्य अश्विनी और मेष में १३/४८ से, पं. ११/५४ से, भ. १६/०३ तक, पु. ०२/५५ से, मलमास समाप्त
१५	बु	११	१३	१५	श	२४	४४	६.११	६.५२	९.२१	३.१०	कुंभ	पं., आचार्यश्री महाप्रज्ञ का छठा महाप्रयाण दिवस
१६	गु	१२	१०	१०	पू.भा.	२२	१९	६.१०	६.५२	९.२०	३.१०	मीन १६/१७	पं.,
१७	शु	१३ / १४	०६ / ०३	११ / ३८	उ.भा.	१९	५०	६.०९	६.५२	९.२०	३.११	मीन	पं., भ. ०८/५५ से १७/१६ तक, अ. १९/५० से, वै. ११/०२ से
१८	श	३०	२४	२९	रे	१७	२४	६.०८	६.५३	९.१९	३.११	मेष १७/२४	पं. १७/२४ तक, वै. ११/१३ तक पचमी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१९	र	१	२१	३४	अ	१५	१०	६.०७	६.५४	९.१९	३.११	मेष	राज. २१/३४ से
२०	सो	२	१९	०४	भ	१३	१९	६.०६	६.५४	९.१८	३.१२	वृष $\frac{१८}{५६}$	
२१	मं	३	१७	०७	कृ	११	५९	६.०५	६.५५	९.१७	३.१२	वृष	र. ११/५९ से, भ. ०४/२४ से, अक्षय तृतीया
२२	बु	४	१५	५१	रो	११	१७	६.०४	६.५६	९.१७	३.१३	मि. $\frac{२३}{१२}$	र. ११/१७ तक, भ. १५/५१ तक
२३	गु	५	१५	२०	मृ	११	१९	६.०३	६.५६	९.१६	३.१३	मिथुन	मृ. ११/१९ तक, र. ११/१९ से
२४	शु	६	१५	३७	आ	१२	०८	६.०२	६.५७	९.१६	३.१४	मिथुन	र. १२/०८ तक, कृ. १२/०८ से १५/३७ तक
२५	श	७	१६	३९	पुन	१३	४१	६.०१	६.५८	९.१५	३.१४	कर्क $\frac{०७}{५३}$	भ. १६/३९ से ०५/२६ तक
२६	र	८	१८	२३	पु	१५	५५	६.००	६.५८	९.१५	३.१४	कर्क	र. १५/५५ से
२७	सो	९	२०	३७	आ	१८	३९	५.५९	६.५९	९.१४	३.१५	सिंह $\frac{१८}{३९}$	र. अहोरात्र, कृ. २०/३७ से, सूर्य भरणी में ०५/३२ से, आचार्यश्री महाश्रमण का ५४वां जन्म दिवस
२८	मं	१०	२३	०८	म	२१	४१	५.५८	७.००	९.१४	३.१५	सिंह	र. अहोरात्र, कृ. २१/४१ तक, भगवान महावीर केवलज्ञान दिवस, आचार्यश्री महाश्रमण का छठा पदाभिषेक दिवस
२९	बु	११	०१	४३	पू.फा.	२४	४८	५.५७	७.००	९.१३	३.१६	सिंह	भ. १२/२६ से ०१/४३ तक, र. २४/४८ तक, व्या. २१/३१ से
३०	गु	१२	०४	१०	उ.फा.	०३	४७	५.५७	७.०१	९.१३	३.१६	क. $\frac{०७}{२४}$	व्या. २२/२८ तक
१	शु	१३	०	०	ह	०	०	५.५६	७.०१	९.१२	३.१६	कन्या	
२	श	१३	०६	१८	ह	०६	२८	५.५५	७.०२	९.१२	३.१६	तुला $\frac{११}{४०}$	मृ. और यम. ०६/२८ तक, र. ०६/२८ से
३	र	१४	०८	००	चि	०८	४४	५.५४	७.०२	९.११	३.१७	तुला	राज. ०८/०० से ०८/४४ तक, र. ०८/४४ तक, भ. ०८/०० से २०/४० तक, व्या. २३/४८ से, आचार्यश्री महाश्रमण का ४२वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस), चक्रवी
४	सो	१५	०९	१२	स्वा	१०	३२	५.५३	७.०३	९.१०	३.१७	वृ. $\frac{०५}{३५}$	कृ. १०/३२ से, यम. १०/३२ से, व्या. २३/२९ तक

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
५	मं	१	०९	५५	वि.	११	५१	५.५२	७.०३	९.१०	३.१८	वृश्चिक	कु. ०९/५५ तक, राज. ११/५१ से
६	बु	२	१०	०७	अ	१२	४१	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	वृश्चिक	अ. १२/४१ तक, राज. १२/४१ तक, भ. २२/०३ से
७	गु	३	०९	५२	ज्ये	१३	०४	५.५१	७.०४	९.०९	३.१८	धन १३/०४	भ. ०९/५२ तक
८	शु	४	०९	१२	मू	१३	०३	५.५०	७.०५	९.०९	३.१९	धन	कु. ०९/१२ से १३/०३ तक
९	श	५	०८	१०	पू.षा.	१२	४०	५.५०	७.०६	९.०९	३.१९	म. [illegible]/३२	र. १२/४० से
१०	र	६/७	०६/०५	४६/०५	उ.षा.	११	५७	५.४९	७.०७	९.०९	३.१९	मकर	भ. ०६/४६ से १७/५८ तक, र. ११/५७ तक
११	सो	८	०३	०५	श्र	१०	५६	५.४९	७.०८	९.०९	३.२०	कुंभ २२/२०	सि. १०/५६ तक, पं. २२/२० से, सूर्य कृतिका में २३/४७ से
१२	मं	९	२४	५२	ध	०९	३९	५.४८	७.०८	९.०९	३.२०	कुंभ	पं., गु. ०९/३९ से, वै. ०६/०६ से
१३	बु	१०	२२	२६	श	०८	०८	५.४७	७.०९	९.०८	३.२०	मीन २४/५२	पं., कु. ०८/०८ से, भ. ११/४० से २२/२६ तक, वै. ०२/५९ तक
१४	गु	११	१९	५१	पू.भा./उ.भा.	०८/०५	१७/५९	५.४७	७.१०	९.०७	३.२१	मीन	पं.,
१५	शु	१२	१७	११	रे	०२	४२	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	मेष ०२/४२	अ. ०२/४२ तक, सूर्य वृषभ में १०/३८ से, पं. ०२/४२ तक
१६	श	१३	१४	३३	अ	२४	५४	५.४६	७.१०	९.०७	३.२१	मेष	भ. १४/३३ से ०१/१६ तक
१७	र	१४	१२	०२	भ	२३	१६	५.४५	७.१०	९.०६	३.२१	वृष ०४/५४	
१८	सो	३०	०९	४५	कृ	२१	५७	५.४४	७.११	९.०६	३.२२	वृष	कु. २१/५७ से पक्षान्त

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१९	मं	१	०७	५१	रो	२१	०५	५.४४	७.१२	९.०६	३.२२	वृष	कु. ०७/५१ तक, राज. २१/०५ से
२०	बु	२/३	०६/०५	२७/४१	मृ	२०	४८	५.४३	७.१२	९.०५	३.२२	मि. ०८/५३	राज. २०/४८ तक, र. २०/४८ से
२१	गु	४	०५	३८	आ	२१	१०	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	मिथुन	भ. १७/३४ से ०५/३८ तक, र. २१/१० तक, सि. २१/१० से
२२	शु	५	०	०	पुन	२२	१६	५.४३	७.१३	९.०५	३.२२	कर्क १५/५५	कु. २२/१६ तक, र. २२/१६ से
२३	श	५	०६	१९	पु	२४	०५	५.४२	७.१४	९.०५	३.२३	कर्क	र. २४/०४ तक
२४	र	६	०७	४२	आ	०२	२९	५.४२	७.१५	९.०५	३.२३	सिंह ०२/२५	यम. ०२/२९ से, व्या. ०३/४८ से
२५	सो	७	०९	४१	म	०५	२१	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	सिंह	भ. ०९/४१ से २२/५० तक, सूर्य रोहिणी में १९/५४ से, व्या. ०४/३८ तक
२६	मं	८	१२	०४	पू.फा.	०	०	५.४१	७.१५	९.०५	३.२३	सिंह	
२७	बु	९	१४	३६	पू.फा.	०८	२५	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	क. ११/४२	र. ०८/२५ से
२८	गु	१०	१७	०२	उ.फा.	११	२७	५.४१	७.१६	९.०५	३.२४	कन्या	र. अहोरात्र
२९	शु	११	१९	०८	ह	१४	१३	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	तुला ०३/२६	कु. १४/१३ तक, भ. ०६/०९ से १९/०८ तक, र. १४/१३ तक, राज. १९/०८ से, व्य. ०७/३३ से
३०	श	१२	२०	४४	चि.	१६	३१	५.४०	७.१७	९.०४	३.२४	तुला	सि. १६/३१ से, व्य. ०८/०३ तक
३१	र	१३	२१	४३	स्वा.	१८	१५	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	तुला	र. १८/१५ से
१	सो	१४	२२	०४	वि	१९	२१	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	वृ. १३/०४	यम. १९/२१ तक, र. १९/२१ तक, भ. २२/०४ से
२	मं	१५	२१	४९	अ	१९	५२	५.४०	७.१८	९.०४	३.२४	वृश्चिक	राज. १९/५२ तक, भ. १०/०१ तक पक्षसी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३	बु	१	२१	०२	ज्ये	१९	५०	५.३९	७.१८	९.०४	३.२५	धन $\frac{१९}{५०}$	कु. और ज्वा. १९/५० से २१/०२ तक, यम. १९/५० से
४	गु	२	१९	४९	मू.	१९	२३	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	धन	
५	शु	३	१८	१६	पू.षा.	१८	३५	५.३९	७.१९	९.०४	३.२५	म. $\frac{२४}{२०}$	राज. १८/१६ तक, भ. ०७/०४ से १८/१६ तक
६	श	४	१६	२७	उ.षा.	१७	३३	५.३९	७.२०	९.०४	३.२५	मकर	
७	र	५	१४	२९	श्र	१६	२०	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	कुंभ $\frac{०३}{४२}$	र. १६/२० से, पं. ०३/४२ से, वै. १७/५९ से
८	सो	६	१२	२४	ध	१५	०३	५.३९	७.२१	९.०४	३.२५	कुंभ	पं., भ. १२/२४ से २३/२१ तक, र. १५/०३ तक, सूर्य मृगशीर्ष में १७/५१ से, र. १७/५१ से, वै.१५/१३ तक
९	मं	७	१०	१७	श	१३	४२	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	कुंभ	पं., मृ. १३/४२ तक, र. १३/४२ तक
१०	बु	$\frac{८}{९}$	$\frac{०८}{०६}$	$\frac{०९}{००}$	पू.भा.	१२	२१	५.३९	७.२२	९.०५	३.२६	मीन $\frac{०६}{४१}$	पं.,
११	गु	१०	०३	५४	उ.भा.	११	००	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	मीन	पं., भ. १६/५७ से ०३/५४ तक
१२	शु	११	०१	५१	रे	०९	४१	५.३९	७.२३	९.०५	३.२६	मेष $\frac{०९}{४१}$	अ. ०९/४१ तक, पं. ०९/४१ तक, कु. ०९/४१ से ०१/५१ तक
१३	श	१२	२३	५५	अ	०८	२७	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	मेष	
१४	र	१३	२२	११	भ	०७	२१	५.३९	७.२४	९.०५	३.२६	वृष $\frac{१३}{०६}$	भ. २२/११ से
१५	सो	१४	२०	४३	$\frac{कृ.}{रो}$	$\frac{०६}{०५}$	$\frac{२७}{५२}$	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	वृष	भ. ०९/२५ तक, सूर्य मिथुन में १७/१३ से, अ. ०५/५२ से
१६	मं	३०	१९	३७	मृ	०५	४२	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मि. $\frac{१७}{४४}$	यम. ०५/४२ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१७	बु	१	१९	००	आ	०६	०२	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	मिथुन	
१८	गु	२	१८	५६	पुन	०	०	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	कर्क २४/४२	सि. अहोरात्र
१९	शु	३	१९	३१	पुन	०६	५९	५.३९	७.२५	९.०५	३.२६	कर्क	र. ०६/५९ से, राज. ०६/५९ से १९/३१ तक, व्या. १२/४५ से
२०	श	४	२०	४४	पु.	०८	३३	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	कर्क	र. ०८/३३ तक, भ. ०८/०३ से २०/४४ तक, व्या. १२/३५ तक
२१	र	५	२२	३२	आ	१०	४३	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	सिंह १०/४३	र. १०/४३ से, यम. १०/४३ से
२२	सो	६	२४	४८	म	१३	२३	५.३९	७.२६	९.०६	३.२७	सिंह	कु. १३/२३ तक, र. १३/२३ तक, सूर्य आर्द्रा में १६/४६ से, र. १६/४६ से, गाजबीज की अस्वाध्याय नहीं
२३	मं	७	०३	१८	पू.फा.	१६	२२	५.४०	७.२७	९.०७	३.२७	क. ३३/०९	राज. १६/२२ तक, र. १६/२२ तक, भ. ०३/१८ से, व्य. १४/३८ से
२४	बु	८	०५	४७	उ.फा.	१९	२८	५.४१	७.२७	९.०८	३.२७	कन्या	भ. १६/३४ तक, व्या. १५/४१ तक
२५	गु	९	०	०	ह	२२	२४	५.४१	७.२७	९.०८	३.२७	कन्या	र. २२/२४ से
२६	शु	९	०८	००	चि	२४	५४	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	तुला ११/४३	र. अहोरात्र
२७	श	१०	०९	४२	स्वा	०२	५०	५.४२	७.२७	९.०८	३.२६	तुला	सि. ०२/५० तक, भ. २२/१९ से, र. ०२/५० तक
२८	र	११	१०	४५	वि	०४	०३	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	वृ. २१/४८	भ. १०/४५ तक, राज. और मृ. ०४/०३ से
२९	सो	१२	११	०३	अ	०४	३२	५.४३	७.२७	९.०९	३.२६	वृश्चिक	र. ०४/३२ से
३०	मं	१३	१०	३८	ज्ये	०४	१९	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	धन ०४/१९	र. ०४/१९ तक
१	बु	१४	०९	३०	मू	०३	३१	५.४४	७.२७	९.१०	३.२६	धन	यम. ०३/३१ तक, भ. ०९/३० से २०/४४ तक, राज. ०३/३१ से, पक्खी
२	गु	१५ / १	०७ / ०५	५० / ४४	पू.षा.	०२	१६	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	धन	

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३	शु	२	०३	१९	उ.षा.	२४	४१	५.४५	७.२७	९.११	३.२५	म. ०७/५४	वै. ०७/४२ से ०४/४० तक
४	श	३	२४	४५	श्र	२२	५६	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मकर	भ. १४/०३ से २४/४५ तक, आचार्यश्री तुलसी का १९वां महाप्रयाण दिवस
५	र	४	२२	०९	ध	२१	०८	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कुंभ १०/०२	पं. १०/०२ से
६	सो	५	१९	३६	श	१९	२३	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	कुंभ	पं., सूर्य पुर्नवसु में १६/२४ से, कु. १९/२३ से
७	मं	६	१७	११	पू.भा.	१७	४६	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मीन १२/१०	पं., कु. १७/११ तक, भ. १७/११ से ०४/०३ तक, र. और राज. १७/४६ से, सि. १७/४६ से
८	बु	७	१४	५७	उ.भा.	१६	२१	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मीन	पं., राज. १४/५७ तक, र. १६/२१ तक
९	गु	८	१२	५७	रे	१५	०९	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मेष १५/०९	पं., १५/०९ तक
१०	शु	९	११	११	अ	१४	११	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	मेष	कु. ११/११ से १४/११ तक, भ. २२/२३ से
११	श	१०	०९	४०	भ	१३	२८	५.४६	७.२७	९.११	३.२५	वृष १९/२०	भ. ०९/४० तक
१२	र	११	०८	२५	कृ	१३	०२	५.४७	७.२६	९.१२	३.२५	वृष	
१३	सो	१२	०७	२८	रो	१२	५४	५.४७	७.२६	९.१२	३.२४	मि. २४/५८	अ. १२/५४ से
१४	मं	१३	०६	५२	मृ	१३	०७	५.४७	७.२५	९.१२	३.२४	मिथुन	भ. ०६/५२ से १८/४३ तक, यम. १३/०७ से, व्या. २३/०८ से, आचार्यश्री महाप्रज्ञ का ९६वां जन्म दिवस (प्रज्ञा दिवस)
१५	बु	१४	०६	४०	आ	१३	४५	५.४८	७.२५	९.१२	३.२४	मिथुन	व्या. २२/१२ तक
१६	गु	३०	०६	५६	पुन	१४	५०	५.४९	७.२५	९.१३	३.२४	कर्क ०८/३१	सि. १४/५० तक, गुरुपुष्यामृतयोग १४/५० से (विवाहे वर्ज्य), सूर्य कर्क में ०४/०३ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१७	शु	१	०७	४२	पु	१६	२६	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	कर्क	राज. ०७/४२ से १६/२६ तक, मृ. १६/२६ से
१८	श	२	०९	००	आ	१८	३३	५.५०	७.२५	९.१४	३.२४	सिंह $\frac{१८}{३३}$	र. १८/३३ से, व्य. २१/५२ से
१९	र	३	१०	४८	म	२१	०८	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	सिंह	यम. १२/०८ तक, र. २१/०८ तक, भ. २३/५२ से, व्य. २२/३१ तक
२०	सो	४	१३	०२	पू.फा.	२४	०४	५.५१	७.२४	९.१४	३.२३	सिंह	भ. १३/०२ तक, सूर्य पुष्य में १५/५२ से, र. १५/५२ से २४/०४ तक
२१	मं	५	१५	३२	उ.फा.	०३	१२	५.५२	७.२४	९.१५	३.२३	क. $\frac{०५}{५०}$	र. और कु. ०३/१२ से
२२	बु	६	१८	०७	ह	०	०	५.५२	७.२३	९.१५	३.२३	कन्या	र. अहोरात्र, कु. १८/०७ तक
२३	गु	७	२०	३१	ह	०६	१८	५.५३	७.२३	९.१५	३.२३	तुला $\frac{१९}{५५}$	र. ०६/१८ तक, भ. २०/३१ से
२४	शु	८	२२	३०	चि	०९	०६	५.५३	७.२२	९.१५	३.२२	तुला	भ. ०९/३४ तक
२५	श	९	२३	५०	स्वा	११	२४	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	तुला	र. ११/२४ से
२६	र	१०	२४	२५	वि	१३	०१	५.५४	७.२१	९.१६	३.२२	वृ. $\frac{०५}{४२}$	र. अहोरात्र, मृ. १३/०१ से
२७	सो	११	२४	१०	अ	१३	५१	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	वृश्चिक	भ. १२/२४ से २४/१० तक, र. १३/५१ तक
२८	मं	१२	२३	०८	ज्ये	१३	५२	५.५५	७.२०	९.१६	३.२१	धन $\frac{१३}{५२}$	वै. २३/२३ से
२९	बु	१३	२१	२२	मू	१३	०८	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	धन	यम. १३/०८ तक, र. १३/०८ से, वै. २०/५४ तक, आचार्य भिक्षु जन्म दिवस एवं बोधि दिवस
३०	गु	१४	१९	०२	पू.षा.	११	४६	५.५६	७.१९	९.१७	३.२१	म. $\frac{१७}{२१}$	र. ११/४६ तक, भ. १९/०२ से ०५/४१ तक, चातुर्मासिक पक्खी
३१	शु	१५	१६	१४	उ.षा.	०९	५४	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	मकर	कु. १६/१४ से, २५६वां तेरापंथ स्थापना दिवस

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१	श	१	१३	०९	ध/श	०७/०५	४२/४९	५.५७	७.१८	९.१७	३.२०	कुंभ १८/३१	पं. १८/३१ से
२	र	२	०९	५६	श	०२	५६	५.५८	७.१७	९.१८	३.२०	कुंभ	पं., भ. २०/२० से
३	सो	३/४	०६/०३	४१/४२	पू.भा.	२४	४१	५.५९	७.१७	९.१८	३.१९	मीन ०६/४५	पं., भ. ०६/४५ तक, सूर्य आश्लेषा में १४/४९ से
४	मं	५	२४	५५	उ.भा.	२२	४०	५.५९	७.१६	९.१८	३.१९	मीन	पं., सि. २२/४० तक
५	बु	६	२२	२९	रे	२०	५९	६.००	७.१५	९.१९	३.१९	मेष २०/५९	पं. २०/५९ तक, कु. २०/५९ से २२/२९ तक, मृ. २०/५९ से, र. २०/५९ से, भ. २२/२९ से
६	गु	७	२०	२६	अ	१९	४२	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	मेष	भ. ०९/२४ तक, र. १९/४२ तक
७	शु	८	१८	५०	भ	१८	५१	६.०१	७.१४	९.१९	३.१८	वृष २४/४३	
८	श	९	१७	४१	कृ	१८	२७	६.०२	७.१३	९.२०	३.१८	वृष	अ. १८/२७ से (प्रयाणे वर्ज्य), भ. ०५/१७ से
९	र	१०	१७	००	रो	१८	३१	६.०२	७.१२	९.२०	३.१७	वृष	भ. १७/०० तक, व्या. ०८/३४ से
१०	सो	११	१६	४७	मृ	१९	०२	६.०३	७.११	९.२०	३.१७	मि. ०३/४३	अ. १९/०२ तक, व्या. ०७/१३ तक
११	मं	१२	१७	०१	आ	२०	००	६.०३	७.१०	९.२०	३.१७	मिथुन	यम. २०/०० तक
१२	बु	१३	१७	४२	पुन	२१	२५	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	कर्क १५/०१	भ. १७/४२ से ०६/१३ तक, व्य. ०५/२२ से
१३	गु	१४	१८	५१	पु	२३	१५	६.०४	७.०९	९.२०	३.१६	कर्क	गुरुपुष्यामृतयोग २३/१५ तक (विवाहे वर्ज्य), व्य. ०५/२६ तक
१४	शु	३०	२०	२५	आ	०१	३०	६.०५	७.०७	९.२०	३.१६	सिंह ०१/३०	मृ. ०१/३० तक, कु. ०१/३० से पक्की

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१५	श	१	२२	२४	म	०४	०७	६.०५	७.०६	९.२०	३.१५	सिंह	स्वतंत्रता दिवस
१६	र	२	२४	४२	पू.फा.	०	०	६.०६	७.०५	९.२१	३.१५	सिंह	राज. अहोरात्र
१७	सो	३	०३	१६	पू.फा.	०७	०४	६.०६	७.०४	९.२१	३.१४	क. $\frac{१३}{५०}$	र. ०७/०४ से १२/२६ तक, सूर्य मघा और सिंह में १२/२६ से
१८	मं	४	०५	५४	उ.फा.	१०	१२	६.०७	७.०३	९.२१	३.१४	कन्या	र. १०/१२ से, भ. १६/३५ से ०५/५४ तक, कु. ०५/५४ से
१९	बु	५	०	०	ह	१३	२३	६.०७	७.०२	९.२१	३.१४	तु. $\frac{०२}{५८}$	कु. १३/२३ तक, र. १३/२३ तक
२०	गु	५	०८	२७	चि	१६	२५	६.०७	७.०१	९.२१	३.१३	तुला	र. १६/२५ से
२१	शु	६	१०	४१	स्वा	१९	०५	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	तुला	र. १९/०५ तक
२२	श	७	१२	२४	वि	२१	११	६.०८	७.००	९.२१	३.१३	वृ. $\frac{१४}{४४}$	भ. १२/२४ से ०१/०१ तक
२३	र	८	१३	२६	अ	२२	३५	६.०९	६.५९	९.२१	३.१३	वृश्चिक	मृ. २२/३५ तक, र. २२/३५ से, वै. ११/४५ से
२४	सो	९	१३	४१	ज्ये	२३	११	६.०९	६.५८	९.२१	३.१२	धन $\frac{२३}{११}$	र. अहोरात्र, कु. २३/११ से, वै. १०/५८ तक
२५	मं	१०	१३	०५	मू	२२	५८	६.१०	६.५७	९.२२	३.११	धन	र. और कु. २२/५८ तक, भ. २४/२८ से
२६	बु	११	११	४०	पू.षा.	२१	५९	६.११	६.५६	९.२२	३.११	म. $\frac{०३}{३८}$	भ. ११/४० तक, राज. ११/४० से २१/५९ तक
२७	गु	१२	०९	३२	उ.षा.	२०	२०	६.११	६.५५	९.२२	३.११	मकर	र. २०/२० से
२८	शु	$\frac{१३}{१४}$	$\frac{०६}{०३}$	$\frac{४८}{३६}$	श्र	१८	०८	६.१२	६.५४	९.२३	३.१०	कुंभ $\frac{०४}{५३}$	र. १८/०८ तक, भ. ०३/३६ से, राज. ०३/३६ से, पं. ०४/५३ से
२९	श	१५	२४	०६	ध	१५	३३	६.१३	६.५३	९.२३	३.१०	कुंभ	पं., भ. १३/५३ तक, रक्षा बंधन पक्सी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
३०	र	१	२०	२८	श	१२	४६	६.१३	६.५२	९.२३	३.१०	मीन ०४/३९	पं.
३१	सो	२	१६	५१	पू.भा.	०९	५७	६.१४	६.५१	९.२३	३.०९	मीन	पं., सूर्य पूर्वाफाल्गुनी में ०८/२५ से, भ. ०३/०७ से
१	मं	३	१३	२६	उ.भा. ३	०७/०४	११/५०	६.१४	६.५०	९.२३	३.०९	मेष ०४/५०	राज. और सि. ०७/१५ तक, भ. १३/२६ तक, पं. ०४/५० तक, अ. ०४/५० से (प्रवेशे वर्ज्य)
२	बु	४	१०	१९	अ	०२	५०	६.१४	६.४९	९.२३	३.०९	मेष	मृ. ०२/५० तक, कु. १०/१९ से ०२/५० तक, ज्वा. ०२/५० से
३	गु	५/६	०७/०५	३८/२९	भ	०१	२१	६.१५	६.४८	९.२३	३.०८	मेष	ज्वा. ०७/३८ तक, यम. ०१/२१ से, र. ०१/२१ से, भ. ०५/२९ से, व्या. १९/३९ से
४	शु	७	०३	५७	कृ	२४	२८	६.१५	६.४७	९.२३	३.०८	वृष ०७/०४	भ. १६/३९ तक, र. २४/२८ तक, यम. २४/२८ से, व्या. १७/०४ तक
५	श	८	०३	०४	रो	२४	१२	६.१५	६.४५	९.२३	३.०७	वृष	अ. २४/१२ तक (प्रयाणे वर्ज्य)
६	र	९	०२	५०	मृ	२४	३४	६.१६	६.४४	९.२३	३.०७	मि. १२/१८	
७	सो	१०	०३	१२	आ	०१	३४	६.१६	६.४३	९.२३	३.०७	मिथुन	भ. १४/५६ से ०३/१२ तक, कु. ०१/३४ से, व्य. १२/३० से
८	मं	११	०४	०९	पुन	०३	०६	६.१७	६.४२	९.२३	३.०६	कर्क २०/४०	कु. ०३/०६ तक, राज. ०४/०९ से, व्य. ११/५५ तक
९	बु	१२	०५	३७	पु	०५	०८	६.१७	६.४१	९.२३	३.०६	कर्क	राज. ०५/०८ तक, श्रीमज्जयाचार्य निर्वाण दिवस
१०	गु	१३	०	०	आ	०	०	६.१८	६.४०	९.२३	३.०५	कर्क	पर्युषण पर्व प्रारंभ
११	शु	१३	०७	३०	आ	०७	३५	६.१८	६.३९	९.२३	३.०५	सिंह ०७/३५	मृ. ०७/३५ तक, भ. ०७/३० से २०/३५ तक
१२	श	१४	०९	४४	म	१०	२२	६.१८	६.३८	९.२३	३.०५	सिंह	पक्खी
१३	र	३०	१२	१३	पू.फा.	१३	२२	६.१८	६.३७	९.२३	३.०५	क. २०/०९	सूर्य उत्तराफाल्गुनी में ०२/१६ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१४	सो	१	१४	५०	उ.फा.	१६	३१	६.२०	६.३६	९.२४	३.०४	कन्या	
१५	मं	२	१७	२९	ह	१९	४०	६.२०	६.३५	९.२४	३.०४	कन्या	राज. १९/४० से
१६	बु	३	२०	०२	चि	२२	४४	६.२१	६.३४	९.२४	३.०३	तुला $\frac{०९}{१३}$	राज. २०/०२ तक, र. २२/४४ से
१७	गु	४	२२	२१	स्वा	०१	३२	६.२१	६.३३	९.२४	३.०३	तुला	भ. ०९/१४ से २२/२१ तक, सूर्य कन्या में १२/२१ से, र. ०१/३२ तक, वै. १८/२४ से, संवत्सरी
१८	शु	५	२४	१७	वि	०३	५८	६.२१	६.३२	९.२४	३.०३	वृ. $\frac{२१}{२४}$	कु. ०३/५८ तक, र. ०३/५८ से, वै. १८/५७ तक
१९	श	६	०१	४०	अ	०५	५१	६.२१	६.३१	९.२४	३.०२	वृश्चिक	र. ५/५१ तक, कालूगणी स्वर्गवास दिवस
२०	र	७	०२	२४	ज्ये	०	०	६.२२	६.२९	९.२४	३.०२	वृश्चिक	भ. ०२/२४ से
२१	सो	८	०२	२३	ज्ये	०७	०५	६.२२	६.२८	९.२४	३.०२	धन $\frac{०७}{०५}$	भ. १४/२९ तक
२२	मं	९	०१	३६	मू	०७	३४	६.२३	६.२७	९.२४	३.०१	धन	र. ०७/३४ से, विकास महोत्सव
२३	बु	१०	२४	०४	$\frac{पू.भा.}{उ.भा.}$	$\frac{०७}{०६}$	$\frac{१९}{१६}$	६.२३	६.२५	९.२४	३.००	म. $\frac{१३}{०७}$	र. ०६/१९ तक, कु. ०६/१९ से
२४	गु	११	२१	५०	श्र	०४	४०	६.२४	६.२३	९.२४	२.५९	मकर	भ. ११/०२ से २१/५० तक
२५	शु	१२	१९	०१	ध	०२	२६	६.२५	६.२२	९.२४	२.५९	कुंभ $\frac{१५}{३६}$	राज. १९/०१ तक, पं. १५/३६ से, र. ०२/२६ से
२६	श	१३	१५	४४	श	२३	४८	६.२५	६.२१	९.२४	२.५९	कुंभ	पं., र. २३/४८ तक, २१३वां भिक्षु चरमोत्सव दिवस
२७	र	१४	१२	०७	पू.भा.	२०	५५	६.२६	६.२०	९.२४	२.५८	मीन $\frac{१५}{३९}$	पं., भ. १२/०७ से २२/१५ तक, सूर्य हस्त में १७/४६ से, र. १७/४६ से २०/५५ तक, राज. २०/५५ से, पक्खी
२८	सो	$\frac{१५}{१}$	$\frac{०८}{०४}$	$\frac{२२}{३६}$	उ.भा.	१७	५६	६.२६	६.१९	९.२४	२.५८	मीन	पं., चंद्रग्रहण

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२९	मं	२	०१	०१	रे	१५	०२	६.२६	६.१८	९.२४	२.५८	मेष $\frac{१५}{०२}$	पं. १५/०२ तक, अ. १५/०२ से (प्रवेशे वर्ज्य), व्या. १२/१७ से
३०	बु	३	२१	४५	अ	१२	२३	६.२७	६.१७	९.२४	२.५८	मेष	मृ. १२/२३ तक, भ. १०/२० से २१/४५ तक, रौज. १२/२३ से २१/४५ तक, व्या. ०८/१६ तक
१	गु	४	१८	५८	भ	१०	१०	६.२७	६.१६	९.२४	२.५७	वृष $\frac{१५}{४१}$	यम. १०/१० से
२	शु	५	१६	४८	कृ	०८	२९	६.२८	६.१५	९.२५	२.५७	वृष	कु. और यम. ०८/२९ से, व्य. २२/३७ से
३	श	६	१५	२१	रो	०७	२९	६.२९	६.१३	९.२५	२.५६	मि. $\frac{१९}{१६}$	अ. ०७/२९ तक (प्रयाणे वर्ज्य), र. ०७/२९ से, भ. १५/२१ से ०२/५५ तक, व्य. २०/२७ तक
४	र	७	१४	४१	मृ	०७	१४	६.२९	६.१२	९.२५	२.५६	मिथुन	राज. ०७/४१ तक, र. ०७/४१ तक
५	सो	८	१४	४८	आ	०७	४६	६.२९	६.११	९.२५	२.५५	कर्क $\frac{०२}{४०}$	
६	मं	९	१५	४०	पुन	०९	०३	६.३०	६.१०	९.२५	२.५५	कर्क	भ. ०४/२१ से
७	बु	१०	१७	११	पु	११	००	६.३०	६.०९	९.२५	२.५५	कर्क	ज्वा. ११/०० से १७/११ तक, भ. १७/११ तक
८	गु	११	१९	१५	आ	१३	२८	६.३०	६.०८	९.२५	२.५४	सिंह $\frac{१३}{२८}$	
९	शु	१२	२१	४१	म	१६	२०	६.३१	६.०७	९.२५	२.५४	सिंह	राज. १६/२० से २१/४१ तक, सि. १६/२० से
१०	श	१३	२४	१८	पू.फा.	१९	२५	६.३१	६.०६	९.२५	२.५४	क. $\frac{०२}{१३}$	भ. २४/१८ से
११	र	१४	०३	००	उ.फा.	२२	३५	६.३२	६.०५	९.२५	२.५३	कन्या	सूर्य चित्रा में ०६/४७ से, भ. १३/३९ तक, अ. २२/३५ से
१२	सो	३०	०५	३७	ह	०१	४२	६.३२	६.०४	९.२५	२.५३	कन्या	वै. २२/२४ से पक्षवी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१३	मं	१	०	०	वि	०४	३९	६.३३	६.०३	९.२५	२.५२	तुला $\frac{१५}{१२}$	वै.२३/१७ तक
१४	बु	१	०८	०३	स्वा	०	०	६.३३	६.०२	९.२५	२.५२	तुला	
१५	गु	२	१०	१३	स्वा	०७	२१	६.३४	६.०१	९.२६	२.५२	वृ. $\frac{०३}{११}$	
१६	शु	३	१२	०१	वि	०९	४४	६.३५	५.५९	९.२६	२.५१	वृश्चिक	र.०९/४४ से, राज.०९/४४ से १२/०१ तक, भ.२४/४७ से
१७	श	४	१३	२५	अ	११	४२	६.३५	५.५८	९.२६	२.५०	वृश्चिक	र. ११/४२ तक, भ. १३/२५ तक, सूर्य तुला में २४/१७ से
१८	र	५	१४	१९	ज्ये	१३	१३	६.३६	५.५७	९.२६	२.५०	धन $\frac{१३}{१३}$	र. १३/१३ से, सि. १३/१३ से
१९	सो	६	१४	३९	मू	१४	११	६.३७	५.५६	९.२७	२.४९	धन	कु. १४/११ तक, र. १४/११ तक
२०	मं	७	१४	२३	पू.षा.	१४	३४	६.३७	५.५५	९.२७	२.४९	म. $\frac{२०}{३४}$	राज. १४/२३ तक, भ. १४/२३ से ०२/०१ तक
२१	बु	८	१३	३०	उ.षा	१४	२०	६.३८	५.५४	९.२७	२.४९	मकर	र. १४/२० से
२२	गु	९	११	५८	श्र	१३	२९	६.३८	५.५३	९.२७	२.४९	कुंभ $\frac{२४}{५०}$	र. अहोरात्र, पं. २४/५० से
२३	शु	१०	०९	५२	ध	१२	०२	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	कुंभ	पं., र. १२/०२ तक, भ. २०/३६ से
२४	श	$\frac{११}{१२}$	$\frac{०७}{०४}$	$\frac{१४}{०९}$	श	१०	०५	६.३९	५.५२	९.२७	२.४८	मीन $\frac{०२}{२०}$	पं., भ. ०७/१४ तक, सूर्य स्वाति में १७/१४ से, गाजबीज की अस्वाध्याय प्रारम्भ
२५	र	१३	२४	४५	$\frac{पू.भा.}{उ.भा.}$	$\frac{०७}{०५}$	$\frac{४३}{०३}$	६.४०	५.५१	९.२८	२.४८	मीन	पं., र. ०५/०३ से, व्या. ०६/४९ से ०२/४९ तक
२६	सो	१४	२१	११	रे	०२	१४	६.४१	५.५१	९.२८	२.४७	मेष $\frac{०२}{१४}$	भ. २१/११ से, पं. और र. ०२/१४ तक
२७	मं	१५	१७	३६	अ	२३	२७	६.४१	५.४९	९.२८	२.४७	मेष	अ. २३/२७ तक (प्रवेशे वर्ज्य), भ. ०७/२३ तक, कु. १७/३६ से २३/२७ तक, पक्षी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२८	बु	१	१४	११	भ	२०	५२	६.४२	५.४८	९.२८	२.४६	वृष $\frac{०२}{१६}$	राज. १४/११ से २०/५२ तक, सि. २०/५२ से, व्य. १४/३७ से
२९	गु	२	११	०५	कृ	१८	३९	६.४३	५.४८	९.२९	२.४६	वृष	यम. १८/३९ तक, भ. २१/४२ से, व्य. १०/५३ तक
३०	शु	$\frac{३}{४}$	$\frac{०८}{०६}$	$\frac{२७}{२७}$	रो	१६	५८	६.४४	५.४७	९.३०	२.४६	मि. $\frac{०४}{२३}$	यम. १६/५८ तक, भ. ०८/२७ तक
३१	श	५	०५	१४	मृ	१५	५९	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	मिथुन	
१	र	६	०४	५२	आ	१५	४८	६.४५	५.४६	९.३०	२.४५	मिथुन	र. १५/४८ से, भ. ०४/५२ से
२	सो	७	०५	२२	पुन	१६	२६	६.४५	५.४५	९.३०	२.४५	कर्क $\frac{१०}{१३}$	र. १६/२६ तक, भ. १७/०१ तक
३	मं	८	०६	४०	पु	१७	५४	६.४६	५.४४	९.३०	२.४४	कर्क	
४	बु	९	०	०	आ	२०	०५	६.४६	५.४३	९.३०	२.४४	सिंह $\frac{२०}{०५}$	
५	गु	९	०८	३९	म	२२	४९	६.४७	५.४३	९.३१	२.४४	सिंह	भ. २१/५० से
६	शु	१०	११	०६	पू.फा.	०१	५३	६.४८	५.४२	९.३२	२.४३	सिंह	सि. ०१/५३ तक, भ. ११/०६ तक, सूर्य विशाखा में ०१/२६ से, वै. ०१/५२ से
७	श	११	१३	४९	उ.फा.	०५	०४	६.४९	५.४१	९.३२	२.४३	क. $\frac{०८}{४०}$	यम. और मृ. ०५/०४ से, वै. ०२/५४ तक
८	र	१२	१६	३३	ह	०	०	६.५०	५.४०	९.३३	२.४२	कन्या	अ. अहोरात्र
९	सो	१३	१९	०७	ह	०८	११	६.५१	५.४०	९.३३	२.४२	तुला $\frac{२१}{३९}$	भ. १९/०७ से, धन तेरस
१०	मं	१४	२१	२४	चि	११	०३	६.५१	५.३९	९.३३	२.४२	तुला	भ. ०८/१८ तक
११	बु	३०	२३	१८	स्वा	१३	३५	६.५२	५.३९	९.३४	२.४२	तुला	कु. २३/१८ से, दीपावली, महावीर निर्वाण दिवस पक्षी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१२	गु	१	२४	४६	वि	१५	४३	६.५३	५.३९	९.३४	२.४१	वृ. ०९/१३	श्री वीर निर्वाण सं. २५४२
१३	शु	२	०१	४८	अ	१७	२७	६.५३	५.३८	९.३४	२.४१	वृश्चिक	राज. १७/२७ तक, आचार्यश्री तुलसी का १०२वां जन्म दिवस (अणुव्रत दिवस)
१४	श	३	०२	२५	ज्ये	१८	४५	६.५४	५.३७	९.३५	२.४१	धन १८/४५	र. १८/४५ से
१५	र	४	०२	३७	मू.	१९	३९	६.५५	५.३७	९.३६	२.४०	धन	सि. १९/३९ तक, भ. १४/३४ से ०२/३७ तक, र. १९/३९ तक
१६	सो	५	०२	२३	पू.षा.	२०	०९	६.५६	५.३६	९.३६	२.४०	म. ०२/१३	र. २०/०९ से, मृ. २०/०९ से, सूर्य वृश्चिक में २४/०५ से
१७	मं	६	०१	४४	उ.षा.	२०	१४	६.५६	५.३५	९.३६	२.४०	मकर	र. २०/१४ तक, कु. २०/१४ से ०१/४४ तक
१८	बु	७	२४	४०	श्र	१९	५५	६.५७	५.३४	९.३६	२.३९	मकर	राज. १९/५५ से २४/४० तक, भ. २४/४० से
१९	गु	८	२३	०९	ध	१९	०९	६.५८	५.३४	९.३७	२.३९	कुंभ ०७/३५	पं. ०७/३५ से, भ. ११/५८ तक, र. १९/०९ से, व्या. २०/०० से
२०	शु	९	२१	१३	श	१७	५९	६.५९	५.३४	९.३८	२.३९	कुंभ	पं., सूर्य अनुराधा में ०७/२४ से, र. ०७/२४ तक, पुनः र. १७/५९ से, कु. २१/१३ से, व्या. १७/१७ तक
२१	श	१०	१८	५४	पू.भा.	१६	२५	७.००	५.३४	९.३९	२.३८	मीन १०/५०	पं., र. अहोरात्र, भ. ०५/३६ से
२२	र	११	१६	१४	उ.भा.	१४	२९	७.०१	५.३४	९.३९	२.३८	मीन	पं., र. १४/२९ तक, भ. १६/१४ तक
२३	सो	१२	१३	१८	रे	१२	१९	७.०२	५.३४	९.४०	२.३८	मेष १२/१९	पं. १२/१९ तक, व्या. ०७/२४ से ०३/४१ तक
२४	मं	१३	१०	१५	अ	०९	५९	७.०३	५.३४	९.४१	२.३८	मेष	अ. ०९/५९ तक (प्रवेशे वर्ज्य), र. ०९/५९ से
२५	बु	१४/१५	०७/०४	११/१६	भ/कृ	०७/०५	३९/२८	७.०४	५.३४	९.४१	२.३७	वृष १२/०६	राज. ०७/११ से ०७/३९ तक, र. ०७/३९ तक, भ. ०७/११ से १७/४१ तक, सि. ०७/३९ से ०५/२८ तक, कु. ०५/२८ से, चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२६	गु	१	०१	४०	रो	०३	३७	७.०५	५.३३	९.४२	२.३७	वृष	मृ. ०३/३७ से
२७	शु	२	२३	३३	मृ	०२	१६	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	मि. $\frac{१४}{५३}$	राज. ०२/१६ तक
२८	श	३	२२	०४	आ	०१	३२	७.०६	५.३३	९.४३	२.३७	मिथुन	भ. १०/४३ से २२/०४ तक
२९	र	४	२१	२०	पुन	०१	३४	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	कर्क $\frac{३९}{२९}$	
३०	सो	५	२१	२७	पु	०२	२५	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	कर्क	र. ०२/२५ से
१	मं	६	२२	२४	आ	०४	०३	७.०७	५.३३	९.४४	२.३६	सिंह $\frac{०४}{०३}$	भ. २२/२४ से, र. ०४/०३ तक, वै. ०६/२९ से
२	बु	७	२४	०७	म	०६	२४	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	सिंह	भ. ११/१० तक, वै. ०६/४९ तक
३	गु	८	०२	२५	पू.फा.	०	०	७.०८	५.३३	९.४४	२.३६	सिंह	सूर्य ज्येष्ठा में ११/४७ से
४	शु	९	०५	०५	पू.फा.	०९	१६	७.०९	५.३४	९.४५	२.३६	क. $\frac{११}{०२}$	सि. ०९/१६ तक
५	श	१०	०	०	उ.फा.	१२	२३	७.१०	५.३४	९.४६	२.३६	कन्या	यम. और मृ. १२/२३ से, भ. १८/२८ से, भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक दिवस
६	र	१०	०७	४९	ह	१५	३२	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	तुला $\frac{०५}{०२}$	अ. १५/३२ तक, भ. ०७/४९ तक
७	सो	११	१०	२४	चि	१८	२६	७.११	५.३४	९.४७	२.३६	तुला	
८	मं	१२	१२	३५	स्वा	२०	५६	७.१२	५.३४	९.४८	२.३५	तुला	
९	बु	१३	१४	१७	वि	२२	५६	७.१३	५.३४	९.४८	२.३५	वृ. $\frac{१५}{३०}$	भ. १४/१७ से ०२/५५ तक, अ. २२/५६ से
१०	गु	१४	१५	२५	अ	२४	२४	७.१४	५.३४	९.४९	२.३५	वृश्चिक	पक्खी
११	शु	३०	१६	००	ज्ये	०१	२१	७.१५	५.३४	९.५०	२.३५	धन $\frac{०१}{२१}$	ज्वा. ०१/२१ से, कु. ०१/२१ से

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१२	श	१	१६	०५	मू	०१	५१	७.१६	५.३५	९.५०	२.३५	धन	ज्वा. १६/०५ तक
१३	र	२	१५	४४	पू.षा.	०१	५७	७.१६	५.३५	९.५१	२.३५	धन	राज. ०१/५७ तक, र. ०१/५७ से
१४	सो	३	१५	०२	उ.षा.	०१	४४	७.१७	५.३५	९.५२	२.३४	म. ०७/५६	मृ. ०१/४४ तक, र. ०१/४४ तक, सि. ०१/४४ से, भ. ०२/३४ से, व्या. ०४/२१ से
१५	मं	४	१४	०२	श्र	०१	१६	७.१८	५.३५	९.५२	२.३४	मकर	भ. १४/०२ तक, कृ. १४/०२ से ०१/१६ तक, र. ०१/१६ से, व्या. ०२/११ तक
१६	बु	५	१२	४७	ध	२४	३३	७.१८	५.३६	९.५२	२.३४	कुंभ १२/५६	पं. १२/५६ से, सूर्य मूल और धनु में १४/४३ से, र. १४/४३ तक पुनः २४/३३ से
१७	गु	६	११	२०	श	२३	३९	७.१९	५.३६	९.५३	२.३४	कुंभ	पं., र. २३/३९ तक, मलमास प्रारम्भ
१८	शु	७	०९	४०	पू.भा.	२२	३२	७.१९	५.३७	९.५४	२.३४	मीन १५/५०	पं., भ. ०९/४० से २०/४५ तक, व्य. १८/४७ से
१९	श	८/९	०७/०५	४८/४५	उ.भा.	२१	१४	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	मीन	पं., र. २१/१४ से, व्य. १५/५८ तक
२०	र	१०	०३	३२	रे	१९	४६	७.२०	५.३७	९.५४	२.३४	मेष १९/४६	पं. १९/४६ तक, र. अहोरात्र
२१	सो	११	०१	१३	अ	१८	१०	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	मेष	कृ. १८/१० तक, भ. १४/२३ से ०१/१३ तक, र. १८/१० तक
२२	मं	१२	२२	५२	भ	१६	३१	७.२१	५.३८	९.५५	२.३४	वृष २२/०६	राज. १६/३१ तक
२३	बु	१३	२०	३५	कृ	१४	५४	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	वृष	सि. १४/५४ तक, र. १४/५४ से
२४	गु	१४	१८	२९	रो	१३	२६	७.२२	५.३९	९.५६	२.३४	मि. २४/४८	र. १३/२६ तक, मृ. १३/२६ से, भ. १८/२९ से ०५/३३ तक
२५	शु	१५	१६	४३	मृ	१२	१६	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	मिथुन	राज. १२/१६ तक, पक्षी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२६	श	१	१५	२६	आ	११	३२	७.२३	५.४०	९.५७	२.३४	कर्क $\frac{०५}{१९}$	
२७	र	२	१४	४४	पुन	११	२१	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	कर्क	राज. ११/२१ से, भ. ०२/३९ से, वै. १५/१२ से
२८	सो	३	१४	४५	पु	११	५१	७.२४	५.४१	९.५८	२.३४	कर्क	भ. १४/४५ तक, वै. १४/०० तक
२९	मं	४	१५	३१	आ	१३	०५	७.२५	५.४२	९.५९	२.३४	सिंह $\frac{१३}{०५}$	कु. १५/३१ से, सूर्य पूर्वाषाढ़ा में १७/०१ से
३०	बु	५	१७	००	म	१५	००	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	सिंह	कु. १५/०० तक
३१	गु	६	१९	०७	पू.फा.	१७	३१	७.२५	५.४३	१०.००	२.३४	क. $\frac{२४}{१४}$	र. १७/३१ से, भ. १९/०७ से
१	शु	७	२१	४०	उ.फा.	२०	२९	७.२५	५.४४	१०.००	२.३५	कन्या	भ. ०८/२२ तक, र. २०/२९ तक
२	श	८	२४	२३	ह	२३	३६	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	कन्या	यम. और मृ. २३/३६ तक
३	र	९	०३	००	चि	०२	३७	७.२६	५.४५	१०.०१	२.३५	तुला $\frac{१३}{०८}$	
४	सो	१०	०५	१४	स्वा	०५	१८	७.२७	५.४६	१०.०२	२.३५	तुला	भ. १६/११ से ०५/१४ तक, कु. ०५/१८ से, यम. ०५/१८ से, पार्श्वनाथ जयंती
५	मं	११	०६	५५	वि	०	०	७.२७	५.४७	१०.०२	२.३५	वृ. $\frac{२४}{५८}$	कु. ०६/५५ तक
६	बु	१२	०	०	वि	०७	२७	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	वृश्चिक	राज. और अ. ०७/२७ से
७	गु	१२	०७	५५	अ	०८	५७	७.२७	५.४८	१०.०२	२.३५	वृश्चिक	
८	शु	१३	०८	१४	ज्ये	०९	४७	७.२७	५.४९	१०.०२	२.३५	धन $\frac{०९}{४७}$	भ. ०८/१४ से २०/०९ तक
९	श	$\frac{१४}{३०}$	$\frac{०७}{०८}$	$\frac{५४}{०१}$	मू	१०	०१	७.२७	५.५०	१०.०३	२.३६	धन	व्या. १४/०४ से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१०	र	१	०५	४१	पू.षा.	०९	४२	७.२७	५.५१	१०.०३	२.३६	म. १५/३३	व्या. १२/०१ तक
११	सो	२	०४	०१	उ.षा.	०८	५८	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	मकर	मृ. ०८/५८ तक, सि. ०८/५८ से, सूर्य उत्तराषाढ़ा में १८/५८ से
१२	मं	३	०२	०७	श्र / ध	०७ / ०६	५५ / ४१	७.२७	५.५२	१०.०३	२.३६	कुंभ १९/१९	राज. ०७/५५ से ०२/०७ तक, पं. १९/१९ से, र. ०६/४१ से, मृ. ०६/४१ से, व्या. ०४/१७ से
१३	बु	४	२४	०६	श	०५	२०	७.२७	५.५३	१०.०३	२.३६	कुंभ	पं., भ. १३/०७ से २४/०६ तक, र. ०५/२० तक, कु. ०५/२० से, व्या. ०१/२४ तक
१४	गु	५	२२	०२	पू.भा.	०३	५६	७.२७	५.५४	१०.०४	२.३७	मीन २२/१७	पं., सूर्य मकर में ०१/१७ से, र. ०३/५६ से, मलमास समाप्त
१५	शु	६	१९	५९	उ.भा.	०२	३४	७.२७	५.५५	१०.०४	२.३७	मीन	पं., राज. १९/५९ से ०२/३४ तक, र. ०२/३४ तक, अ. ०२/३४ से
१६	श	७	१७	५७	रे	०१	१४	७.२७	५.५६	१०.०४	२.३७	मेष ०१/१४	भ. १७/५७ से ०४/५७ तक, पं. ०१/१४ तक
१७	र	८	१५	५९	अ	२३	५९	७.२७	५.५७	१०.०५	२.३८	मेष	र. २३/५९ से
१८	सो	९	१४	०७	भ	२२	४९	७.२७	५.५८	१०.०५	२.३८	वृष ०४/३२	र. अहोरात्र
१९	मं	१०	१२	२१	कृ	२१	४७	७.२७	५.५९	१०.०५	२.३८	वृष	र. २१/४७ तक, कु. २१/४७ से, भ. २३/३२ से
२०	बु	११	१०	४५	रो	२०	५६	७.२६	५.५९	१०.०५	२.३८	वृष	भ. और कु. १०/४५ तक, राज. २०/५६ से
२१	गु	१२	०९	२२	मृ	२०	१९	७.२५	६.००	१०.०४	२.३९	मि. ०८/३५	मृ. २०/१९ तक, र. २०/१९ से, वै. ०१/२५ से
२२	शु	१३	०८	१६	आ	२०	०१	७.२४	६.००	१०.०३	२.३९	मिथुन	र. २०/०१ तक, वै. २३/३० तक
२३	श	१४ / १५	०७ / २१	३३ / १५	पुन	२०	०९	७.२४	६.०१	१०.०३	२.३९	कर्क १४/०४	भ. ०७/३३ से १९/२१ तक, पलटी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२४	र	१	०	०	पु	२०	४६	७.२४	६.०२	१०.०३	२.३९	कर्क	राज. ०७/१७ तक, सूर्य श्रवण में २१/१६ से
२५	सो	१	०७	३५	आ	२१	५६	७.२४	६.०३	१०.०३	२.४०	सिंह $\frac{२१}{५६}$	
२६	मं	२	०८	२८	म	२३	४१	७.२३	६.०३	१०.०३	२.४१	सिंह	भ. २१/०८ से, राज. २३/४१ से, गणतंत्र दिवस
२७	बु	३	०९	५७	पू.फा.	०१	५९	७.२२	६.०४	१०.०३	२.४१	सिंह	भ. और राज. ०९/५७ तक
२८	गु	४	११	५९	उ.फा.	०४	४४	७.२२	६.०५	१०.०३	२.४१	क. $\frac{०८}{३८}$	
२९	शु	५	१४	२६	ह	०	०	७.२२	६.०६	१०.०३	२.४१	कन्या	कु. अहोरात्र
३०	श	६	१७	०६	ह	०७	४७	७.२२	६.०७	१०.०३	२.४१	तुला $\frac{२१}{२०}$	मृ. और यम. ०७/४७ तक, र. ०७/४७ से, भ. १७/०६ से ०६/२७ तक
३१	र	७	१९	४५	चि	१०	५२	७.२२	६.०८	१०.०३	२.४१	तुला	राज. १०/५२ तक, र. १०/५२ तक
१	सो	८	२२	०६	स्वा	१३	४७	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	तुला	यम. १३/४७ से
२	मं	९	२३	५७	वि	१६	१६	७.२२	६.०९	१०.०३	२.४२	वृ. $\frac{०९}{४२}$	
३	बु	१०	०१	०६	अ	१८	०९	७.२१	६.१०	१०.०३	२.४२	वृश्चिक	अ. १८/०९ तक, भ. १२/३७ से ०१/०६ तक, व्या. २४/०० से
४	गु	११	०१	३०	ज्ये	१९	१९	७.२१	६.११	१०.०३	२.४२	धन $\frac{११}{१९}$	व्या. २३/१० तक
५	शु	१२	०१	०८	मू	१९	४३	७.२०	६.१२	१०.०३	२.४३	धन	राज. १९/४३ से ०१/०८ तक
६	श	१३	२४	०३	पू.षा.	१९	२५	७.१९	६.१३	१०.०३	२.४४	म. $\frac{०१}{१४}$	भ. २४/०३ से, सूर्य धनिष्ठा में २४/२६ से
७	र	१४	२२	२१	उ.षा.	१८	३०	७.१९	६.१४	१०.०३	२.४४	मकर	भ. ११/१६ तक, व्य. १७/१८ से पक्षवी
८	सो	३०	२०	१०	श्र	१७	०४	७.१८	६.१५	१०.०२	२.४४	कुंभ $\frac{०४}{१३}$	सि. १७/०४ तक, पं. ०४/१३ से, व्य. १४/२२ तक

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
९	मं	१	१७	३८	ध	१५	१७	७.१७	६.१६	१०.०२	२.४५	कुंभ	पं., मृ. १५/१७ से
१०	बु	२	१४	५३	श	१३	१६	७.१६	६.१७	१०.०१	२.४५	मीन ०५/४२	पं.,
११	गु	३	१२	०४	पू.भा.	११	११	७.१५	६.१७	१०.००	२.४६	मीन	पं., र. ११/११ से, भ. २२/४१ से
१२	शु	४/५	०९/०६	११/४१	उ.भा.	०९	०८	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	मीन	पं., र. ०९/०८ तक, अ. ०९/०८ से, भ. ०९/१९ तक, वसंत पंचमी
१३	श	६	०४	१८	१/अ	०९/०५	१४/३४	७.१४	६.१८	१०.००	२.४६	मेष ०७/१४	पं. ०७/१४ तक, र. ०७/१४ से ०५/३४ तक, सूर्य कुंभ में १४/२६ से
१४	र	७	०२	१३	भ	०४	१२	७.१३	६.१९	९.५९	२.४७	मेष	राज. ०२/१३ तक, भ. ०२/१३ से, ज्वा. ०४/१२ से, १५५वां मर्यादा महोत्सव
१५	सो	८	२४	२९	कृ	०३	१०	७.१२	६.२०	९.५९	२.४७	वृष ०९/५५	भ. १३/१८ से, ज्वा. २४/२९ तक, पुनः ज्वा. ०३/१० से, र. ०३/१० से
१६	मं	९	२३	०७	रो	०२	३१	७.१२	६.२१	९.५९	२.४७	वृष	र. अहोरात्र, ज्वा. २३/०७ तक, कु. २३/०७ से ०२/२१ तक, वै. ०९/५२ से
१७	बु	१०	२२	०९	मृ	०२	१६	७.११	६.२१	९.५९	२.४८	मि. १४/२१	र. ०२/१६ तक, वै. ०७/४० तक
१८	गु	११	२१	३५	आ	०२	२५	७.१०	६.२२	९.५८	२.४८	मिथुन	भ. ०९/४९ से २१/३५ तक, सि. ०२/२५ से
१९	शु	१२	२१	२९	पुन	०३	००	७.१०	६.२३	९.५८	२.४८	कर्क २०/४९	र. ०३/०० से ०४/५४ तक, सूर्य शतभिषा में ०४/५४ से
२०	श	१३	२१	४९	पु	०४	०१	७.०९	६.२३	९.५७	२.४८	कर्क	र.०४/०१से
२१	र	१४	२२	३६	आ	०५	२९	७.०८	६.२४	९.५७	२.४९	सिंह ०५/२९	भ.२२/३६से,र.०५/२९तक, यम.०५/२९से
२२	सो	१५	२३	५२	म	०	०	७.०७	६.२४	९.५६	२.४९	सिंह	भ.११/११तक, कु.२३/५२से पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घ. मि.	सूर्यास्त घ. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२३	मं	१	०१	३४	म	०७	२४	७.०६	६.२५	९.५६	२.५०	सिंह	कु. ०७/२४ तक, राज. ०१/३४ से
२४	बु	२	०३	४१	पू.फा.	०९	४४	७.०५	६.२५	९.५५	२.५०	क. ११/२२	राज. ०९/४४ तक
२५	गु	३	०६	०६	उ.फा.	१२	२५	७.०४	६.२६	९.५४	२.५१	कन्या	भ. १६/०१ से ०६/०६ तक
२६	शु	४	०	०	ह	१५	२३	७.०३	६.२७	९.५४	२.५२	तुला ०४/५५	
२७	श	४	०८	४४	चि	१८	२९	७.०२	६.२७	९.५३	२.५२	तुला	सि. १८/२९ से
२८	र	५	११	२२	स्वा	२१	३१	७.०१	६.२८	९.५३	२.५२	तुला	र. २१/३१ से, व्या. ०६/०४ से
२९	सो	६	१३	४९	वि	२४	१८	७.००	६.२८	६.५२	६.५२	वृ. १०/३९	कु. १३/४९ तक, यम. २४/१८ तक, भ. १३/४९ से ०२/५४ तक, र. २४/१८ तक, व्या. ०६/४० तक
१	मं	७	१५	५२	अ	०२	३८	६.५९	६.२९	९.५२	२.५३	वृश्चिक	राज. १५/५२ तक
२	बु	८	१७	२१	ज्ये	०४	२१	६.५८	६.३०	९.५१	२.५३	धन ०४/२१	यम. ०४/२१ से
३	गु	९	१८	०६	मू	०५	२१	६.५७	६.३०	९.५०	२.५३	धन	भ. ०६/१० से, व्य. ०५/४७ से
४	शु	१०	१८	०३	पू.षा.	०५	३३	६.५६	६.३०	९.५०	२.५३	धन	सूर्य पूर्वाभाद्रपद में ११/१६ से, भ. १८/०३ तक, व्य. ०४/१६ तक
५	श	११	१७	१३	उ.षा.	०४	५९	६.५५	६.३१	९.४९	२.५४	म. ११/२७	
६	र	१२	१५	३६	श्र	०३	४३	६.५४	६.३१	९.४८	२.५४	मकर	
७	सो	१३	१३	२१	ध	०१	५३	६.५३	६.३२	९.४८	२.५५	कुंभ १४/५२	भ. १३/२१ से २४/०१ तक, पं. १४/५२ से
८	मं	१४	१०	३४	श	२३	३६	६.५२	६.३३	९.४७	२.५५	कुंभ	पं., मृ. २३/३६ तक पचकी
९	बु	३०/१	०७/०४	२५/०२	पू.भा.	२१	०३	६.५१	६.३४	९.४७	२.५६	मीन १५/४३	पं., कु. ०७/२५ से २१/०३ तक, राज. ०४/०२ से, सूर्य ग्रहण

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
१०	गु	२	२४	३५	उ.भा.	१८	२२	६.५०	६.३४	९.४६	२.५६	मीन	पं.
११	शु	३	२१	१३	रे	१५	४३	६.४९	६.३४	९.४५	२.५६	मेष $\frac{१५}{४३}$	अ. १५/४३ तक, पं. १५/४३ तक, र. १५/४३ से
१२	श	४	१८	०५	अ	१३	१६	६.४८	६.३५	९.४५	२.५७	मेष	भ. ०७/३७ से १८/०५ तक, र. १३/१६ तक, ज्वा. १८/०५ से, वै. २१/१९ से
१३	र	५	१५	१८	भ	११	०९	६.४७	६.३५	९.४४	२.५७	वृष $\frac{१५}{४१}$	ज्वा. ११/०९ तक, र. ११/०९ से, वै. १७/५३ तक
१४	सो	६	१३	००	कृ	०९	२९	६.४६	६.३६	९.४४	२.५७	वृष	र. ०९/२९ तक, कृ. ०९/२९ से १३/०० तक, सूर्य मीन में ११/१९ से, मलमास आरम्भ
१५	मं	७	११	१४	रो	०८	२१	६.४५	६.३७	९.४३	२.५८	मि. $\frac{२०}{००}$	राज. ०८/२१ से ११/१४ तक, भ. ११/१४ से २२/३५ तक
१६	बु	८	१०	०६	मृ	०७	४९	६.४४	६.३८	९.४२	२.५९	मिथुन	र. ०७/४९ से
१७	गु	९	०९	३४	आ	०७	५४	६.४३	६.३९	९.४२	२.५९	कर्क $\frac{०२}{२१}$	र. अहोरात्र, सि. ०७/५४ से, सूर्य उत्तराभाद्रपद में १९/३८ से
१८	शु	१०	०९	४१	पुन	०८	३५	६.४२	६.३९	९.४१	२.५९	कर्क	र. अहोरात्र, कृ. ०८/३५ तक, भ. २१/५७ से
१९	श	११	१०	२२	पु	०९	५१	६.४१	६.३९	९.४०	२.५९	कर्क	र. ०९/५१ तक, भ. १०/२२ तक
२०	र	१२	११	३४	आ	११	३६	६.४०	६.३९	९.४०	३.००	सिंह $\frac{११}{३६}$	यम. ११/३६ से
२१	सो	१३	१३	१३	म	१३	४८	६.३९	६.४०	९.३९	३.००	सिंह	र. १३/४८ से
२२	मं	१४	१५	१४	पू.फा.	१६	२०	६.३८	६.४१	९.३९	३.०१	क. $\frac{२३}{०१}$	भ. १५/१४ से ०४/२१ तक, राज. १५/१४ से १६/२० तक, र. १६/२० तक
२३	बु	१५	१७	३२	उ.फा.	१९	०८	६.३६	६.४१	९.३७	३.०१	कन्या	कृ. १९/०८ से, होलिका, चंद्रग्रहण, चातुर्मासिक पक्खी

दिनांक	वार	तिथि	बजे	मिनट	नक्षत्र	बजे	मिनट	सूर्योदय घं. मि.	सूर्यास्त घं. मि.	प्र.प्रहर घं. मि.	प्र. अ. घं. मि.	चन्द्रमा	विशेष विवरण
२४	गु	१	२०	०२	ह	२२	०७	६.३५	६.४२	९.३७	३.०२	कन्या	धुलेटी
२५	शु	२	२२	३६	चि	०१	११	६.३३	६.४३	९.३६	३.०३	तुला ११/३१	राज. ०१/११ तक, व्या. ०९/५४ से
२६	श	३	०१	१०	स्वा	०४	१४	६.३२	६.४३	९.३५	३.०३	तुला	सि. ०४/१४ तक, भ. ११/५४ से ०१/१० तक, व्या. १०/५२ तक
२७	र	४	०३	३५	वि	०	०	६.३१	६.४४	९.३४	३.०३	वृ. २४/२४	
२८	सो	५	०५	४२	वि	०७	०६	६.३०	६.४४	९.३४	३.०३	वृश्चिक	कृ. और यम. ०७/०६ तक
२९	मं	६	०	०	अ	०९	४१	६.२९	६.४५	९.३३	३.०४	वृश्चिक	र. ०९/४१ से, व्य. १३/०५ से
३०	बु	६	०७	२३	ज्ये	११	४९	६.२८	६.४५	९.३२	३.०४	धन ११/४९	भ. ०७/२३ से २०/०१ तक, र. ११/४९ तक, यम. ११/४९ से, सूर्य रेवती में ०६/३४ से र. ०६/३४ से, व्य. १३/१३ तक
३१	गु	७	०८	२९	मू	१३	२४	६.२७	६.४५	९.३१	३.०४	धन	र. १३/२४ तक
१	शु	८	०८	५४	पू.षा.	१४	१७	६.२६	६.४६	९.३१	३.०५	म. २०/२४	भगवान ऋषभ दीक्षा दिवस, वर्षीतप प्रारंभ
२	श	९	०८	३४	उ.षा.	१४	२६	६.२५	६.४६	९.३०	३.०५	मकर	भ. २०/०७ से
३	र	१०/११	०७/०५	२८/३१	श्र	१३	५०	६.२४	६.४६	९.२९	३.०५	कुंभ ०१/१५	भ. ०७/२८ तक, पं. ०१/१५ से, राज. ०५/३९ से
४	सो	१२	०३	०८	ध	१२	३१	६.२३	६.४७	९.२९	३.०६	कुंभ	पं.,
५	मं	१३	२४	०४	श	१०	३५	६.२२	६.४७	९.२८	३.०६	मीन ०२/४७	पं., मृ. १०/३५ तक, भ. २४/०४ से
६	बु	१४	२०	३७	पू.भा./उ.भा.	०८/०५	०९/२१	६.२१	६.४७	९.२७	३.०६	मीन	पं., भ. १०/२३ तक
७	गु	३०	१६	५५	रे	०२	२३	६.१९	६.४८	९.२६	३.०७	मेष ०२/३३	पं. ०२/२३ तक, वै. १४/५९ से पक्खी

		कोलकाता		दिल्ली		मुम्बई		चेन्नई		बैंगलोर		जोधपुर	
महीना		सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त
जनवरी	१	६.१७	५.०३	७.१४	५.३५	७.१२	६.१२	६.२९	५.५४	६.४२	६.०४	७.२८	५.५२
	१५	६.१९	५.१२	७.१५	५.४६	७.१५	६.२१	६.३४	६.०३	६.४६	६.१२	७.३१	६.०१
फरवरी	१	६.१६	५.२४	७.१०	६.००	७.१३	६.३१	६.३८	६.२१	६.४७	६.२१	७.२६	६.१५
	१५	६.०९	५.३२	७.००	६.११	७.०८	६.३८	६.३०	६.१६	६.४३	६.२५	७.२७	६.२५
मार्च	१	५.५८	५.४०	६.४७	६.२०	६.५८	६.४४	६.२४	६.१८	६.३६	६.२८	७.०५	६.३३
	१५	५.४६	५.४६	६.३२	६.२९	६.४८	६.४८	६.१६	६.२०	६.२७	६.३१	६.५१	६.४१
अप्रैल	१	५.३०	५.५२	६.१२	६.३९	६.३३	६.५२	६.०५	६.२१	६.१७	६.३१	६.३४	६.५०
	१५	५.१७	५.५७	५.५६	६.४७	६.२२	६.५६	५.५७	६.२२	६.०८	६.३२	६.१९	६.५६
मई	१	५.०४	६.०३	५.४१	६.५६	६.११	७.०२	५.४९	६.२४	५.५९	६.३५	६.०४	७.०५
	१५	४.५७	६.०९	५.३१	७.०४	६.०५	७.०६	५.४५	६.२८	५.५४	६.३८	५.५५	७.१२
जून	१	४.५२	६.१७	५.२४	७.१४	६.०१	७.१२	५.४३	६.३२	५.५२	६.४२	५.४९	७.२०
	१५	४.५२	६.२२	५.२३	७.२०	६.०१	७.१७	५.४५	६.३७	५.५३	६.४७	५.४८	७.२६
जुलाई	१	४.५५	६.२५	५.२७	७.२३	६.०५	७.२०	५.४८	६.३९	५.५८	६.५०	५.५१	७.२९
	१५	५.०१	६.२४	५.३३	७.२१	६.१०	७.१९	५.५२	६.३९	६.०१	६.५०	५.५८	७.२७
अगस्त	१	५.०८	६.१७	५.४२	७.१२	६.१६	७.१४	५.५५	६.३६	६.०५	६.४७	६.०५	७.२१
	१५	५.१३	६.०८	५.५०	७.०१	६.२०	७.०६	५.५८	६.२९	६.०८	६.४०	६.१३	७.१९
सितम्बर	१	५.१९	५.५४	५.५९	६.४३	६.२४	६.५३	५.५९	६.१९	६.०९	६.३१	६.१९	६.५५
	१५	५.२३	५.४०	६.०६	६.२६	६.२६	६.४१	५.५८	६.०९	६.०९	६.२१	६.२४	६.४०
अक्टूबर	१	५.२८	५.२४	६.१४	६.०७	६.२९	६.२७	५.५८	५.५८	६.१०	६.१०	६.३३	६.२२
	१५	५.३३	५.१२	६.२२	५.५२	६.३३	६.१६	५.५९	५.४९	६.११	६.०१	६.४०	६.०७
नवम्बर	१	५.४२	४.५९	६.३३	५.३६	६.३९	६.०५	६.०२	५.४२	६.१४	५.५४	६.४९	५.५३
	१५	५.४९	४.४३	६.४४	५.२७	६.४६	६.००	६.०७	५.३९	६.२०	५.५०	७.००	५.४४
दिसंबर	१	६.००	४.५१	६.५६	५.२४	६.५६	६.००	६.१३	५.४१	६.२६	५.५१	७.११	५.४२
	१५	६.०९	४.५४	७.०६	५.२६	७.०४	६.०४	६.२२	५.४६	६.३४	५.५६	७.२१	५.४३

नक्षत्र से राशि और नामाक्षर का ज्ञान

जिस दिन बालक का जन्म हो, उस समय का नक्षत्र पंचांग में देखें, फिर नक्षत्र के अनुसार नाम का अक्षर और राशि नीचे लिखी तालिका से जानें–

अक्षर	नक्षत्र	राशि	अक्षर	नक्षत्र	राशि
चू चे चो ला	अश्विनी	मेष	पे पो, रा री	चित्रा	कन्या-२, तुला-२
ली लू ले लो	भरणी	मेष	रू रे रो ता	स्वाति	तुला
आ, ई उ ए	कृतिका	मेष-१, वृष-३	ती तू ते, तो	विशाखा	तुला-३, वृश्चिक-१
ओ वा वी वू	रोहिणी	वृष	ना नी नू ने	अनुराधा	वृश्चिक
वे वो, क की	मृगशिरा	वृष-२, मिथुन-२	नो या यी यु	ज्येष्ठा	वृश्चिक
कु घ ङ छ	आर्द्रा	मिथुन	ये यो भा भी	मूल	धन
के को ह, ही	पुनर्वसु	मिथुन-३, कर्क-१	भू धा फा ढा	पूर्वाषाढ़ा	धन
हु हे हो डा	पुष्य	कर्क	भे, भो जा जी	उत्तराषाढ़ा	धन-१, मकर-३
डी डू ड डो	आश्लेषा	कर्क	खा खू खे खो	श्रवण	मकर
मा मी मू मे	मघा	सिंह	गा गी, गू गे	धनिष्ठा	मकर-२, कुम्भ-२
मो टा टी टू	पूर्वाफाल्गुनी	सिंह	गो सा सि सू	शतभिषा	कुम्भ
टे, टो प पी	उत्तराफाल्गुनी	सिंह-१, कन्या-३	से सो द, दि	पूर्वाभाद्रपद	कुम्भ-३, मीन-१
पू ष ण ठ	हस्त	कन्या	दू थ झ ञ	उत्तराभाद्रपद	मीन
			दे दो च ची	रेवती	मीन

राशि स्वामी–मेष और वृश्चिक का मंगल, वृषभ और तुला का शुक्र, मिथुन और कन्या का बुध, कर्क का चन्द्र, सिंह का सूर्य, धन और मीन का गुरु, मकर और कुंभ का स्वामी शनि होता है।

गुरु-दर्शन के लिए नक्षत्र

रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, श्रवण, अनुराधा तथा शुभ वार।

घात-चक्रम्

घात तिथि घातवारः घातनक्षत्रमेव च। यात्रायां वर्जये प्राज्ञैरन्य कर्मसुशोभनम्।।

राशि–	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास–	कार्तिक	मिगसर	आषाढ़	पोष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि–	१-६-११	५-१०-१५	१-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार–	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगल वार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र–	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात प्रहर–	१	४	३	१	१	१	१	१	१	४	३	४
पु. घात चंद्र	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धन	वृषभ	मीन	सिंह	धन	कुंभ
स्त्री घात चंद्र	मेष	धन	धन	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धन	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुंभ

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा घोषित आगामी चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव

चतुर्मास (वर्ष)	स्थान	मर्यादा महोत्सव (वर्ष)	स्थान
सन् २०१५	विराटनगर (नेपाल)	सन् २०१५	कानपुर (उत्तरप्रदेश)
सन् २०१६	गुवाहाटी (असम)	सन् २०१६	किशनगंज (बिहार)
सन् २०१७	कोलकाता (बंगाल)	सन् २०१७	सिलीगुड़ी (बंगाल)
		सन् २०१८	..... (ओड़िशा)

यात्रा में चंद्र विचार	यात्रा में योगिनी विचार

यात्रा में चंद्र विचार

मेषे च सिंहे धन पूर्व भागे, वृषे च कन्या मकरे च याम्ये।
युग्मे तुले कुंभसु पश्चिमायां, कर्काति मीने दिशिचोत्तरस्याम्॥

अर्थ— मेष, सिंह, धन पूर्व। वृष कन्या, मकर दक्षिण।
मिथुन, तुला, कुंभ पश्चिम। कर्क, वृश्चिक, मीन, उत्तर।

फलम्— सन्मुखे अर्थलाभाय, दक्षिणे सुखसंपदा।
पृष्ठे तु प्राणनाशाय, वामे चंद्रे धनक्षयः॥

अर्थ— सन्मुख का चन्द्रमा, धनदाता दाहिना सुखदाता।
पीठ का प्राण-हर्ता और बायां धन-हर्ता।

यात्रा में योगिनी विचार

ईशान ३०/८	पूर्व १/९	अग्नि ३/११
उत्तर २/१०	योगिनी सुखदा वामे। पृष्ठे वांछित दायिनी॥ दक्षिणे धनहंत्री च। सन्मुखे मरणप्रदा॥	दक्षिण ५/१३
७/१५ वायव्य	६/१४ पश्चिम	४/१२ नैऋत्य

दिशाशूल-विचार-चक्रम्

	पूर्व चन्द्र, शनि	
उत्तर मंगल, बुध	दिशाशूल ले जावो वामे। राहु योगिनी पूठ॥ सन्मुख लेवे चन्द्रमा। लावे लक्ष्मी लूट॥	दक्षिण गुरु
	रवि, शुक्र पश्चिम	

काल-राहु-विचार-चक्रम्

ईशान	पूर्व शनि	अग्नि शुक्र
उत्तर रवि	अर्कोत्तरो वायुदिशा च सोमे भौमे प्रतीच्यां बुधनैऋते च याम्ये गुरौ वह्निदिशा च शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति काल।	दक्षिण गुरु
सोम वायव्य	मंगल पश्चिम	बुध नैऋत्य

अभिजित मुहूर्त–दिनमान का आधा करने से जो समय प्राप्त हो उस समय से २४ मिनट पहले और २४ मिनट बाद तक अभिजित मुहूर्त रहता है, जो नगर प्रवेश आदि में श्रेष्ठ माना जाता है। इस मुहूर्त का बुधवार के दिन निषेध है।

सुयोग-कुयोग चक्र

योग	तिथि या नक्षत्र	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि	तिथि			३,८,१३ (जया)	२,७,१२ (भद्रा)	५,१०,१५ (पूर्णा)	१,६,११ (नंदा)	४,९,१४ (रिक्ता)
	—नक्षत्र	मूल	श्रवण	उ. भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू. फा.	स्वाति
अमृतसिद्धि	—नक्षत्र	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थसिद्धि	—नक्षत्र	मू. ह. पुष्य अश्वि. रे. उत्तरा-३	अनु. श्र.रो. कृ. पुष्य	उ.भा.अश्वि. कृ. आश्ले.	ह. कृ.रो. मृ. अनु.	पुन.पुष्य.रे. अनु. अश्वि.	अश्वि.रे. श्र. पुन. अनु.	रो. स्वा. श्र.
आनन्द	—नक्षत्र	अश्वि.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उ. षा.	श.
मृत्यु	तिथि—	१,६,११	२,७,१२	१,६,११	३,८,१३	४,९,१४	२,७,१२	५,१०,१५
	—नक्षत्र	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त.
कालयोग	—नक्षत्र	म.	आर्द्रा	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पू. भा.

विशेष सुयोग (१) २,३,७,१२,१५ तिथि, रविवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार तथा भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पू. फा, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, उ.भा. नक्षत्र–इनमें तीनों का सुयोग मिलने पर राजयोग बनता है, जो विशेष सिद्धि-दायक है।

(२) १,५,६,१०,११ तिथि, सोम, मंगल, बुध, शुक्रवार तथा अश्वि., रो., पुन., मघा, ह., चि., मू., श्र., पू. भ. नक्षत्र–इनमें तीनों का संयोग मिलने पर कुमार योग बनता है, जो शुभ है।

विशेष कुयोग–यदि एकम तिथि को मूल नक्षत्र हो, पंचमी को भरणी हो, अष्टमी को कृतिका हो, नवमी को रोहिणी हो, दशमी को आश्लेषा हो तो ज्वालामुखी योग बनता है, जो सब कार्यों में वर्जित है।

ज्ञातव्य– (क) सुयोग और कुयोग दोनों होने पर कुयोग का फल नहीं रहता।

(ख) अभिजित नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा का चौथा चरण तथा श्रवण का प्रथम पन्द्रहवां भाग अभिजित नक्षत्र होता है।

पौरसी प्रमाण

दिनांक	पग	अंगुल	घंटा	मिनट
२१ अप्रैल	२	८	३	१२
२२ मई	२	४	३	२२
२२ जून	२	०	३	२७
२४ जुलाई	२	४	३	२२
२४ अगस्त	२	८	३	१२
२३ सितम्बर	३	०	३	०
२३ अक्टूबर	३	४	२	४८
२१ नवम्बर	३	८	२	३८
२२ दिसम्बर	४	०	२	३४
२० जनवरी	३	८	२	३८
२१ फरवरी	३	४	२	४८
२० मार्च	३	०	३	०

राहू-काल

वार	समय	राहू-काल वेला
रवि	सायं	४-३० से ६-००
सोम	प्रातः	७-३० से ९-००
मंगल	मध्याह्न	३-०० से ४-३०
बुध	मध्याह्न	१२-०० से १-३०
गुरु	मध्याह्न	१-३० से ३-००
शुक्र	प्रातः	१०-३० से १२-००
शनि	प्रातः	९-०० से १०-३०

टिप्पण :–राहू-काल (समय) में यात्रा करना वर्जित है।

दिन के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि के चौघड़िये

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

जैन विश्व भारती प्रकाशन की अनुपम प्रस्तुति

जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित 'रोज की एक सलाह' केलैण्डर मंगवाएं और आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा दी गई रोज की एक सलाह से अपनी और अपने इष्ट मित्रों की जीवन यात्रा में सुख, शांति और सफलता का पथ प्रशस्त करें।

केलैण्डर मंगवाने हेतु संपर्क करें

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं-341306, जिला : नागौर (राज.), फोन नं. : (01581) 226080 / 224671, Mob. : 08742004849

With Best Compliments from

हर स्थिति अनुकूल बन जाएं, यह संभव नहीं
इसलिए तुम परिस्थितियों में सामंजस्य बिठाना सीख लो,
फिर वे तुम्हें बाधित नहीं करेंगी।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

MahaShila
JEWELLERY

निर्मल नीरज कोठारी, टॉडगढ़, अजमेर, राजस्थान

6/7, 2nd Floor, Laxmi Premises Chs Ltd., 70/70A Sheikh Memon Street, Zaveri Bazar, Mumbai-400002.
Tel. : 22404316/22413640 | Intercom 8641/8741 | Cell : 98334-24422
Email : info@mahashila.com | Website : www.mahashila.com

With Best Compliments from

दूसरी कीमती चीजें यदि खो जाए तो
उन्हें दुबारा प्राप्त किया जा सकता है,
किन्तु समय एक ऐसी चीज है, जिसे खोने के बाद
दुबारा कभी नहीं पाया जा सकता।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

Swarna Shilpi

JEWELLERS

Mithalal, Rakeshkumar, Dilipkumar, Kamelshkumar Bafna

61, NSC Bose Road, Sowcarpet, (Opp. Veerapan Street), Chennai-600 079

Tel. : 25356330, 25356331, 25356332, Fax : 25352013 | E-mail : swarnaslp@gmail.com

With Best Compliments from

मनुष्य की सोच हमेशा सकारात्मक होनी चाहिए।
-आचार्य महाप्रज्ञ

समय धन है। उसका सदुपयोग करो।
व्यर्थ कार्यों में उसे व्यर्थ मत करो।
-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

Rameshchand Jitendrakumar Anchaliya
Agent : LIC of India, MDRT USA (9842323196, 9489961638)
Tulsi Thangamaligai
No. 29, Krishna Pillai Street, Tindivanam
Tulsi Medicare
No. 29, Krishnadoss Road, Otteri, Chennai-12

With Best Compliments from

धर्म की कसौटी जीवन का व्यवहार है,
धर्मस्थ स्थान नहीं।

– आचार्य भिक्षु

श्रद्धावनत

Bhikshu Granimart

Dealers in Imported Marble

52/A2, Mula Road,
Near Kirkee War Cemetery
Pune-411003 | Ph. : 020-64006661 / 2 / 3

आचार्य तुलसी अंतर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र के लिए 'प्रेक्षा कार्ड योजना'

प्रेक्षा प्लेटिनम कार्ड (सहयोग राशि रु. 1 लाख) :

कार्ड धारक को प्रदत्त सुविधाएं–

- आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों में प्रतिवर्ष एक साप्ताहिक शिविर में कार्ड धारक एवं उसके साथ एक अन्य व्यक्ति को **20** वर्ष तक निःशुल्क सहभागिता प्रदान की जाएगी।
- स्वतंत्र वातानुकूलित आवास सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी।
- सात्विक एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराया जाएगा।
- स्वयं के न आने पर यह सुविधा कार्ड धारक अपने किसी परिजन अथवा मित्रजन को हस्तान्तरित कर सकेगा।
- प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान की **दस वर्षीय** निःशुल्क सदस्यता।

प्रेक्षा गोल्डन कार्ड (सहयोग राशि रु. 50 हजार) :

कार्ड धारक को प्रदत्त सुविधाएं–

- आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में फाउण्डेशन द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों में प्रतिवर्ष एक साप्ताहिक शिविर में कार्ड धारक को **20** वर्ष तक निःशुल्क सहभागिता।
- वातानुकूलित आवास सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी।
- सात्विक एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराया जाएगा।
- स्वयं के न आने पर यह सुविधा कार्ड धारक अपने किसी परिजन अथवा मित्रजन को हस्तान्तरित कर सकेगा।
- प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान की दस वर्षीय निःशुल्क सदस्यता।

प्रेक्षा सिल्वर कार्ड (सहयोग राशि रु. 25 हजार) :

कार्ड धारक को प्रदत्त सुविधाएं–

- आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में फाउण्डेशन द्वारा आयोजित प्रेक्षाध्यान शिविरों में प्रतिवर्ष एक साप्ताहिक शिविर में कार्ड धारक को **20** वर्ष तक निःशुल्क सहभागिता।
- आवास सुविधा (अटैच्ड) उपलब्ध कराई जायेगी।
- सात्विक एवं शुद्ध शाकाहारी भोजन उपलब्ध कराया जाएगा।
- स्वयं के न आने पर यह सुविधा कार्ड धारक अपने किसी परिजन अथवा मित्रजन को हस्तान्तरित कर सकेगा।
- प्रेक्षा फाउण्डेशन, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान की त्रिवर्षीय निःशुल्क सदस्यता।

नोट :

- प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा निर्धारित आचार संहिता धारक/शिविरार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से पालनीय होगी।
- पुरुष एवं महिला शिविरार्थियों के लिए पृथक्-पृथक् आवास सुविधा उपलब्ध रहेगी।
- शिविर में सहभागिता हेतु दो माह पूर्व प्रेक्षा फाउण्डेशन को लिखित सूचना प्रेषित करनी होगी।
- शिविरार्थियों की निर्धारित संख्या एवं स्थान की उपलब्धता के अनुसार शिविर हेतु प्राथमिकता के आधार पर सहभागिता की स्वीकृति प्रदान की जाएगी।
- यह कार्ड/सदस्यता अहस्तान्तरणीय होगी।

प्रेक्षा कार्ड योजना के अधिक से अधिक सदस्य बनकर प्रेक्षाध्यान के माध्यम से अपने जीवन में रुपान्तरण का अनुभव करें।

धरमचंद लुंकड, अध्यक्ष (9840166699) | सुकनराज धमार, चेयरमैन, प्रेक्षा फाउण्डेशन (09444797775) | प्यारेलाल पितलिया, मुख्य न्यासी (9841036262) | अरविन्द गांठी, मंत्री (9810114949)

प्रेक्षाध्यान

प्रेक्षाध्यान : एक परिचय

प्रेक्षाध्यान हमारे प्राचीन ग्रंथों, आधुनिक विज्ञान और अनुभव का समन्वय है। प्रेक्षाध्यान हमारे विचारों और चेतना को शुद्ध करने का अभ्यास है तथा आत्म-साक्षात्कार की एक प्रक्रिया है। प्रेक्षाध्यान के अभ्यास के द्वारा हम अपने स्वभाव, व्यवहार और व्यक्तित्व का निर्माण कर सकते हैं। सरल शब्दों में प्रेक्षा का अर्थ है–'अपने आपको देखना, अपने शरीर, मन और आत्मा के सूक्ष्म स्पन्दनों को राग-द्वेष से मुक्त होकर केवल देखना और जानना।'

प्रेक्षाध्यान की मुख्य निष्पत्ति है–चित्त की शुद्धि। हमारे जीवन में संतुलन, आनंद और शांति का अनुभव उपलब्ध कराने में प्रेक्षाध्यान प्रमुख भूमिका निभाता है। मानसिक तनावों से मुक्ति, ऊर्जा के रूपान्तरण, चेतना के ऊर्ध्वारोहण और एकाग्रता के विकास के लिए प्रेक्षाध्यान वास्तव में जीवन का वरदान है। व्याधि, आधि और उपाधि को समाप्त करने वाला प्रेक्षाध्यान समाधि का प्रवेश द्वार है। इसके साथ-साथ विभिन्न रोगों के उपचार के लिए प्रेक्षाध्यान के प्रयोग लाभदायक हैं।

प्रेक्षा फाउण्डेशन

प्रेक्षाध्यान जैन विश्व भारती की एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है। प्रेक्षाध्यान संबंधी समग्र गतिविधियों का नियमन जैन विश्व भारती के अन्तर्गत गठित प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा होता है। प्रेक्षा फाउण्डेशन का उद्देश्य है–परमपूज्य आचार्यश्री तुलसी एवं परमपूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के अमूल्य अवदान 'प्रेक्षाध्यान' को आचार्यश्री महाश्रमणजी के कुशल आध्यात्मिक निर्देशन में निष्ठा के साथ संचालित करते हुए विश्वव्यापी बनाकर मानवजाति की आध्यात्मिक सेवा करना।

प्रेक्षावाहिनी

प्रेक्षाध्यान में रूचि रखने वाले साधकों के समूह का नाम है–'प्रेक्षावाहिनी'। प्रेक्षाध्यान में रूचि रखने वालों को प्रेक्षाध्यान के अभ्यास, प्रयोग एवं प्रशिक्षण के लिए स्थानीय स्तर पर एक सुव्यवस्थित व्यवस्था उपलब्ध हो सके एवं साधकों में परस्पर संपर्क एवं संवाद बना रहे, इस दृष्टि से देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रेक्षावाहिनीयां गठित की जा रही है। कम से कम दस साधक मिलकर किसी स्थान पर प्रेक्षावाहिनी गठित कर सकते हैं। गठित प्रेक्षावाहिनी द्वारा प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को प्रेक्षाध्यान की एक घंटे की कक्षा आयोजित की जाती है, जिसमें सामूहिक रूप से प्रेक्षाध्यान का अभ्यास व प्रयोग किये जाते हैं। प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा मनोनीत निर्देशक मण्डल द्वारा प्रेक्षावाहिनीयों का संचालन किया जाता है। अपने क्षेत्र में प्रेक्षावाहिनी के गठन हेतु निर्देशक मण्डल के वर्तमान निम्नलिखित सदस्यों से संपर्क किया जा सकता है–

१. श्री मर्यादा कुमार कोठारी, जोधपुर 9414134340
२. श्री सुबोध पुगलिया, जयपुर 9414056027

३. श्री विकास सुराणा, इचलकरंजी	9326021312
४. श्रीमती राज गुनेचा, दिल्ली	9268729037
५. श्रीमती अर्चना जैन, नागपुर	8149055123
६. श्री सुरेन्द्र ओसवाल, रायपुर	9425285121

प्रेक्षाध्यान पत्रिका

अध्यात्म, योग और अन्य जीवनोपयोगी विषयों पर आधारित मासिक पत्रिका प्रेक्षाध्यान का प्रकाशन विगत 31 वर्षों से हो रहा है। वर्तमान में प्रेक्षाध्यान पत्रिका के संपादक श्री अशोक संचेती, दिल्ली हैं। पत्रिका का सदस्यता शुल्क त्रैवार्षिक रु. 750/–एवं दसवर्षीय रु. 2,500/- है। पत्रिका की सदस्यता हेतु प्रेक्षा फाउण्डेशन से संपर्क किया जा सकता है।

प्रेक्षाध्यान शिविर

प्रेक्षा फाउण्डेशन द्वारा तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनूं (राजस्थान) के सुरम्य व शांत परिसर में अष्टदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर प्रतिमाह आयोजित होते हैं, जिनमें चारित्रात्माओं एवं समण-समणीवृंद का सान्निध्य प्राप्त होता है तथा उनके द्वारा प्रेक्षाध्यान की कक्षाएं ली जाती है। प्रशिक्षित प्रशिक्षकगण द्वारा प्रेक्षाध्यान के प्रयोग व अभ्यास कराए जाते हैं। शिविर में भाग लेने वालों के लिए आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्थाएं यहां उपलब्ध हैं।

इन मासिक प्रेक्षाध्यान शिविरों की श्रृंखला में वर्ष 2015 में तुलसी अध्यात्म नीडम्, जैन विश्व भारती, लाडनूं में निम्नलिखित तिथियां प्रस्तावित की गई है–

01. दिनांक 13-19 फरवरी 2015 (Mega Camp)
02. दिनांक 15-22 मार्च 2015
03. दिनांक 12-19 अप्रैल 2015
04. दिनांक 12-19 जुलाई 2015
05. दिनांक 09-16 अगस्त 2015
06. दिनांक 21-28 सितम्बर 2015
07. दिनांक 13-22 अक्टूबर 2015 (II Level)
08. दिनांक 15-22 नवम्बर 2015
09. दिनांक 06-13 दिसम्बर 2015

प्रति शिविरार्थी निम्नानुसार पंजीकरण शुल्क निर्धारित है–

नॉन-अटैच्ड रूम 1100/- रु., अटैच्ड रूम 2100/- रु. एवं ए.सी. रूम 7100/- रु.।

उक्त शिविरों मे भाग लेने के लिए पंजीकरण एवं अन्य जानकारी हेतु इच्छुक भाई-बहन प्रेक्षा फाउण्डेशन से संपर्क कर सकते हैं। ऑनलाईन पंजीकरण भी करवा सकते हैं।

प्रेक्षा फाउण्डेशन
तुलसी अध्यात्म नीडम्
जैन विश्व भारती परिसर
पोस्ट : लाडनूं-341306, जिला : नागौर (राजस्थान)
फोन नं. : 01581-226119, मोबाईल नं. : 08233344482
ई-मेलः foundation@preksha.com, वेबसाईटः www.preksha.com

आचार्य महाश्रमण

जन्म :	वि.सं. 2019, वैशाख शुक्ला नवमी (13 मई 1962) सरदारशहर
जन्म नाम :	मोहनलाल दूगड़
पिता :	स्व. श्री झूमरमलजी दूगड़
माता :	स्व. श्रीमती नेमादेवी दूगड़
दीक्षा :	वि.सं. 2031 वैशाख शुक्ला चतुर्दशी (5 मई 1974) सरदारशहर (आचार्य तुलसी की अनुज्ञा से मुनि सुमेरमलजी 'लाडनूं' द्वारा)
अन्तरंग सहयोगी :	वि.सं. 2042, माघ शुक्ला सप्तमी (16 फरवरी 1986) उदयपुर
साझपति :	वि.सं. 2043, वैशाख शुक्ला चतुर्थी (13 मई 1986) ब्यावर
महाश्रमण पद :	वि.सं. 2046, भाद्रव शुक्ला नवमी (9 सितम्बर 1989) लाडनूं
युवाचार्य पद :	वि.सं. 2054, भाद्रव शुक्ला द्वादशी (14 सितम्बर 1997) गंगाशहर
आचार्य पदाभिषेक :	वि.सं. 2067, द्वितीय वैशाख शुक्ला दशमी (23 मई 2010) सरदारशहर
महातपस्वी :	वि.सं. 2064, भाद्रपद शुक्ला पंचमी (17 सितम्बर 2007) उदयपुर
शान्तिदूत :	वि.सं. 2068, ज्येष्ठ कृष्णा द्वादशी (29 मई 2011) उदयपुर
श्रमण संस्कृति उद्गाता :	वि.सं. 2069, आश्विन कृष्णा चतुर्दशी (14 अक्टूबर 2012) जसोल
प्रकाशित पुस्तकें :	आओ हम जीना सीखें, दुःख मुक्ति का मार्ग, क्या कहता है जैन वाङ्मय, संवाद भगवान से (भाग-1,2), शिक्षा सुधा, शेमुषी, मेरे गीत, धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, महात्मा महाप्रज्ञ, सुखी बनो, संपन्न बनो, विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का, अदृश्य हो गया महासूर्य।

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रमुख कृतियां

दुःख मुक्ति का मार्ग

आचार्यश्री महाश्रमण ने इस पुस्तक में साधना के रहस्यों को प्रस्तुत किया है। सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति में यह कृति मार्गदर्शक की भूमिका अदा करती है।

क्या कहता है जैन वाङ्मय

इस पुस्तक में जैन शास्त्रों में उपलब्ध सफलता के सूत्रों में से चुनिंदा मोतियों को पिरोया गया है। प्रस्तुत कृति आचार्यश्री महाश्रमण के हृदयस्पर्शी प्रवचनों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है।

आओ हम जीना सीखें

जीता हर कोई है, किन्तु कलापूर्ण जीना कोई-कोई जानता है। प्रस्तुत पुस्तक में आचार्यश्री महाश्रमण ने कलात्मक जीवन के सूत्रों को प्रकाशित करते हुए जीवन की प्रत्येक क्रिया का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया है। वस्तुतः यह कृति 'कैसे जीएं' इस प्रश्न का सटीक समाधान है।

संवाद भगवान से

प्रतिष्ठित जैनागम उत्तराध्ययन के २९वें अध्ययन पर आधारित इस पुस्तक में भगवान महावीर और उनके प्रमुख शिष्य गौतम के रोचक संवाद के माध्यम से मन में संशय पैदा करने वाले प्रश्नों को विस्तृत रूप में समाहित किया गया है। यह कृति दो भागों में उपलब्ध है।

महात्मा महाप्रज्ञ

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ तेरापंथ के आचार्य, अनुशास्ता, साहित्यकार और प्रवचनकार थे। इन सबसे पहले वे एक सन्त थे, महात्मा थे, उनकी आत्मा में महानता थी। उनके उत्तराधिकारी आचार्यश्री महाश्रमण ने उन्हें नजदीकी से देखा और जाना। प्रस्तुत पुस्तक में श्री महाप्रज्ञ के नौ दशकों के इतिहास और रहस्यों को उजागर किया गया है।

रोज की एक सलाह

लघु आकार में प्रस्तुत यह पुस्तक 'गागर में सागर' उक्ति को चरितार्थ करती है। आचार्य महाश्रमण द्वारा सूक्तियों में दी गई 'रोज की एक सलाह' हर व्यक्ति के लिए प्रतिदिन की पर्याप्त खुराक है। सदा साथ रखी जा सकने वाली यह कृति न केवल सफलता की प्राप्ति में सहायक है, अपितु व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में भी इसकी उपयोगिता असंदिग्ध है।

१. सुखी बनो २. सम्पन्न बनो ३. विजयी बनो

आचार्य महाश्रमण ने प्रस्तुत तीनों पुस्तकों में श्रीमद्भगवद्गीता और उत्तराध्ययन की तुलनात्मक विवेचना करते हुए साधक का सुन्दर पथदर्शन किया है। तीन भागों में उपलब्ध यह ग्रन्थमाला जहां दो महनीय ग्रन्थों को युगीन रूप में प्रस्तुति देती है, वहीं अध्यात्मरसिकों के लिए पोषक का कार्य भी करती है।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं

आचार्यश्री महाश्रमण की प्रस्तुत पुस्तक में जैन तत्त्वज्ञान, साधना के प्रयोगों, महापुरुषों और उनके अवदानों आदि विविध विषयों से संबद्ध उपयोगी और प्रेरणास्पद सामग्री संजोई गई है।

शिलान्यास धर्म का

धर्म का आदि बिन्दु है - सम्यक्त्व। आचार्य महाश्रमण की प्रस्तुत कृति सम्यक्त्व, उसके लक्षण, दूषण, भूषण तथा देव, गुरु, धर्म आदि विषयों पर आधारित प्रवचनों और प्रश्नोत्तरों का संग्रह है। जैन अनुयायियों की आस्था के दृढ़ीकरण में यह कृति सहायक की भूमिका अदा करती है।

• प्राप्ति स्थान •

जैन विश्व भारती, लाडनूं — Mob. : 08742004849

आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल — Mob. : 09928393902

ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

उच्च शिक्षा का एक अद्वितीय केन्द्र

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत घोषित मान्य विश्वविद्यालय)

JVBI Reaccredited Grade-'A' by NAAC

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं द्वारा उच्च शिक्षा के साथ-साथ अनेकान्त, अहिंसा, सहिष्णुता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के उच्च आदर्शों को मानवजाति में स्थापित करने की दिशा में एक सार्थक प्रयास हो रहा है। गुरुदेव श्री तुलसी प्राच्य विद्या के लिए समर्पित इस संस्थान के प्रथम संवैधानिक अनुशास्ता (नैतिक एवं आध्यात्मिक मार्गदर्शक) बने। आचार्य महाप्रज्ञ इस संस्थान के द्वितीय एवं आचार्य महाश्रमण वर्तमान अनुशास्ता हैं एवं श्री बसंतराज भंडारी कुलाधिपति हैं। कुलपति समणी चारित्रप्रज्ञा के कुशल एवं सक्षम नेतृत्व में संस्थान विकास के नये-नये प्रतिमान स्थापित कर रहा है।

- वर्ष 2013 में NAAC ने संस्थान का पुनर्मूल्यांकन कर 'A' ग्रेड तथा MHRD ने 'A' केटेगरी प्रदान की है।
- विद्यार्थियों के लिए विशेष अत्याधुनिक सुविधा ई-लर्निंग www.jvbionline.com भी उपलब्ध है।

नियमित पाठ्यक्रम

(अ) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

दो वर्षीय पाठ्यक्रम

एम.ए./एम.एससी. : 1. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, 2. दर्शन, 3. संस्कृत, 4. प्राकृत 5. हिन्दी, 6. जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग, 7. क्लीनिकल साइकोलॉजी, 8. अहिंसा एवं शांति, 9. राजनीति विज्ञान, 10. समाज कार्य एवं 11. अंग्रेजी।

उपरोक्त सभी विषयों में पी-एच.डी. सुविधा

एक वर्षीय पाठ्यक्रम

एम.फिल. : 1. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, 2. अहिंसा एवं शांति, 3. प्राकृत एवं जैन आगम।

12. **एम.एड.** (केवल महिलाओं के लिए–प्रवेश राज्य सरकार के नियमानुसार)

(ब) स्नातक पाठ्यक्रम (केवल महिलाओं के लिए)

तीन वर्षीय पाठ्यक्रम–1. बी.ए., 2. बी. कॉम

एक वर्षीय पाठ्यक्रम–1. बी.लिब, 2. बी.एड.–केवल महिलाओं के लिए–प्रवेश राज्य सरकार के नियमानुसार

(स) डिप्लोमा पाठ्यक्रम (एक वर्षीय)

(क) स्नातकोत्तर डिप्लोमा–1. स्टडीज इन जैनिज्म, 2. नेचुरोपैथी (18 माह), 3. प्रेक्षा योगा थैरेपी, 4. एन.जी.ओ. मैनेजमेण्ट, 5. रूरल डेवलपमेण्ट, 6. जेण्डर इम्पॉवरमेण्ट, 7. कॉरपोरेट सोसियल रिस्पोन्सिबिलिटी,

8. ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेण्ट, 9. काउन्सलिंग एण्ड कम्युनिकेशन

(ख) स्नातक डिप्लोमा–1. राजभाषा अध्ययन, 2. बैंकिंग

(द) प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

छह माह–1. कम्यूनिकेशन इन इंग्लिश, 2. जर्नलिज्म एण्ड मास मीडिया

त्रैमासिक–1. प्राकृत, 2. अहिंसा एवं शांति, 3. इन्स्ट्रक्शन मैथड एण्ड मीडिया, 4. एजुकेशन साइकोलॉजी, 5. योग एवं प्रेक्षाध्यान, 6. जीवन-विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग शिक्षा।

पत्राचार पाठ्यक्रम

दो वर्षीय पाठ्यक्रम

(अ) स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

एम.ए./एम.एससी. : 1. जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन, 2. शिक्षा, 3. हिन्दी, 4. जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग, 5. अंग्रेजी, 6. अहिंसा एव शांति।

(ब) स्नातक पाठ्यक्रम

तीन वर्षीय–1. बी.ए., 2. बी.कॉम

एक वर्षीय–1. बी.लिब., 2. बैचलर्स प्रपेटरी प्रोग्राम (बी.पी.पी.)

(स) प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम

छह माह–1. जैन धर्म तथा दर्शन, 2. ह्यूमन राइटस, 3. जैन आर्ट एण्ड एस्थेटिक्स, 4. प्राकृत

त्रैमासिक–1. अहिंसा प्रशिक्षण, 2. अण्डरस्टेंडिंग रीलिजन, 3. प्रेक्षा लाईफ स्किल (10 दिन)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ (राजस्थान)

दूरभाष : 01581-226110,224332,226230, फैक्स : 227472 Mob. 09462658501, 09462658701

Website : http:/www.jvbi.ac.in, e-mail : jvbiladnun@gmail.com, registrar@jvbi.ac.in

अपील : जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के अन्तर्गत शिक्षा एवं शोध कार्य के अधिकाधिक विकास एवं विस्तार हेतु 'जैन विश्वभारती संस्थान एज्युकेशन फण्ड' के नाम से एक स्थायी कोष के निर्माण का चिन्तन किया गया है। इस कोष में कोई भी व्यक्ति न्यूनतम रु. 5000/- या उससे अधिक की राशि अनुदानस्वरूप दे सकता है। किसी भी वर्ग, जाति, धर्म, मत अथवा राष्ट्रीयता के भेदभाव के बिना कोई भी व्यक्ति इस कोष में सहयोग दे सकता है। जैन विश्वभारती संस्थान को प्रदत्त अनुदान पर आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80 जी के अन्तर्गत छूट उपलब्ध है।

सादर निवेदन है कि अधिक से अधिक व्यक्ति इस अभिमान में जुड़कर सहयोग का हाथ बढ़ायें।

निवेदक : धर्मचन्द लूंकड़, 98401-66699, प्यारेलाल पितलिया 98410-36262

संयुक्त संयोजक : जैन विश्वभारती संस्थान एज्युकेशन फण्ड

जीवन विज्ञान

आचार्य महाप्रज्ञ प्रणीत 'जीवन विज्ञान' जीवन जीने की कला सिखाता है। स्वस्थ समाज रचना के लिए स्वस्थ एवं संतुलित व्यक्तित्व के निर्माण की अपेक्षा है। व्यक्तित्व की समग्रता केवल बौद्धिक विकास में नहीं है, जबकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सर्वाधिक बल इसी पर दिया जा रहा है, समग्र विकास के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास भी आवश्यक है। जीवन विज्ञान बौद्धिक ज्ञान की उपेक्षा नहीं करता परन्तु इसके साथ व्यक्तित्व विकास के अन्य आयामों पर भी पर्याप्त बल देने की बात करता है। यह वर्तमान शिक्षा प्रणाली के पूरक के रूप में जुड़कर व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः शिक्षा की सम्पूर्णता के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा में जीवन विज्ञान का समावेश हो।

जीवन विज्ञान के उद्देश्य

1. जीवन के परिष्कार द्वारा आध्यात्मिक और वैज्ञानिक व्यक्तित्व का निर्माण करना।

2. जीवन विज्ञान, योग द्वारा शारीरिक एवं मानसिक विकास पर भावात्मक प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन करना।

3. जीवन के उन नियमों एवं प्रक्रियाओं का अध्ययन एवं अन्वेषण करना, जिससे जीवन के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्ष का परिष्कार होता है।

4. स्वस्थ समाज की रचना के लिए ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना, जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों हेतु स्वस्थ जीवन की प्रायोगिक एवं अभ्यासात्मक प्रक्रियाओं को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत कर सके। साथ ही इसके माध्यम से वह समग्र एवं स्वस्थ समाज के निर्माण में सहभागी बन सके।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शिक्षा के इस क्रांतिकारी आयाम को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए जीवन विज्ञान अकादमी प्रारम्भ से जैन विश्व भारती के अंतर्गत कार्यरत है। इस अकादमी के प्रयासों से देशभर में अनेक अकादमियां स्थापित हो चुकी हैं जो अपने-अपने क्षेत्र में जीवन विज्ञान का विकास और प्रचार-प्रसार कर रही है।

जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम

जीवन विज्ञान के अंतर्गत व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य के समुचित विकास हेतु आधुनिक और प्राचीन विद्याओं के समावेश से परिपूर्ण अन्तर्विषयानुबंधी पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया गया है। विद्यालयीन स्तर पर जीवन विज्ञान पाठ्यक्रम का प्रारूप निम्नानुसार है–

1. प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान।
2. प्रत्येक कालांश में विषय शिक्षण से पूर्व लघु प्रवृत्तियां।
3. मुख्यधारा के विषय के रूप में (प्रारम्भ से कक्षा 12 तक)।
4. पाठ्यक्रम सहगामी प्रवृत्तियां।

पाठ्य सामग्री

जीवन विज्ञान : एक परिचय, जीवन विज्ञान : स्वस्थ समाज की संरचना,

जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम, शिक्षा जगत् के लिए जरूरी है नया चिन्तन, जीवन विज्ञान : शिक्षक प्रशिक्षक मार्गदर्शिका, जीवन विज्ञान : शिक्षक निर्देशिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान लघु पुस्तिका, प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान का केलेण्डर, जीवन विज्ञान : संस्कारमाला (नर्सरी से कक्षा 2 तक), बालक का व्यक्तित्व विकास और मूल्यपरक शिक्षा के प्रयोग, जीवन विज्ञान की रूपरेखा, जीवन विज्ञान पाठ्य-पुस्तकें : कक्षा 3 से 12 तक, सहशैक्षिक प्रवृत्तियों के लिए जीवन विज्ञान प्रश्न मंच एवं केरियर क्लब, संवादों में जीवन विज्ञान, जीवन विज्ञान प्रायोगिकी आदि। (पाठ्य-पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी सहित गुजराती, कन्नड़, आदि कुछ प्रादेशिक भाषाओं में भी उपलब्ध है।)

जीवन विज्ञान से लाभ

1. बौद्धिक और भावनात्मक विकास का संतुलन।
2. आवेग और आवेश का संयम।
3. आत्मानुशासन की क्षमता का विकास।
4. जीवन व्यवहार निश्छल एवं मैत्रीपूर्ण।
5. मादक वस्तुओं से सेवन से मुक्ति।
6. स्वस्थ जीवन जीने का मार्ग।
7. नैतिक मूल्यों का विकास।
8. पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अच्छे ढंग से जीवन जीने की कला का प्रशिक्षण।
9. जीवन की समस्याओं के समाधान की खोज।
10. स्व-शक्ति से परिचय एवं उसके उपयोग की दक्षता।

देश-विदेश में कार्यरत जीवन विज्ञान अकादमी

(दुबई) अजमन, (दिल्ली) महरौली नई दिल्ली, (राजस्थान) अजमेर, जयपुर, भीलवाड़ा, सरदारशहर, नोखा, चूरू, सुजानगढ़, जसोल, बांसवाड़ा, आमेट (महाराष्ट्र) मुंबई, नवी मुंबई, जलगांव, (पं. बंगाल) कोलकाता, (कर्नाटक) बैंगलोर, (तमिलनाडु) पल्लावरम-चेन्नई, ईरोड़, मदुरई, तिरूवन्नामलाई, (हरियाणा) गुड़गांव, भिवानी, (छत्तीसगढ़) दुर्ग-भिलाई, (मध्यप्रदेश) इन्दौर, रतलाम, (उड़ीसा) टिटिलागढ़ (गुजरात) कोबा-गांधीनगर (आन्ध-प्रदेश) कुकटपल्ली-हैदराबाद (बिहार) करसर, आरा।

वार्षिक आयोजन

1. जीवन विज्ञान दिवस (24 नवम्बर 2015) कार्तिक शुक्ला 13
2. संस्कार निर्माण प्रतियोगिता 2015
3. जीवन विज्ञान शिक्षक प्रशिक्षण शिविर
4. जीवन विज्ञान प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर
5. जीवन विज्ञान व्यक्तित्व विकास कार्यशाला

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें

जीवन विज्ञान
स्वस्थ समाज की संरचना

जीवन विज्ञान अकादमी

जैन विश्व भारती

पोस्ट : लाडनूं - 341306, जिला : नागौर (राजस्थान)

फोन : 01581-226974, 09414919371

ई-मेल : jeevanvigyanacademy@gmail.com

समण संस्कृति संकाय

तेरापंथ के नवम अधिष्ठाता गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के क्रांत मस्तिष्क से प्रस्फुटित लोककल्याणकारी अवदानों में सामाजिक, आध्यात्मिक एवं व्यावहारिक स्तर पर एक महत्त्वपूर्ण गतिविधि है–**'जैन विद्या का प्रसार'**। गणाधिपति श्री तुलसी की कल्पनाशीलता व स्वप्नों को साकार करने की दिशा में प्रयासरत है–**'संस्कारों की प्रयोगशाला : समण संस्कृति संकाय'**–जो भावी पीढ़ी में सद्-संस्कारों का वपन करने एवं उनके उन्नत व सुदृढ़ भविष्य का निर्माण करने के लिए जैन विद्या पाठ्यक्रम की लम्बी शृंखला के माध्यम से सन् 1977 से प्रयास रत है।

इस प्रयोगशाला के प्रयोगों को विश्वव्यापी बनाने की दिशा में वर्तमान में यह विभाग आचार्यश्री महाश्रमणजी के मार्गदर्शन में सतत् विकासशील है।

जैन विद्या अध्ययन

परीक्षाओं संबंधी स्थानीय व्यवस्थाओं हेतु केन्द्र व्यवस्थापकों की नियुक्ति की जाती है। अध्ययन-अध्यापन में स्थानीय संस्थाओं का सहयोग प्राप्त होता रहा है। संकाय द्वारा भारत के 17 प्रांतों व नेपाल में स्थापित 271 केन्द्रों पर परीक्षाओं का परीवीक्षण (Invigilate) किया जाता है। विगत सात वर्षों से अंचल स्तर पर आंचलिक संयोजकों का मनोनयन किया गया है। जैन विद्या परीक्षाओं के विकास, संवर्द्धन व प्रत्येक अंचल में केन्द्रों के विस्तार एवं ज्यादा से ज्यादा परीक्षार्थी जोड़ने हेतु इस वर्ष प्रभारी/आंचलिक संयोजकों की संख्या में वृद्धि की गयी है। दिनांक 19 जुलाई 2014 को महरौली-दिल्ली में प्रभारी/आंचलिक संयोजक/केन्द्र व्यवस्थापकों की कार्यशाला का आयोजन किया गया।

जैन विद्या अध्ययन का उद्देश्य

1. जैन विद्या अध्ययन के माध्यम से सभी आयु वर्ग के भाई बहनों को जैन धर्म के सिद्धांत, तत्त्व विद्या, दर्शन, मान्यताओं, परम्पराओं, आदर्शों से रूबरु करवाना। जैन विद्वान तैयार करना।

2. भौतिक संसाधनों की चकाचौंध व पाश्चात्य संस्कृति से लिप्त नई पीढ़ी को जैन संस्कृति से परिचित कराना व सद्संस्कारों का संरक्षण।

3. मानव जीवन के नियमों व प्रक्रियाओं का अध्ययन कराना जिससे जीवन में नैतिक मूल्यों का विकास हो, बौद्धिक विकास हो।

समण संस्कृति संकाय सम, शम और श्रम की संस्कृति के प्रचार का तंत्र है। उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु जैन विद्या के आयाम को विश्वव्यापी बनाने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 300 केन्द्रों से हजारों प्रतिभागी संस्कार निर्माण की दिशा में अग्रसर होते हैं। परीक्षाओं के माध्यम से तैयार हुए प्रशिक्षक भी इसमें अपने समय व श्रम का नियोजन करते हैं। संकाय का पूरा तंत्र विशेष जागरूकता के साथ परीक्षाओं का संचालन करता है।

पाठ्य सामग्री

संकाय द्वारा सुगम व सारगर्भित जैन विद्या 9 वर्षीय पाठ्यक्रम संचालित होता है। जिसके निर्माण में मुनिश्री सुमेरमलजी 'सुदर्शन' का श्रम नियोजित हुआ है। आधुनिक पीढ़ी को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्यक्रम के नवीनीकरण पर मुनिश्री जयंतकुमारजी के मार्गदर्शन में निधारित समिति द्वारा यह कार्य शुरू किया जा रहा है। दिनांक 18 जुलाई 2014 को महरौली-दिल्ली में पाठ्यक्रम समिति की गोष्ठी में महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गये। जैन विद्या भाग 1 से 9 तक की पाठ्य पुस्तकें इस प्रकार है–पुस्तक जैन विद्या भाग 1 से 4,

सचित्र श्रावक प्रतिक्रमण, जैन तत्त्व विद्या खण्ड-1, जैन परम्परा का इतिहास, जैन तत्त्व विद्या खण्ड-2 व 3, जैन धर्म : जीवन और जगत, भिक्षु विचार दर्शन, जीव-अजीव, श्रमण महावीर, आचार्य भिक्षु, जैन दर्शन : मनन और मीमांसा।

जैन विद्या परीक्षा

सत्र 2014-15 की जैन विद्या परीक्षाएं पूरे भारत व नेपाल में दिनांक 1 व 2 नवम्बर 2014 को 265 केंद्रों पर आयोजित की गयी। इन केन्द्रों पर 5975 परीक्षार्थी परीक्षा में बैठे। परीक्षाओं में प्रामाणिकता के परीक्षण हेतु केन्द्रों पर निरीक्षक भेजे गये।

दीक्षांत समारोह का आयोजन

संकाय का सबसे महत्त्वपूर्ण समारोह है—जैन विद्या दीक्षांत समारोह। परीक्षाओं में अखिल भारतीय स्तर पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों को स्वर्ण, रजत व कांस्य पदक प्रदान कर सम्मानित किया जाता है। जैन विद्या भाग 1-9 की सम्पूर्ण परीक्षाएं उत्तीर्ण कर लेने पर विद्यार्थी को **'विज्ञ उपाधि'** से नवाजा जाता है। संकाय का 16वां दीक्षांत समारोह दिनांक 20 जुलाई 2014 को मेहरोली-दिल्ली में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया।

जैन विद्या कार्यशाला

समण संस्कृति संकाय एवं अ.भा.ते.यु.प. द्वारा संयुक्त रूप से गत पांच वर्षों से जैन विद्या कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। समण संस्कृति संकाय—जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पाठ्य पुस्तक देश भर की परिषदों को उपलब्ध करवायी जाती है। परीक्षाओं में प्रथम 10 वरीयता प्राप्त ज्ञानार्थियों को पुरस्कृत किया जाता है। कार्यशाला की निरन्तरता के लिए आचार्यप्रवर की स्वीकृति प्राप्त हो गयी है। दिनांक 17 अगस्त 2014 को आयोजित जैन विद्या कार्यशाला पंचम का परिणाम घोषित किया गया। यह कार्यशाला सम्पूर्ण भारत में भारत में 85 क्षेत्रों में 28 जुलाई से 11 अगस्त तक आयोजित की गयी। इस परीक्षा में 74 केन्द्रों से 1736 परीक्षार्थियों ने भाग लिया, 1441 परीक्षार्थी उत्तीर्ण हुए, परिणाम 83 प्रतिशत रहा।

लक्ष्य : 2013-2014

- जैन विद्या का व्यापक प्रचार-प्रसार करना।
- जैन समाज के अधिक से अधिक बालक बालिकाएं जैन विद्या के अध्ययन में सहभागी बने।
- आगामी सत्र में 300 परीक्षा केन्द्र स्थापित है। आवेदकों की संख्या के समकक्ष परीक्षार्थियों की संख्या हो, ऐसा प्रयास रहेगा।
- जैन विद्या परीक्षाओं को पूर्ण प्रामाणिक बनाना। केन्द्रों पर अध्ययन की व्यवस्था करवाना। सम्पर्क कक्षाओं का आयोजन करना।
- केन्द्रों व्यस्थापकों को प्रशिक्षित करना एवं विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु सक्षम व निपुण प्रशिक्षक तैयार करना।
- प्रतियोगिताओं का आयोजन व आंचलिक क्षेत्रों में सम्मेलन रखना।

मालचन्द बेगानी
विभागाध्यक्ष, समण संस्कृति संकाय
Mob.09810031623

निलेश कुमार बैद
निदेशक, समण संस्कृति संकाय
Mob.09840053956

समण संस्कृति संकाय, जैन विश्व भारती
लाडनूं-341306 (राजस्थान)
फोन नं. : 01581-226025, 226974 फैक्स : 1581-227280
E-mail : sssankay@gmail.com

तेरापंथ धर्मसंघ की विशिष्ट संस्थाएं

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
महासभा भवन
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट
कोलकाता - 700001 (पश्चिम बंगाल)
फोन : 033-22357956, 22343598
E-mail : info@jstmahasabha.org

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्
प्रशासकीय कार्यालय
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन - 011-23210593
E-mail : abtyp1964@gmail.com

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
'रोहिणी' जैन विश्व भारती परिसर
पो. लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226070

जैन विश्व भारती
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला : नागौर (राजस्थान)
01581-226080,226025,224671
E-mail jainvishvabharati@yahoo.com
Website : www.jvbharati.org

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341 306
जिला - नागौर (राजस्थान)
01581-226230,226110
E-mail : office@jvbi.ac.in
Website : http:/www.jvbi.ac.in

जय तुलसी फाउण्डेशन
एक्सलैण्ड प्लैस, तीसरा तल्ला
कोलकाता - 17
फोन - 033-22902277,22903377
E-mail : jtfcal@gmail.com

अणुव्रत महासमिति
अणुव्रत भवन, तीसरा तल्ला
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23233345, 23239963
E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन. 011-23236738, 23222965

अणुव्रत विश्व भारती
विश्व शांति निलयम्
पो. - राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-220516, 220628
E-mail : rajsamand@anuvibha.in

राष्ट्रीय अणव्रत शिक्षक संसद संस्थान
चपलोत गली
राजसमंद - 313326 (राजस्थान)
फोन : 02952-202010, 223100
E-mail : rass_rajsamand@rediffmail.com

आदर्श साहित्य संघ
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
फोन : 011-23234641, 23238480
E-mail : adarshsahityasangh@yahoo.com

पारमार्थिक शिक्षण संस्था
'अमृतायन' भवन
जैन विश्व भारती परिसर
पो. - लाडनूं - 341306
जिला - नागौर (राजस्थान)
फोन : 01581-226032, 224305

अमृतवाणी
अणुव्रत भवन, प्रथम तल
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली-110002
Mob. : 09811099918, 09999803066
E-mail : amritvanioffice1@gmail.com

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान
'शक्तिपीठ' नोखा रोड
पो. - गंगाशहर - 334401
जिला - बीकानेर (राजस्थान)
फोन : 0151-2270396
E-mail : gurudevtulsi@gmail.com

प्रेक्षा विश्व भारती
गांधीनगर हाइवे
कोबा पाटिया
गांधीनगर - 382009 (गुजरात)
फोन. 079-23276271, 23276606
E-mail : prekshabharati@yahoo.com

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम
अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली - 110002
Mob. : 08094368313, 08107451951
E-email : tpfoffice@tpf.org
website : www.tpf.org.in

शिविर कार्यालय
आचार्य महाश्रमण प्रवास स्थल
सम्पर्क सूत्र :
हेमन्त बैद : Mob. : 09672996960, 07044448888
E-mail : campoffice13@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

वर्षा आती है। उत्तप्त मनुष्य शांति का अनुभव करता है।
इसी प्रकार समर्थ व्यक्ति जब असमर्थ पर करुणा और
कृपा की वर्षा करते हैं तो उन्हें भी शांति मिलती है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

जुगराज, गणपतराज,
अरुण कुमार, रौनक, जैनम डागा

चैन्नई (कंटालिया)

With Best Compliments from

किसी की सेवा कर उसको गिनाना
सेवा के महत्त्व व फल को कम करना है।

-आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

Rameshchand, Vijaraj, Rakesh Bohra

Musaliya-Chennai-Dubai

Pradeep Stainless India Pvt. Ltd.

C 3, Phase II, 3rd Main Road, MEPZ SEZ, Tambaram
Chennai- 600 044, Mob. : 09840177330

With Best Compliments from

सामूहिक जीवन में आत्मीयतापूर्ण, पवित्रतापूर्ण
मधुरतापूर्ण और विनम्रतापूर्ण व्यवहार हो तो
मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित हो सकता है।

– आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

Daulat, Kailash, Pratap, Abhineet Daga (Jaipur - Sri Dungargarh)

SP 5 Mansarovar Industrial Area Jaipur 302020, Tel. : +91 141 4027819
Mobile : +91 9829052315 / +91 9828252000
Email : lightstudio.by.galaxy@gmail.com | stonetracke@sancharnet.in

प्रत्येक जीव स्वतंत्र है, कोई किसी और पर निर्भर नहीं करता।

- भगवान महावीर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

सुगालचन्द, प्रसन्नचन्द, विनोद कुमार सिंघवी

चैन्नई-दिल्ली-मुंबई

With Best Compliments from

जन्म लेना दुनिया की सामान्य घटना है।
उस व्यक्ति का जन्म अधिक महत्वपूर्ण और विशिष्ट होता है,
जो संयम और परोपकार का जीवन जीता है।
– आचार्य महाश्रमण

Sri Poosalal Suganibai Anchaliya Charitable Trust

P. Sampathraj Anchaliya, P. Tarachand Anchaliya
P. Gyanchand Anchaliya

Sirkali - Chennai - Delhi - Marudhar (Padukallan)

।। अर्हम् ।।

जीना हो तो पूरा जीना, मरना हो तो पूरा मरना
बहुत बड़ा कष्ट जगत में आधा जीना, आधा मरना।
— आचार्य महाप्रज्ञ

स्वयं के साथ मित्रता करने वाला व्यक्ति
दूसरों के साथ गलत व्यवहार नहीं करता।
- आचार्य महाश्रमण

श्रद्धावनत

श्रीचंद, उम्मेद, विजयसिंह, अजय, अभिषेक, आतिष, तनिश एवं आरव गोहोनोत
(डीडवाना निवासी, बैंगलुरु प्रवासी)

Jay Group

Manufacturers & Exporters of
Plastic Tagging Pins, Loop Pins, Tagging Guns &
Texitile Spot Cleaning Guns under popular brands of :

ARROW® ✦ Wonder® ✦ TagStar® ✦ UNIVERSAL® ✦ CHOKHO®

No. 5 Charles Campbell Road, Cox Town, Bengaluru - 560005, Karnataka, India.
Tel. 0091 (0) 80- 25483928/25483508; Fax. 0091 (0)80-25488780/25484364;
E-mail : enquiry@jaygroups. com; Website - www.jaygroups.com